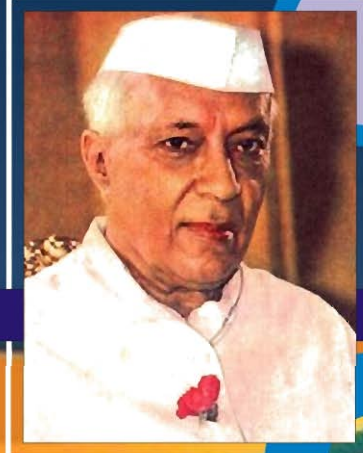

मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 05 | नवम्बर, 2021 | पृष्ठ : 56 (पञ्चाङ्ग सहित) | मूल्य : ₹20

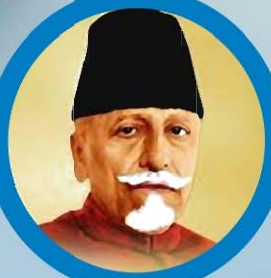

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

प्री-प्राइमरी शिक्षा : एक अभिनव पहल

माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री अशोक गहलोत की वर्ष : 2021-22 की बजट घोषणा के अनुसरण में 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गांधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के इसी सत्र से संचालन की स्वीकृति जारी कर एक अभिनव पहल की है। इस पहल के साथ सम्पूर्ण उत्तर भारत में राजकीय विद्यालयों में प्री-प्राइमरी कक्षाएँ शुरू करने वाला राजस्थान पहला राज्य बन गया है। हमारे शिक्षा विभागीय परिवार के समस्त अधिकारियों, शिक्षकों, अभिभावकों, छात्र-छात्राओं, भामाशाहों इत्यादि के साथ इस खुशी को साझा करते, मैं उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए शिक्षकों एवं शिक्षा अधिकारियों से इसे भावनानुरूप लागू करने की अपेक्षा करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि टीम एज्यूकेशन के सक्रिय सहयोग से हमारा यह नवाचार संपूर्ण देश में एक नज़ीर बनेगा तथा अन्य राज्य इसे अपनाने में राजस्थान राज्य का अनुसरण करेंगे।

तकरीबन दो वर्ष पूर्व एक समाचार पत्र को दिए गए साक्षात्कार में, मैंने प्रदेश में यथाशीघ्र पूर्व प्राथमिक शिक्षा लागू करने का वायदा किया था और राजकीय विद्यालयों को नामी निजी शिक्षण संस्थाओं से भी बेहतर स्वरूप प्रदान करने के अपने स्वप्न को साझा किया था। आज मुझे यह बताते हुए खुशी के साथ गर्वानुभूति भी हो रही है कि हम अपने उस स्वप्न की ताबीर के बिल्कुल नज़दीक पहुँच चुके हैं। सरकारी विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं (नर्सरी एवं केजी) के संचालन की बात को लोगों ने गंभीरता से नहीं लिया था। इस बात पर लोगों को विश्वास नहीं हो रहा था। इसका कारण भी सुस्पष्ट है-सैंकड़ों वर्षों से सरकारी व्यवस्था में ऐसा ही होता देखा है। विज्ञान में इस मनः स्थिति को 'जड़त्व के सिद्धांत' के रूप में समझाया गया है, जिसमें जो जिस अवस्था में है, वह वैसा ही बना रहना चाहता है। इसे समझाने की भाषा में कहें, तो लकीर के फकीर अथवा यथास्थितिवाद की अवधारणा कह सकते हैं। मित्रों! हमें लकीर का फकीर कदापि नहीं होना है, बल्कि देश, काल, परिस्थिति के मद्देनजर प्रचलित व्यवस्था को अधुनातन (Modify) करना है।

कम्प्यूटर शिक्षकों (अनुदेशकों) के कैडर के सृजन एवं करीब दस हज़ार से अधिक पदों की स्वीकृति जारी कर विभाग ने युवाओं के साथ किया गया अपना एक और वायदा निभाया है।

एक सुकून भरी बात यह भी है कि कोरोना महामारी की पीड़ादायी त्रासदी झेलने के बावजूद प्रदेशवासियों का ध्यान बच्चों की शिक्षा की तरफ बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि इस सत्र में राजकीय विद्यालयों में नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह नामांकन एक करोड़ के आँकड़े को छूने की ओर अग्रसर है। मेरी समस्त गुरुजनों से अपील है कि वे अपनी शिक्षण कला व कौशल की धार को और तीव्र करते हुए अभिभावकों के विश्वास को बनाए रखें।

विभाग द्वारा शिविरा पंचांग वर्ष : 2021-22 (अवधि अक्टूबर 2021 से जून 2022 तक) जारी किया जा चुका है। इसमें शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों की माहवार रूपरेखा है। मेरा अनुरोध है कि शिविरा पंचांग में उल्लेखित समस्त गतिविधियों का विद्यालयों में अक्षरशः पालन किया जाए ताकि विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवस्था के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को अर्जित किया जा सके। नेशनल अचीवमेंट सर्वे कक्षा 3, 5, 8 व 10 इसी माह की 12 तारीख को आयोजित किया जा रहा है। हमें इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता एवं गुणवत्ता के साथ सम्पादित करना एवं करवाना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्ववर्ती सर्वे की भाँति इस बार भी राजस्थान राज्य प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज करवाएगा।

प्रकाश एवं उल्लास का पर्व दीपावली आपके जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की वृद्धि करे। इस माह में 14 नवम्बर को आधुनिक भारत के निर्माता देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. पं. जवाहरलाल नेहरु एवं 19 नवम्बर को यशस्वी पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के जन्म दिन हैं। आप दोनों के प्रधानमंत्री रहते हुए देश का अकल्पनीय विकास हुआ है। 19 नवम्बर को ही गुरु नानक देव जयंती पर्व देशवासी श्रद्धा, उत्साह और उमंग के साथ मनाते हैं। हमें बच्चों को इन महान व्यक्तित्वों के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण के कार्य में अपनी जिम्मेवारियों का भली-भाँति निर्वहन हेतु प्रेरित करना चाहिए। आने वाले समय के लिए भी कुछ ऐसे ही विश्वास भरे शब्दों के साथ अब मैं लेखनी को विराम देता हूँ-

हर दौर के मल्लाह याद करेंगे,
साहिल पे हम कुछ ऐसे निशां छोड़ेंगे।

शुभकामनाओं के साथ!

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"एक सुकून भरी बात यह भी है कि कोरोना महामारी की पीड़ादायी त्रासदी झेलने के बावजूद प्रदेशवासियों का ध्यान बच्चों की शिक्षा की तरफ बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि इस सत्र में राजकीय विद्यालयों में नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह नामांकन एक करोड़ के आँकड़े को छूने की ओर अग्रसर है। मेरी समस्त गुरुजनों से अपील है कि वे अपनी शिक्षण कला व कौशल की धार को और तीव्र करते हुए अभिभावकों के विश्वास को बनाए रखें।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 5 | कार्तिक-मार्गशीर्ष, २०७८ | नवम्बर, 2021

प्रधान सम्पादक
काना राम

❁

वरिष्ठ सम्पादक
अरुण कुमार शर्मा

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- हमारा कर्त्तव्य और लक्ष्य प्राप्ति 5

कक्षा की कसौटी-विद्यार्थी की मुस्कान

- सहज एवं रुचिकर सीखना- बाल केन्द्रित शिक्षण-रोल प्ले 6
  अरुण कुमार शर्मा (वरिष्ठ सम्पादक)

आलेख

- आधुनिक भारत के स्वप्नद्रष्टा : पं. जवाहर लाल नेहरू 7
  विकास चन्द्र भारू
- जवाहर लाल नेहरु : जीवन चरित 9
  लक्ष्मी शर्मा
- आयरन लेडी : इन्दिरा गाँधी 10
  राजेन्द्र कुमार मारू
- माँ से अच्छा ट्यूटर कोई नहीं 10
  राजकुमार ढल्ला
- राष्ट्रीय शिक्षा दिवस 11
  विमलेश चन्द्र
- दिलों को दिलों से जोड़ने वाले बाबा : आचार्य विनोबा भावे 12
  ज्योत्सना सक्सेना
- पर्यावरण संरक्षण 13
  राम किशन गोठवाल
- मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा 16
  केदार शर्मा 'निरीह'
- विद्यालय में पुस्तकालय की उपादेयता 18
  कमल कुमार जाँगिड़
- व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त माध्यम 19
  रूपसिंह जाखड़
- शिक्षा में अधिक वर्ष अर्थात् अधिक आय 20
  मोहम्मद इमरान खान
- 'गांधी विचार संस्कार परीक्षा' राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह 40
  रवि पारीक
- मेधावी बेटियों को किया सम्मानित 41
  पृथ्वीराज लेघा

मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर!

- विद्यालय की बदली तस्वीर 42
  रमेश कुमार जीनगर

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2021 21-39
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 39
- बाल शिविरा 48-49
- शाला प्रांगण 50-51
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 52
  राजेन्द्र सिंह चारण
- हमारे भामाशाह 53-54

पुस्तक समीक्षा 43-47

- युगान्तर कर्मयोगी
  लेखक : प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश';
  समीक्षक : **जगदीश यायावर**
- अन्तर्ध्वनि
  कथाकार : मुरलीधर वैष्णव;
  समीक्षक : **रत्नकुमार सांभरिया**
- अग्निपाखी
  कवि : विजय सिंह नाहटा;
  समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
- प्लॉट नंबर 203
  लेखक : राजेंद्र जोशी;
  समीक्षक : **कविता 'मुखर'**

विशेष :
रंगीन पञ्चाङ्ग : सत्र 2021-22
पृष्ठ संख्या : 27-30

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

▼ परिचय

काना राम
आइ.ए.एस.

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

भारतीय प्रशासनिक सेवा (RR : 13) के ऊर्जावान युवा प्रशासनिक अधिकारी श्री काना राम ने 20 अक्टूबर, 2021 मंगलवार को निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म दिनांक 01 जुलाई 1986 तथा गृह जिला पाली है। आपने शिक्षा में M.Sc. (Geography); B.Sc. (Botany) उपाधि प्राप्त की है।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक संस्थान, मसूरी से द्वितीय फेज़ के प्रशिक्षण पश्चात् आप असिस्टेंट सेक्रेट्री, डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एज्यूकेशन एण्ड लिट्रेसी, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलपमेंट, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली; सब डिविजनल ऑफिसर एण्ड सब डिविजनल मजिस्ट्रेट, बारां; चीफ एग्ज्यूकेटिव ऑफिसर, जिला परिषद, धौलपुर; सेक्रेट्री, यू.आइ.टी. अलवर; कलक्टर एण्ड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, डूंगरपुर; ज्योइंट चीफ़ एग्ज्यूकेटिव ऑफिसर, स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी, राजस्थान जयपुर के रूप में पदस्थापित रहे।

विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहते हुए आपने विलक्षण नेतृत्व क्षमता और प्रबंधकीय कौशल से अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। कार्ययोजनाओं के निर्माण, प्रभावी क्रियान्वयन और सर्वश्रेष्ठ परिणाम के प्रति आपकी प्रतिबद्धता है।

राजस्थान शिक्षा विभाग (स्कूल शिक्षा) में निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान के रूप में आपका हार्दिक स्वागत और अभिनंदन है।

राज्य का प्रत्येक शिक्षक और शिक्षा से जुड़ा प्रत्येक कार्मिक आपके नेतृत्व में सदैव एक कदम आगे बढ़ने के प्रति दृढ़ संकल्पित है। अग्रिम आभार!

–वरिष्ठ सम्पादक

पाठकों की बात

● समय पर शिविरा पत्रिका मिली। 'अपनों से अपनी बात' गांधी के सपनों का भारत, श्री गोविन्द सिंह डोटासरा माननीय शिक्षामंत्री का आलेख महात्मा गांधी को समर्पित था। दिशाकल्प में निदेशक महोदय श्रीमान सौरभ स्वामी के विचारों से पूर्ण परिचित हुए। कोरोना के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई जीतेंगे 'दृढ़ प्रतिज्ञ थे, हैं और रहेंगे', के सुदृढ़ विचारों का अवगाहन किया। कक्षा की कसौटी विद्यार्थी की मुस्कान है, श्री अरुण कुमार शर्मा वरिष्ठ संपादक ने यह भली भाँति उदाहरण देकर सुस्पष्ट कर दिया। महात्मा गांधी पर लिखे गए सारे आलेख बहुत ही महत्त्वपूर्ण थे। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीयुत् लाल बहादुर शास्त्री पर कोई भी आलेख न होना बहुत ही खटका। उन जैसा कर्त्तव्यनिष्ठ व ईमानदार व्यक्तित्व होना दुर्लभतम है। पर हाँ आवरण पृष्ठ पर उनका शानदार चित्र देखकर संतोष की सांस ली। तीनों राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित शिक्षकों श्री दीपक जोशी विज्ञान, श्री जयसिंह शारीरिक शिक्षक व श्रीमती अचला वर्मा गणित व्याख्याता को हार्दिक बधाई। इनके साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व आदरणीय राष्ट्रपति अब्दुल कलाम व पूर्व प्रधानमंत्री ईमानदारी व कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों के चित्रों को देखकर प्रसन्नता हुई। श्रीयुत सारस्वत का आलेख शिक्षकों के लिए शहीद हुए तीनों का वर्णन व उनका शिक्षा में योगदान रोमांचकारी आलेख था। तीनों शिक्षकों को जिन्होंने अपना सर्वस्व शिक्षा के लिए दिया बहुत याद किया जाता रहेगा। सुखी व स्वस्थ जीवन का आचरण पर्यावरण संरक्षण श्री हरदयाल का आलेख पठनीय व ग्राह्य है। विश्व विद्यार्थी दिवस 15 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह जानकारी हर्ष का विषय है 'बदलते परिवेश की बदलती शैक्षिक आवश्यकताएं' इन्द्रा जी का आलेख श्रेष्ठ लगा। पाठक सामग्री चयन हेतु संपादक मंडल शिविरा को बहुत-बहुत धन्यवाद।

–टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

● शिविरा अक्टूबर 21 का आवरण पृष्ठ देखकर प्रसन्नता हुई। निदेशक महोदय का दिशाकल्प मेरा पृष्ठ 'दृढ़ प्रतिज्ञ थे, हैं और रहेंगे' पढ़कर उत्साह का संचरण हुआ। वस्तुतः प्रतिमाह शिविरा पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है एवं आद्योपांत नहीं पढ़ लेता तब तक आनंद नहीं आता। सभी आलेख एवं रचनाएँ उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक थी। श्रीमान ओमप्रकाश जी सारस्वत द्वारा लिखी रचना 'जो शिक्षा के लिए शहीद हो गए' (कालीबाई एवं नाना भाई खांट) बहुत ही ज्ञानवर्द्धक व सराहनीय थी। इसी तरह रमेश कुमार हर्ष जी का 'राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2021', व राजेन्द्र कुमार शर्मा 'मुसाफिर' जी का 'बापू का शिक्षा दर्शन और नयी तालीम' विशिष्ट थे। 'गिफ्ट ए बुकः' शिविरा की नवाचारी पहल के लिए निदेशक महोदय का साधुवाद। नए स्थायी स्तम्भ 'मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर' सराहनीय पहल है। शिविरा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

–कमल कुमार जाँगिड़, कुचामन सिटी

● अक्टूबर 21 के शिविरा पत्रिका के शाला प्रांगण से लेख में मेरे विद्यालय के शुभ समाचार छपाई के लिए सर्वप्रथम आपको साधुवाद। क्योंकि भाखर आँचल से पहली बार खबर की छपाई हुई। मैं शिविरा का 20 वर्ष से नियमित पाठक हूँ। वर्ष 2002 में जब मेरी पहली बार शिक्षा सहयोगी के रूप में नियुक्ति हुई थी तब से लेकर आज व्याख्याता स्तर तक बेसब्री से मुझे नवीन अंक का इंतजार रहता है। वाकई शिविरा शिक्षा जगत की अप्रतिम धरोहर है जो शिक्षक वर्ग से जुड़ने वाले तमाम लोगों को पढ़नी चाहिए। मेरे साथ मेरे दोनों बच्चों को भी नियमित रूप से स्वाध्याय के लिए शिविरा पत्रिका ही देता हूँ। बाल शिविरा ने तो और भी चार चाँद लगा दिए हैं। विश्व विद्यार्थी दिवस के अंतर्गत सुमन पूनिया का लेख काफी प्रेरणादायी रहा। अंत में कहना चाहूँगा-'साहित्य समाज का दर्पण है तो, शिविरा शिक्षा का दर्पण है जो शिक्षणवेशी है उनको, शिविरा पाठक जरूर होना चाहिए।

–गणेश कुमार, सिरोही

● शिविरा पत्रिका का अक्टूबर अंक का मुखावरण आकर्षक एवं प्रेरणादायक था। हमें इन महापुरुषों की जीवनी से उनके आदर्शों को अपनाते हुए अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास करना चाहिए। सम्मानित शिक्षकों की रपट पेश करना अपने आप में उनका सम्मान करना है। गांधी जयन्ती पर गांधीजी की जीवनी सम्बन्धी आलेख पठनीय, ज्ञानप्रद एवं प्रेरणादायक थे। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जीवनी पढ़कर हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें तब तक प्रयास करना चाहिए जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो। ऊँचे सपने देखने चाहिए। सपनों को पूरा करने हेतु दिन-रात मेहनत करनी चाहिए। बालक-बालिका को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने के लिए बाल शिविरा स्तम्भ शुरू किया है, वह अपने आप में सराहनीय कदम है। इससे बच्चों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकट करने का अवसर मिलता है। शिविरा पत्रिका का प्रत्येक अंक आकर्षक, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक, पठनीय, संग्रहणीय एवं शैक्षणिक जानकारी लिए हुए 'गागर में सागर' है। दीपावली पर्व पर हार्दिक शुभकामना के साथ....

–नृसिंहदास वैष्णव, किशनगढ़

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

काना राम
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

हमारा कर्त्तव्य और लक्ष्य प्राप्ति

शिविरा नवम्बर, 2021 का यह अंक आप तक पहुँचेगा तब तक आप दीपोत्सव का पावन पर्व उल्लास व उमंग से मनाकर और मध्यावधि अवकाश पश्चात पूर्ण उत्साह एवं मनोयोग से शिक्षण-अधिगम में कर्मरत होंगे।

विगत समय में कोविड-19 जैसी विषम परिस्थितियों के दौरान आप सब गुरुजनों ने ऑनलाइन शिक्षण कार्य करवाकर विद्यार्थियों के अध्ययन को सतत रखने का पूर्ण निष्ठा से प्रयास किया, वह बहुत ही सराहनीय है। अब चूंकि विद्यालयों में नियमित कक्षाओं का संचालन शुरू हो चुका है तो आप सभी गुरुजनों से अपेक्षा है कि शेष बचे शिक्षण-सत्र में आप सभी अपने श्रेष्ठ परिश्रम व लगन से विद्यार्थियों के अधिगम की कमी (Learning Loss) को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करेंगे। इस हेतु विभाग द्वारा उपलब्ध करवाई गई वर्कबुक जिसमें पूर्व कक्षा की दक्षताओं को भी सम्मिलित किया है, का समयबद्ध अध्यापन सुनिश्चित करेंगे। साथ ही हम सब का सदैव यह प्रयास रहे कि विद्यालय का वातावरण न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सानुकूल हो बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक हो।

12 नवम्बर को राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण-2021 आयोज्य है, विगत NAS-2017 में कक्षा-3, 5 व 8 के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता का आकलन किया गया था, जिसमें हमारा राज्य पूरे देश में द्वितीय स्थान पर रहा था। इस बार NAS-2017 में कक्षा-3, 5 व 8 के साथ-साथ कक्षा 10 को भी शामिल किया गया है। अतः आप सभी के सम्मुख यह शुभावसर है कि विद्यार्थियों के अधिगम स्तर के आधार पर अपने विद्यालय, जिले और राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठतम स्थान मिले। मुझे पूर्ण आशा व विश्वास है कि आप सब गुरुजनों के आदर्श शिक्षण एवं मार्गदर्शन में हमारा राज्य राजस्थान विगत उत्कृष्ट स्थिति को बरकरार रखते हुए देशभर में श्लाघनीय स्थान प्राप्त करेगा।

नवम्बर माह में 11 नवम्बर को 'शिक्षा दिवस' और 14 नवम्बर को 'बाल दिवस' है, 19 नवम्बर गुरु नानक जयंती है। 19 नवम्बर को ही सम्पूर्ण राष्ट्र पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की जयन्ती उत्साह से मनाते हुए प्रेरणा पाता है। हम सब इन विशिष्ट दिवसों की भावना एवं प्रेरणा के अनुरूप अपनी कार्यशैली विकसित करें। अपने दायित्व व कर्त्तव्यों के श्रेष्ठतम निष्पादन से ही लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं के साथ!

(काना राम)

> "मुझे पूर्ण आशा व विश्वास है कि आप सब गुरुजनों के आदर्श शिक्षण एवं मार्गदर्शन में हमारा राज्य राजस्थान विगत उत्कृष्ट स्थिति को बरकरार रखते हुए देशभर में श्लाघनीय स्थान प्राप्त करेगा।"

Rajasthan Education Department

कक्षा की कसौटी-विद्यार्थियों की मुस्कान

सहज एवं रुचिकर सीखना-बाल केन्द्रित शिक्षण- रोल प्ले

❒ अरुण कुमार शर्मा

महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) मुरलीधर व्यास नगर बीकानेर के रंगमंच पर, अंडाकार स्थिति में विद्यार्थी बैठे थे, लगभग पूरी क्लास। मैं, सामने के सोफे पर दूसरे कुछ अतिथियों के साथ बैठा हुआ था। तभी नेपथ्य से आवाज आई..... 'माननीय सदस्य! माननीय अध्यक्ष महोदय।' संसद के सदन की तरह, अध्यक्ष का रोल प्ले करने वाली एक बालिका सामने मंच पर स्थित कुर्सी पर आकर विराजमान हुई, उसके सामने एक टेबल, जिस पर कुछ कागजात और एक किताब जो संविधान की तरह बनाई गई थी, रखी हुई थी और उसके पीछे सुरक्षा प्रहरी की वेशभूषा में दो विद्यार्थी खड़े थे। परिदृश्य संसद के किसी सदन का प्रतीत होता था। संसद में सदस्यों को शपथ दिलाने का कार्यक्रम किया गया। प्रतीक के तौर पर कुछ विद्यार्थी जो कि सांसद का रोल प्ले कर रहे थे, उन्हें शपथ दिलाई गई। इस दृश्य के बाद दूसरा दृश्य था जिसमें कुछ विद्यार्थी जिन्हें, मंत्री बनाया गया था। उन्होंने मंत्री होने की शपथ ली। शिक्षा मंत्री का रोल प्ले कर रहे विद्यार्थी का नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा पर भाषण हुआ। इस दरमियां, कुछ पॉइंट ऑफ आर्डर लाए गए, वाद-विवाद भी हुआ। रंगमंच की इस संसद में प्रश्नकाल हुआ, जिसमें कुछ प्रश्न पूछे गए, उसके मंत्री महोदय ने उत्तर भी दिए। जब यह नाट्य प्रस्तुति प्रारंभ की गई थी, तब नेपथ्य से यह भी घोषणा की गई थी, कि आज संसद की दर्शक दीर्घा में हमारे कुछ अतिथि बैठे हैं जिनमें निदेशालय से भी आए हैं साथ ही जिला शिक्षा अधिकारी और अन्य अतिथि भी हैं। एक अन्य विद्यालय के दृश्य में कक्षा अविभक्त इकाई के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थी आपस में गोला बनाकर खड़े हैं। अध्यापक घेरे के मध्य में उनके साथ गीत गा रहा है। 'आओ बच्चों खेलें खेल, आओ मिल कर बने हम रेल।' घेरा तत्काल बिखर जाता है और रेल बन जाती है। आगे इंजन और पीछे डिब्बे। अध्यापक जी का गीत कहाँ रुकता है, वे गाते हैं 'बच्चों का यह टोला, फिर से बनाएगा गोला। गीत में विभिन्न आकृतियाँ गाई जाती है और बच्चों का टोला वह आकृति बनाता रहता है। इसी प्रकार गीत में संख्याओं में बदलने के लिए पुकारा जाता है और बच्चे हँसते-खिलखिलाते संख्या के रूप में जुटते जाते हैं। सीखने की प्रक्रिया में आवश्यक होता है कि शिक्षार्थी विषय वस्तु के साथ जुड़ाव महसूस करें। विषय वस्तु के साथ में यह जुड़ाव तब अधिक सहज और सशक्त हो जाता है जब उस विषय वस्तु के साथ विद्यार्थी स्वयं एक पात्र के रूप में संबद्ध हो जाता है। उपर्युक्त परिदृश्य में संसद का सजीव चित्र विद्यार्थियों द्वारा नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से प्रकटीकरण किया जाना, प्रत्येक विद्यार्थी का इस नाट्य प्रस्तुति में कोई न कोई रोल अदा करना। जटिल शब्दावलियों को दृश्य के रूप में चरितार्थ कर सहज बना देना। वह अध्ययन की प्रक्रिया में एक उत्प्रेरक का कार्य करता है। इसी प्रकार आकृतियों की पहचान अथवा अंकों के ज्ञान में विद्यार्थी की कुशाग्रता के अतिरिक्त उनकी सहजता, अधिगम को आसान बना देती है।

अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है और इसलिए ही उन्हें इस प्रक्रिया का भाग होना आवश्यक होता है। एक विद्यार्थी विषय वस्तु को आसानी से तब ग्राह्य कर पाएगा, जब वह उस विषय वस्तु को अनुभव कर पाएगा। पुस्तक एवं श्यामपट के शिक्षण से विद्यार्थी संसद, संसद की प्रक्रिया, सांसद के दायित्त्व को पढ़ सकता है, सुन सकता है, परंतु प्रक्रियाओं जैसे प्रश्नकाल, शून्यकाल, शपथ ग्रहण, आश्वासन, प्रतिपक्ष, पक्ष, मंत्रियों के कार्य, मंत्रियों का उद्बोधन, बजट भाषण आदि सूक्ष्म एवं जटिल प्रक्रियाओं को रोल प्ले के माध्यम से सहजता से बोधगम्य कर पाएगा। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि कक्षा की कसौटी विद्यार्थियों की मुस्कान होती है और विद्यार्थियों की मुस्कान उनके चेहरे पर पुष्प के समान तब खिलेगी जब उन्हें समझ की इस यात्रा में सारथी बन शिक्षक साथ लेगा। उनके मध्य सीखने की प्रक्रिया के दौरान अधिकतम इंटरेक्शन होगा। वह स्वयं को सीखने की प्रक्रिया में भागीदार समझेंगे, सीखने मात्र के लिए नहीं बल्कि प्रसन्न होने के लिए शिक्षण अधिगम, अध्ययन प्रकिया में भाग लेंगे।

बाल केंद्रित शिक्षा के इस पहलू में रोल प्ले से अध्ययन के केन्द्र में शिक्षार्थी ही रहता है। सीखने का उद्देश्य, शिक्षार्थी की स्वायत्तता और स्वतंत्रता को विकसित करने के लिए बाल-केंद्रित शिक्षा, समझ, कौशल, प्रदान करने से विद्यार्थियों के हाथों में सीखने के पथ के लिए जिम्मेदारी डाल कर, स्वाभाविक अधिगम को आधार दिया जा सकता है। विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा विद्यार्थियों की रुचियों को सबसे पहले रखती है, सीखने के अनुभव के केंद्र के रूप में विद्यार्थी की आवाज को स्वीकार करती है। विद्यार्थी-केंद्रित, सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी स्वयं चुनते हैं कि वे क्या सीखेंगे? वे अपने सीखने की गति कैसे बढ़ाएंगे और कक्षा के सूत्रधार की भूमिका निभाकर वे अपने स्वयं के सीखने का आकलन कैसे करेंगे?

उपर्युक्त परिदृश्य का उल्लेख किसी खेलने अथवा नाट्य की प्रस्तुति भर के लिए नहीं है, वरन् आनंददायी शिक्षा की ओर अग्रसर होते एक ऐसे पहलू का है, जिसमें विद्यार्थी स्वयं पाठ्यचर्या का अंग बन जाता है। क्योंकि विद्यार्थी को स्वयं नाटक की प्रस्तुति में रोल अदा करना होता है अथवा स्वयं को सीखने की प्रक्रिया का सहज संभागी बनाना होता है। इसलिए वह विषयवस्तु एवं उसकी आवश्यकता के साथ विद्यार्थी सहज संबंध बना लेता है। तथ्य विशेष को आत्मसात कर लेता है और आसानी से विषय-वस्तु आनंद के साथ विद्यार्थी की समझ की सीमा में प्रविष्ठ कर जाती है और सीखना सहज हो जाता है।

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

Rajasthan Education Department

जयन्ती विशेष

आधुनिक भारत के स्वप्नद्रष्टा : पं. जवाहर लाल नेहरू

❒ विकास चन्द्र भारू

भारत की दो सदियों से लंबी दासता से मुक्ति उपरान्त देश के समक्ष शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, उत्पादन, आधारभूत ढाचें, उद्योग, रक्षा, संचार आदि लगभग सभी क्षेत्रों में चुनौतियां अपना विकराल रूप लिए खड़ी थी। सम्पूर्ण देशवासी आजादी के जश्न के साथ-साथ आने वाले समय में इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक मार्गदर्शक और पथ-प्रदर्शक के साथ आजादी के सही मायने खोजना चाह रहे थे। सभी देशवासियों की खोज 14 - 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को दिए गए पं. नेहरु के ऐतिहासिक भाषण '**Tryst with Destiny**' के इस अंश पर समाप्त हुई- ''अब हमारा भविष्य आराम करने और दम लेने के लिए नहीं है, बल्कि उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के निरंतर प्रयत्न से है जिनकी हमने बारम्बार शपथ ली है और आज भी ऐसा ही कर रहे हैं, ताकि हम उन कार्यों को पूरा कर सकें। भारत की सेवा का अर्थ करोड़ों पीड़ित जनों की सेवा है, इसका आशय गरीबी, अज्ञानता, बीमारियों और अवसर की असमानता के खात्मे से है।'' देश की आजादी के मौके पर ये महान् उद्‌गार थे देश के प्रथम प्रधानमंत्री और आधुनिक भारत के शिल्पी पं. जवाहर लाल नेहरु के जो देश के प्रति उनकी और प्रत्येक नागरिक की प्रतिबद्धता एवं पथ-प्रदर्शक दृष्टि को प्रदर्शित कर रहे थे।

आरम्भिक जीवन- पं. जवाहर लाल नेहरु का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद शहर में पंडित मोतीलाल नेहरु एवं श्रीमती स्वरूप रानी के घर आनन्द भवन में 14 नवम्बर 1889 को हुआ था। इनके पिता इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध वकील थे। इनके पूर्वज राजकौल जी की विद्वता से प्रभावित होकर दिल्ली के बादशाह ने उन्हें दिल्ली के चाँदनी चौक में नहर के किनारे आवास दे दिया और वे वहीं बस गए। तभी से इनका परिवार नेहरु परिवार के नाम से जाना जाने लगा। पं. जवाहरलाल नेहरु की आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई जहाँ पर शिक्षकों द्वारा उन्हें विभिन्न अन्य विषयों सहित हिन्दी एवं संस्कृत

विषय पढ़ाए जाते थे। संस्कृति के पोषक व समर्थक पिता एवं समृद्ध भारतीय विचारों की धनी अपनी माता के संस्कारों का असर उनके व्यक्तित्व पर पड़ा। जिसकी छवि हमेशा ही उनके व्यक्तित्व में झलकती रही। सन् 1905 में उनका दाखिला लंदन के एक प्रसिद्ध हैरो स्कूल में करवा दिया जहाँ पर उन्होनें दो साल पढ़ाई की, तत्पश्चात् उन्हें केम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज भेजा गया जहाँ से 1910 में उन्होने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद वे लंदन के इनर टेंपल से वकालत करके सन् 1912 में भारत लौट आए।

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश- सन् 1912 में भारत लौटने के बाद नेहरु जी ने अपने पिताजी की मंशानुरूप वकालत करना प्रारम्भ किया किन्तु इससे उनका मन ऊबने लगा और वे इसे ज्यादा दिन तक नहीं कर पाए। उस समय की अपनी पीढ़ी के अनुरूप ही उनमें भी राष्ट्रवादी भावना तीव्र हो रही थी तथा वे भी अन्य भारतीयों की तरह देश को अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त करवाने हेतु बेताब हो रहे थे। लेकिन प्रारम्भ में इसके लिए कोई ठोस नीति एवं योजना उनके पास नहीं थी। सन् 1916 में कांग्रेस के लखनऊ वार्षिक बैठक में नेहरुजी की प्रथम बार गांधीजी से भेंट हुई। गांधीजी के व्यक्तित्व से नेहरु जी काफी प्रभावित हुए तथा गांधीजी ने भी उन्हें अपना राजनीतिक अनुयायी बना लिया। इसी वर्ष उनका विवाह कमला कौल के साथ हुआ जो एक कश्मीरी परिवार से थी। 1917 में उन्होनें अपनी इकलौती संतान इन्दिरा प्रियदर्शिनी को जन्म दिया जो आगे चलकर 'इन्दिरा गांधी' के नाम से जानी गई तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। 13 अप्रेल 1919 का जलियांवाला बाग कांड ने उन्हें अन्दर तक झकझोर दिया और यहीं से आनंद भवन के उनके राजसी जीवन का अंत हुआ। पिता-पुत्र दोनों प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े तथा इसकी वजह से अनेक बार उन्हे जेल की यात्रा भी करनी पड़ी।

राजनीतिक जीवन-क्रमश: 1923 व 1927 में पं. जवाहरलाला नेहरु को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का महासचिव बनाया गया। इसी दौरान 1926-27 में उन्होंने अनेक यूरोपीय देशों एवं रूस का दौरा किया जिससे उनकी राजनैतिक एवं आर्थिक विचारधारा काफी प्रभावित हुई। इसी यात्रा से उनका झुकाव कार्ल मार्क्स एवं समाजवादी विचारधारा की ओर बढ़ा। कांग्रेस के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में उन्हें कई बार देश-विदेश के विभिन्न सम्मेलनों एवं आयोजनों में सहभागिता करने का भी मौका मिला जो उनकी अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य के सम्बन्ध में समझ बढ़ाने में सहायक रहे।

सन् 1929 के लाहौर राष्ट्रीय सम्मेलन में गांधीजी ने दूरदृष्टि का परिचय देते हुए पं. नेहरु को कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बना दिया। इस कदम के चलते देश के अनेक-अनेक युवा कांग्रेस आन्दोलन की मुख्यधारा में शामिल हुए। 1930-35 के दौरान नमक सत्याग्रह एवं काग्रेस के अन्य आन्दोलनों के चलते उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। 14 फरवरी 1935 को उन्होनें अल्मोड़ा जेल में अपनी आत्मकथा का लेखन कार्य पूर्ण किया। 1930 के दशक के मध्य में ही नेहरु जी अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से देश में गांधीजी के स्वाभाविक उत्तराधिकारी के रूप दिखाई देने लगे।

स्वतंत्रता आन्दोलन-अपनी पढ़ाई पूर्ण

कर भारत लौटते ही उनके मन में राष्ट्रवाद की भावना पैदा हो गई। अंग्रेजी हुकुमत के बढ़ते अत्याचारों ने उन्हें देश की आजादी के आन्दोलन में कूदने के लिए प्रेरित किया। जलियांवाला बाग की नरसंहार घटना के बाद वे सक्रिय रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गए। विदेशी सामान की होली, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन आदि अनेक आन्दोलनों में उन्होंने लगातार अग्रणी भूमिका निभाई। भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से पूर्ण रूप से मुक्त करवाने के लिए 1928 में उन्होनें भारतीय स्वतंत्रता लीग की स्थापना की। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान उन्होने 9 वर्ष से भी अधिक समय जेलों में बिताया जिनमें से सबसे लम्बा और अन्तिम बन्दीकाल लगभग तीन वर्ष का कारावास जून, 1945 में समाप्त हुआ।

गांधीजी और नेहरु जी–सन् 1916 में गांधीजी से प्रथम मुलाकात में ही वे उनसे काफी प्रभावित हुए। उन्हें गाँधीजी का अंग्रेजों के खिलाफ बिना भय या घृणा के लड़ने पर जोर देने का रवैया काफी प्रभावित करता था। इसके साथ ही कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर एकमत न होने के बाद भी नेहरुजी ने हमेशा गाँधीजी के सानिध्य में प्रत्येक आन्दोलन में उनका खुले मन एवं विचारों से अनुसरण किया।

पं. जवाहरलाल नेहरु और शेष विश्व– सार्वजनिक जीवन में प्रवेश और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ाव के साथ ही नेहरुजी को अनेक विदेश यात्राएं करने के अवसर प्राप्त हुए। उनके इन दौरों के कारण एक तो विदेशी सम्पर्क बढ़ा, साथ ही वैश्विक राजनैतिक परिदृश्य के सम्बन्ध में उनकी पकड़ मजबूत हुई। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नेहरुजी को एक विशेष ख्याति अर्जित थी। अपनी इस ख्याति का उपयोग उन्होंने देश के स्वतंत्रता आन्दोलन और आजाद भारत में मजबूत विदेश नीति को गढ़ने में किया। वे निर्गुट आंदोलन के जनक थे। रूस अमेरिका शीत युद्ध के दौरान नासिर, टिटो के साथ उनकी गुटनिरपेक्ष नीति को वैश्विक विश्वसनीयता प्राप्त थी। निर्गुट देशों ने मिलकर रंगभेद, जातीयता, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद का विरोध किया। विश्व राजनीति में पंचशील के सिद्धान्त उन्हीं की देन है। पंचशील से अभिप्राय है- आचरण के पाँच सिद्धांत। पंचशील के सिद्धांतों द्वारा राष्ट्रों के लिए दूसरे राष्ट्रों के साथ आचरण के संबंध में कुछ सिद्धान्त निश्चित किए गए हैं। ये सिद्धांत निम्नलिखित हैं-

- एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना।
- एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
- समानता एवं पारस्परिक लाभ।
- शांतिपूर्ण सह - अस्तित्व।

प्रधानमंत्री के रूप में - आधुनिक भारत के शिल्पकार– बच्चों से विशेष प्रेम रखने वाले एवं उनके बीच 'चाचा नेहरु' के नाम से प्रसिद्ध पं. नेहरु जी देश के आजाद होने से अपनी मृत्यु पर्यन्त देश के प्रधानमंत्री पद पर आसीन रहे। उनके शासनकाल में विभिन्न रियासतों का भारत संघ में विलय हुआ। 26 अक्टूबर 1947 को नई दिल्ली में विलय-पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। उन्हे आधुनिक भारत का शिल्पी भी कहा जाता है। अपनी दूरदृष्टि व नजरिए के कारण उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश में रोजगार, उद्योग, कृषि, बहु-उद्देश्यीय परियोजनाओं, आधारभूत ढांचागत विकास योजनाओं को व्यापक सोच के साथ धरातल पर उतारा। वर्षों के आर्थिक शोषण एवं अल्प विकसित संसाधनों के बावजूद भी उन्होंने व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय सम्पदा का निर्माण करवाया। उनके द्वारा रखी बुनियाद के सहारे ही आज देश चुनौतियों को पछाड़ते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

बच्चों के चाचा नेहरु– पं. नेहरु जी को बच्चों से बहुत ही स्नेह एवं लगाव था। बच्चों के प्रति अपने प्यार और लगाव के कारण वे बच्चों में चाचा नेहरु के नाम से प्रसिद्ध थे। प्रतिवर्ष उनके जन्म दिवस को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। बच्चों से स्नेह और प्यार के अनेक रोचक किस्से उनसे जुड़े हैं। एक बार अपने सरकारी आवास तीन मूर्ति भवन के बगीचे में लगे पेड़-पौधों के बीच से गुजरते घुमावदार रास्ते पर नेहरुजी टहल रहे थे। वे पेड़ - पौधों को निहार रहे थे। वे पौधों पर छाई बहार देखकर खुश हो रहे थे तभी उन्हें एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। नेहरुजी ने आसपास देखा तो उन्हें पेड़ों के बीच एक बालक दिखाई दिया जो जोर-जोर से रो रहा था। नेहरुजी ने मन ही मन सोचा- इसकी माँ कहाँ होगी? उन्होंने इधर-उधर देखा लेकिन वह कहीं भी दिखाई नहीं दी।

नेहरुजी ने सोचा शायद वह बगीचे में ही कहीं काम कर रही होगी। नेहरुजी यह सोच ही रहे थे कि बच्चे ने और तेजी से रोना शुरू कर दिया। इस पर नेहरुजी ने बच्चे को अपनी बांहों में लेकर उसे थपकियां दीं, झुलाया तो बच्चा चुप हो गया और मुस्कुराने लगा। बच्चे को मुस्कुराते देख चाचा नेहरु खुश हो गए और बच्चे के साथ खेलने लगे। थोड़ी ही देर बात जब बच्चे की माँ वहाँ पहुँची तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ कि उसका बच्चा देश के प्रधानमंत्री की गोद में मंद-मंद मुस्कुरा रहा है।

आम आदमी के हमदर्द–नेहरु जी निराले व्यक्तित्व के धनी थे। अपने व्यस्त समय और तनावपूर्ण राजनीतिक व प्रशासनिक दिनचर्या के बावजूद उनके व्यवहार में हमेशा एक अलग ही जिंदादिली देखने को मिलती थी। प्रत्येक परिस्थिति में उनके जेहन में व्यवस्था के अंतिम छौर पर बैठा आम नागरिक होता था। इसी के संबंध में जयपुर से जुड़ा एक रोचक वाकया है कि जनवरी 1950 में कांग्रेस का 55वां राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में आयोजित हुआ। आजाद भारत का प्रथम अधिवेशन होने के कारण जितनी भारी संख्या में सामान्य कार्यकर्त्ता एकत्रित हुए थे, उसकी किसी को कल्पना नहीं थी। सैकड़ों लोग खुले में बर्फ-सी ठंडी रेत पर सोने को मजबूर थे। न जाने कैसे नेहरुजी को इसकी भनक लग गई। रात दस बजे अचानक वे वहाँ उन कार्यकताओं के बीच आ पहुँचे।

अप्रत्याशित भीड़ के कारण व्यवस्थापकों की मजबूरी बताने पर बोले कि- मैं मैं भी यहीं खुले में सोऊँगा। फिर सुझाया कि तुरंत बल्लियाँ गाड़कर उन पर चटाइयाँ लगवाई जाए। रात के दो बजते-बजते जब पूरे मैदान पर चटाइयाँ बिछा दी गई तब उन्होंने चैन की सांस ली।

इसी प्रकार फरवरी 1950 में जब नेहरुजी पहली बार पिलानी, झुन्झुनूं आए तो उनके

Rajasthan Education Department

स्वागत में हरी सब्जियाँ, गाजर-मूली आदि से बनाए गए स्वागत द्वार पर भी वे नाराज होकर बोले- यह क्या बेवकूफी है! आयोजकों ने तुरंत सारी सब्जियाँ उतारकर ग्रामीणों में बांट दी।

लोकतंत्र, समाजवाद, एकता और धर्मनिरपेक्षता उनकी घरेलू नीति के चार प्रमुख स्तम्भ थे। देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अंतिम छोर की भागिदारी सुनिश्चित करने हेतु वे अंतिम समय तक प्रयासरत व संकल्पबद्ध रहे। शान्ति के पुजारी पं. नेहरु ने थोपे जाने वाले युद्ध को अनिवार्य बताया और इसी के अनुसरण में उन्होंने अपने समय में पाकिस्तान तथा चीन के साथ युद्ध में उनको मुँह तोड़ जवाब दिया। चीन द्वारा विश्वासघात कर किए गए आक्रमण ने जीवन के अंतिम दिनों तक नेहरु जी को विचलित रखा और इसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ता गया।

27 मई 1964 को माँ भारती के लाल और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु हमेशा के लिए इस दुनिया से विदा हो गए। उनकी अंतिम इच्छा की पूर्ति उनकी मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों की राख को हवाई जहाज के माध्यम से देश के खेतों में बिखेर कर की गई।

नेहरु जी एक कुशल राजनीतिज्ञ के साथ साथ उच्च कोटि के लेखक भी थे। उन्होनें कई पुस्तकें लिखीं जिनमें 'माई ओटोग्राफी', 'डिस्कवरी आफ इंडिया', 'ग्लिम्सेस आफ वर्ल्ड हिस्ट्री' आदि प्रमुख है। विश्व के शान्तिदूत, आधुनिक भारत के शिल्पी पं. जवाहर लाल नेहरु को भारत सरकार द्वारा सन् 1955 में उनके महान योगदान हेतु देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

''समय सालों के बीतने से नहीं मापा जाता..... बल्कि किसी ने क्या किया, क्या महसूस किया और क्या हासिल किया, इससे मापा जाता है''

-पं. जवाहर लाल नेहरू

प्राध्यापक (वाणिज्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निराधनूं,
झुंझुनू (राज.)
मो : 8118840355

जयन्ती विशेष

जवाहर लाल नेहरु : जीवन चरित

❐ लक्ष्मी शर्मा

बचपन- जवाहर लाल नेहरु का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में हुआ। उनके पिता मोतीलाल नेहरु एक बैरिस्टर थे। वे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दो बार अध्यक्ष चुने गए। उनकी माता स्वरूप रानी थुस्सू, जो लाहौर में बसे एक सुपरिचित कश्मीरी ब्राह्मण परिवार से थी। जवाहर लाल तीन बच्चों में से सबसे बड़े थे, जिनमें बाकी दो लड़कियाँ थी। बड़ी बहन विजयालक्ष्मी, बाद में संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनी। सबसे छोटी बहन, कृष्णा हकीसिंग, एक उल्लेखनीय लेखिका बनी और उन्होंने अपने परिवार जनों से सम्बन्धित पुस्तकें लिखीं।

शिक्षा- जवाहरलाल नेहरु ने दुनिया के कुछ प्रतिष्ठित विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हैरो से और कॉलेज की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज (लंदन) से पूरी की थी। इसके बाद उन्होंने अपनी लॉ की पढ़ाई कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पूरी की। इंग्लैण्ड में उन्होंने 7 वर्ष व्यतीत किए जिसमें वहाँ के फैबियन समाजवाद और आयरिश राष्ट्रवाद के लिए एक तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित किया।

स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी- जवाहरलाल नेहरु 1912 में भारत लौटे और वकालत शुरू की। 1916 में उनकी शादी कमला नेहरु से हुई। 1917 में जवाहरलाल नेहरु 'होम रूल लीग' में शामिल हो गए। राजनीति में उनकी असली दीक्षा दो साल बाद 1919 में हुई जब वे महात्मा गाँधी के संपर्क में आए। उस समय महात्मा गाँधी ने रॉलेट एक्ट के खिलाफ एक अभियान शुरू किया था। नेहरु, महात्मा गाँधी के सक्रिय लेकिन शांतिपूर्ण, सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति आकर्षित हुए। नेहरु ने गाँधी जी के उपदेशों के अनुसार अपने परिवार को भी ढाल लिया। जवाहरलाल नेहरु और मोतीलाल नेहरु ने पश्चिमी कपड़ों और महंगी सम्पत्ति का त्याग कर दिया, वे अब खादी कुर्त्ता और गाँधी टोपी पहनने लगे। नेहरु ने 1920-1922 में असहयोग आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लिया और इस दौरान पहली बार गिरफ्तार किए गए।

भारतीय राजनीति में सक्रिय पर्दापण- जवाहरलाल नेहरु 1924 में इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष चुने गए और उन्होंने शहर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में दो वर्ष तक सेवा की। 1926 में उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों से सहयोग की कमी के कारण इस्तीफा दे दिया। 1926 से 1928 तक नेहरु जी ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव के रूप में सेवा की। 1928-29 में कांग्रेस के वार्षिक सत्र का आयोजन मोतीलाल नेहरु की अध्यक्षता में किया गया। उस सत्र में जवाहर लाल नेहरु और सुभाष चन्द्र बोस ने पूरी राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग का समर्थन किया। दिसम्बर 1929 में कांग्रेस वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित किया गया जिसमें जवाहरलाल नेहरु कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष चुने गए। इसी सत्र में एक प्रस्ताव भी पारित किया गया जिसमें पूर्ण स्वराज्य की मांग की गई। 26 जनवरी 1930 को लाहौर में जवाहर लाल नेहरु ने स्वतंत्र भारत का झंडा फहराया। नेहरु कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए 1936 और 1937 में पुनः चुने गए थे। उन्हें 1942 में भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान गिरफ्तार भी किया गया। 1947 में भारत की आजादी के समय उन्होंने अंग्रेजी सरकार के साथ हुई वार्ताओं में महत्त्वपूर्ण भागीदारी की थी।

भारत के भविष्य निर्माता प्रथम प्रधानमंत्री- नेहरु जी 1947 में स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। जवाहरलाल नेहरु ने आधुनिक भारत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने योजना आयोग का गठन किया, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास को प्रोत्साहित किया और लगातार तीन पंचवर्षीय योजनाओं का शुभारंभ किया। उनकी नीतियों के कारण देश में कृषि और उद्योग का एक नया युग शुरू हुआ। नेहरु ने भारत की विदेश नीति के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई। उन्हें वर्ष 1955 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

नेहरु जी पड़ोसी देशों के सोहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए सदैव प्रयासरत रहे और पंचशील के सिद्धान्त पर आगे बढ़ने का रास्ता भी सुझाया। 27 मई, 1964 को आधुनिक भारत के जनक, युगपुरुष इस संसार से महाप्रयाण कर गए।

प्रबोधक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय माताजी का खेड़ा,
पारोली, कोटड़ी, भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9468606871

Rajasthan Education Department

जयंती विशेष

आयरन लेडी : इन्दिरा गाँधी

❒ राजेन्द्र कुमार मारू

आजादी के आंदोलन के समय जब सभी लोग आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व दे रहे थे, ऐसे में किशोरी इन्दिरा कहाँ पीछे रहने वाली थी। उन्होंने युवा लड़के-लड़कियों हेतु वानर सेना बनाई, जिसने विरोध प्रदर्शन और झंडा जुलूस के साथ-साथ आंदोलन के नेताओं की मदद में संवेदनशील प्रकाशनों तथा प्रतिबंधित सामग्री का परिसंचरण कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छोटी लेकिन महत्ती भूमिका निभाई थी। बचपन में ही परिवार से देश भक्ति और साहस का संस्कार पाने वाली इन्दिरा जी का जन्म 19 नवम्बर, सन् 1917 को पंडित जवाहरलाल नेहरु और श्रीमती कमला नेहरु के यहाँ हुआ। वे उनकी एकमात्र संतान थी। इन्दिरा के पितामह मोतीलाल नेहरु उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में ख्यातनाम बैरिस्टर थे। पं. जवाहरलाल नेहरु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों में से एक थे। उनके पिता मोतीलाल नेहरु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक लोकप्रिय नेता रहे। इन्दिरा के जन्म के समय महात्मा गांधी के नेतृत्व में पं. जवाहरलाल नेहरु का प्रवेश स्वतंत्रता आंदोलन में हुआ। सन् 1936 में उनकी माँ श्रीमती कमला नेहरु के स्वर्गवास के समय इन्दिरा जी 18 वर्ष की थी। अपने बचपन में उन्हें स्थिर पारिवारिक जीवन का अनुभव नहीं मिल पाया था। 1934-35 में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के पश्चात इन्दिरा ने शांति निकेतन में रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा निर्मित विश्वभारती विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा गुरु रवीन्द्रनाथ ने ही उन्हें **'प्रियदर्शिनी'** नाम दिया था।

सन् 1947 के भारत विभाजन की अराजकता के दौरान उन्होंने शरणार्थी शिविरों को संगठित करने तथा लाखों शरणार्थियों के लिए चिकित्सा संबंधी देखभाल प्रदान करने में मदद की। उनके लिए प्रमुख सार्वजनिक सेवा का यह पहला मौका था।

सन् 1966 में श्रीमती इन्दिरा गांधी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनी और विशेषीकृत अभिनव कृषि कार्यक्रम और सरकार प्रदत्त अतिरिक्त समर्थन मूल्य लागू किए जाने पर भारत में हमेशा से चले आ रहे खाद्यान्न की कमी को मूलतः गेहूँ, चावल, कपास और दूध के संदर्भ में, अतिरिक्त उत्पादन में बदल दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि देश एक खाद्य निर्यातक देश बन गया। इस संबंध में उनका यह कथन कि 'एक देश की ताकत अन्ततः इस बात में निहित है कि वो खुद क्या कर सकता है? इसमें नहीं कि वो औरों से क्या उधार ले सकता है' सही साबित होता है। इस उपलब्धि को अपने वाणिज्यिक फसल उत्पादन के विविधीकरण के साथ हरित क्रांति के नाम से जाना जाता है। इसी समय दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से आयी श्वेत क्रांति से खासकर बढ़ते हुए बच्चों के लिए कुपोषण से निपटने में मदद मिली। विश्व राजनीतिक परिदृश्य में यह शक्तिशाली महिला आयरन लेडी (लोह महिला) के नाम से पहचानी जाती हैं। बांग्लादेश मुक्ति युद्ध में जिस दृढ़ता से इंदिरा जी ने जीवटता का परिचय दिया वह उनके आयरन लेडी होने को सार्थक करता है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

माँ से अच्छा ट्यूटर कोई नहीं

❒ राजकुमार ढल्ला

बच्चों को पढ़ाई के लिए खुशनुमा माहौल देना चाहिए। घर में टी.वी. टेप रिकॉर्डर आदि का तेज आवाज में चलना, घर के अन्य सदस्यों का आपस में जोर-जोर से बातें करना आदि के कारण बच्चों का मन पढ़ाई में एकाग्र नहीं हो पाता और वे चाहकर भी पढ़ाई में मन नहीं लगा पाते। अगर वह कुछ पढ़ता भी है तो ग्रहण नहीं कर पाता। माता-पिता को बच्चों के स्कूल की कापियां स्वयं जांचनी चाहिए। उसकी लिखावट पर स्वयं ध्यान दें। लिखावट खराब होने पर उसे डांटे नहीं बल्कि उसमें लिखने के प्रति जिज्ञासा या ललक जगाए। बच्चे बहुत जिज्ञासु होते हैं। उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों को टालिए नहीं बल्कि उनके प्रश्नों के उत्तर रोचक बनाकर देने चाहिए चाहे प्रश्न बेतुके ही क्यों न हो। अच्छे अंक आने पर बच्चों को शाबाशी अवश्य दे किन्तु कम अंक आने पर उसे डाँटने की बजाय आगे अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करें। डांटे जाने पर बच्चे जिद्दी हो जाते हैं और पढ़ने में आनाकानी करने लगते हैं।

बच्चे नीरस विषयों के पढ़ने में अक्सर रुचि नहीं लेते। ऐसे विषयों को पढ़ाने के लिए चित्र-नक्शा आदि का सहारा लेना चाहिए। खेल-खेल में बच्चों को जटिल से जटिल, अरुचिकर विषयों को भी बताया जा सकता है। चित्र और नक्शों के जरिए बच्चे किसी भी बात को तुरन्त समझ लेते हैं। पढ़ाई के बोझ से दबकर बच्चे कई बार बहाना बना लेते हैं। बच्चे की बहानेबाजी को भी समझना आवश्यक है। अगर इस पर विशेषतौर पर ध्यान न दिया गया तो बच्चे बहाना बनाने के अभ्यस्त हो जाएंगे और भविष्य में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अगर बच्चे के लिए कोई ट्यूटर रखा गया है तो टीचर की पढ़ाई पर भी ध्यान देना आवश्यक है। इससे बच्चों को लगेगा कि माता-पिता भी टीचर के अलावा उनमें दिलचस्पी रखते हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। कभी-कभी बच्चे लालच दिए जाने पर ही पढ़ा करते हैं। उनकी कमजोरी का लाभ उठाते हुए कभी-कभार टॉफी, आइसक्रीम आदि का लालच देकर भी पढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। कान ऐंठकर सिर्फ अपनी बात मनवाने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए। बल्कि बच्चों की बातों एवं सुझावों को भी सम्मान देना चाहिए। बच्चों को पढ़ाते समय अनावश्यक क्रोध नहीं करना चाहिए। उन पर झल्लाने की बजाय अपने पढ़ाने के तौर-तरीकों पर गौर करके उनमें परिवर्तन लाने की कोशिश की जानी चाहिए। शिक्षक की बुराई बच्चो के सामने करते रहने से बच्चों के मन से शिक्षक के प्रति आदर की भावना समाप्त होने लगती है। शिक्षक को कुछ कहना ही हो तो बच्चों से अलग हटकर कहना चाहिए। यह ध्रुव सत्य है कि माँ से बढ़कर बच्चों के लिए अन्य दूसरा ट्यूटर नहीं हो सकता, इस कारण माँ को अपने बच्चों की पढ़ाई पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9983340984

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

❒ विमलेश चन्द्र

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण को प्रतिबद्ध 'कलम के सिपाही' के उपनाम से मशहूर उर्दू, फारसी, हिन्दी, अरबी एवं अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के शिक्षा में योगदान को देखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय (वर्तमान में शिक्षा मंत्रालय) ने 11 सितंबर, 2008 को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में हर वर्ष 11 नवम्बर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया एवं तभी से हर वर्ष 11 नवम्बर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को जागरूक करना एवं प्रत्येक व्यक्ति को साक्षर बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षण संस्थानों में हर वर्ष 11 नवम्बर को विभिन्न रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक संगोष्ठियों, निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं, पोस्टर प्रतियोगिताओं तथा रैलियों आदि का आयोजन किया जाता है।

मौलाना अबुल कलाम आजाद : जीवन परिचय – धन्य हैं ऐसे माता-पिता जिन्होनें माँ भारती के इस लाल को जन्म दिया एवं माँ भारती के मस्तक को ऊँचा कर दिया। ऐसा ही एक लाल जिसने माँ शेख आलिया एवं पिता मौलाना सैय्यद मोहम्द खैरुद्दीन बिन अहमद अल हुसैनी के घर 11 नवम्बर 1888 को जन्म लिया। बालक का पूरा नाम मौलाना सैय्यद अबुल कलाम गुलाम मुहियुद्दीन अहमद बिन खैरुद्दीन अल हुसैनी आजाद था। उनका परिवार भारतीय स्वतन्त्रता के पहले आंदोलन के समय 1857 में कलकत्ता छोड़कर मक्का चला गया, वहीं अबुल कलाम का जन्म हुआ। 1890 में इनका परिवार भारत लौट आया एवं कलकत्ता में स्थायी रूप से बस गया। 11 साल की आयु में कलाम के सिर से माता का साया उठ गया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा इस्लामी तौर-तरीकों से हुई। इस्लामी शिक्षा के अलावा आजाद ने दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा गणित की शिक्षा भी ग्रहण की एवं अनेक भाषाओं में महारत हासिल की। सोलह साल में उन्हें वो सभी शिक्षा मिल गई थी जो आमतौर पर पच्चीस साल में मिला करती थी। तेरह साल की उम्र में उनकी शादी जुलिखा बेगम से हुई।

मौलाना अबुल कलाम आजाद का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान –

- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसलिए कलाम ने

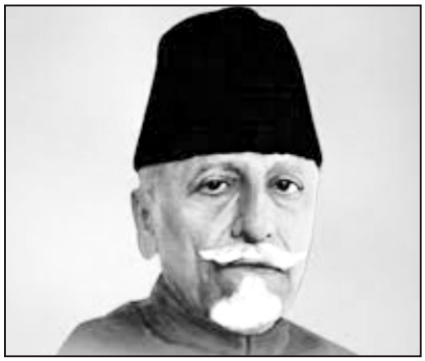

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर बल दिया। उनका मानना था कि स्कूल ऐसी प्रयोगशाला जहाँ देश के भविष्य के नागरिकों को तैयार किया जाता है।

- उनका यह भी कहना था कि मातृभाषा में ही प्राथमिक शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्होंने 14 साल के बच्चों हेतु 'निःशुल्क सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा' की वकालत की।
- उन्होंने महिला शिक्षा पर भी बल दिया। इसके अलावा वे व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के भी पक्षधर थे।
- देश में शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने संगीत नाटक अकादमी (1953), साहित्य अकादमी (1954) एवं ललित कला अकादमी (1954) की स्थापना की। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की स्थापना का श्रेय भी इन्हीं को जाता है।
- 28 दिसंबर 1953 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की स्थापना का श्रेय भी इन्हें ही है।
- इसके अलावा उन्होंने अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE), खड़गपुर इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन कमीशन, द सेकेन्डरी एजुकेशन कमीशन, आईआईटी खड़गपुर की स्थापना की।
- 1955 में दिल्ली में स्कूल ऑफ प्लानिंग और वास्तुकला विद्यालय की स्थापना भी इन्हीं के द्वारा की गयी।
- इनकी प्रमुख पुस्तकें- इण्डिया विन्स फ्रीडम, गुबारे-ए-खातिर, हिज्र-ओ-वसल, खतबात-ल-आजाद, हमारी आजादी , तजकरा आदि।
- उन्होंने 1912 में 'अल-हिलाल' उर्दूपत्रिका (साप्ताहिक) निकालकर हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया ।
- देश आजाद होने के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरु मंत्रिमण्डल में 2 फरवरी 1958 तक वे देश के प्रथम शिक्षा मंत्री रहे। कुल 11 वर्ष तक उन्होंने इस पद को सुशोभित किया।

इतिहास में 'मौलाना आजाद' के नाम से मशहूर मौलाना अबुल कलाम आजाद का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अतुलनीय है। वे एक शिक्षाविद् होने के साथ-साथ महान स्वतन्त्रता सेनानी भी थे। उन्होंने गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन का सदैव समर्थन किया। उन्होने 1905 में बंगाल के विभाजन का विरोध किया। वे कतई नहीं चाहते थे कि अलग से मुस्लिम राष्ट्र बने। वे सभी धर्मों का बराबर सम्मान करते थे तथा उन्होंने सदैव हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। वे अपने आप को भारतीय कहकर गर्व महसूस करते थे एवं मानवता को अपना धर्म मानते थे। वे सादगी की मूर्ति थे। 22 फरवरी 1958 को नई दिल्ली में हृदयाघात से जब उनका निधन हुआ, तब उनके पास कोई संपत्ति नहीं थी, यहाँ तक की बैंक में उनका खाता भी नहीं था। 1992 में मरणोपरांत उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से नवाजा गया। सादगी एवं राष्ट्रीयता की ऐसी महान विभूति के चरणों में मेरा कोटि-कोटि नमन। राष्ट्रीय शिक्षा दिवस की सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं आम जन को ढेर सारी शुभकामनाएं। मैं इस अवसर पर सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि वे हर बालक को आंगनबाड़ी एवं विद्यालय से जोड़े ताकि सभी को शिक्षा का अधिकार मिले। केन्द्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न शैक्षिक योजनाओं का लाभ हर तबके को मिले। बेटा- बेटी में कोई फर्क नहीं कर दोनों को ही शिक्षा का समानता का अधिकार मिले। शिक्षा द्वारा ही हम अन्याय का विरोध कर सकते हैं, जैसा कि मौलाना आजाद ने कहा है- दिल से दी गयी शिक्षा समाज में क्रांति ला सकती है।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
राजगढ़ (चूरू)
मो. 9460489940

Rajasthan Education Department

पुण्यतिथि विशेष

दिलों को दिलों से जोड़ने वाले बाबा: आचार्य विनोबा भावे

❒ ज्योत्सना सक्सेना

निस्वार्थ सेवा के अन्वेषक गाँधी जी के सबसे प्रिय शिष्य आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को महाराष्ट्र के कोंकण के गगोदा गाँव में वैज्ञानिक पिता नरहरि भावे व आध्यात्मिक विचारों की धनी माता रूक्मणी के यहाँ हुआ था। माता के लाडले 'विन्या' व बचपन के नाम विनायक को महात्मा गाँधी ने विनोबा में रूपांतरित कर दिया।

परोपकारिता के सूक्ष्म विचारों को चेतना की भीतरी परतों में रोपना हो, आडंबरहीन चमत्कृत व्यक्तित्व से रूबरू होना हो.. खुद के भीतर या अन्य किसी में सकारात्मक भावों का प्रस्फुटन करना हो तो आचार्य विनोबा को आत्मसात कीजिए। निश्चित रूप से आपके भीतर प्रेम व करुणा का झरना बह उठेगा और अहम भाव का विलोपन होता जाएगा। नकारा वृतियाँ अनंतकाल के लिए अरण्य में भटक जाएगी।

25 मार्च 1916 को इंटरमीडिएट की परीक्षा देने जाते समय किशोर विनोबा के मन में संन्यास की प्रबल चाह हुई जिसके कारण वे मुंबई की ट्रेन से सूरत में उतर कर हिमालय की ओर चल पड़े। जहाँ काशी में महात्मा गाँधी के नाम की धूम मची थी। कुछ दिनों पूर्व ही बापू यहाँ एक जलसे में आए थे। बापू की बातों से प्रभावित होकर वहीं से गाँधीजी को पत्र लिखा।

बापू की जवाबी स्वीकृति पाकर 7 जून 1916 में अहमदाबाद के कचोरब आश्रम में उनसे प्रथम मुलाकात की। प्रथम मुलाकात के समय गाँधीजी स्वयं सब्जी काट रहे थे, साथ में बातचीत का दौर जारी था। उसी समय विनोबा को अपनी मंजिल का ज्ञान हो गया।

काशी में विनोबा भ्रमित थे कि हिमालय जाकर संन्यासी बनूं या बंगाल जाकर क्रांतिकारी बिगुल बजाऊं? गाँधीजी से मिलकर ये संशय दूर हुआ। उन्होंने कहा मुझे बापू में हिमालय की शांति और बंगाल की क्रांति दोनों के अनुभव हुए।

समाज के कार्यों के लिए आश्रम की गतिविधियों में उन्होंने अपने को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। आश्रम की समस्त गतिविधियों में अग्रणी विनोबा भावे खेती, अध्यापन, कर्त्तव्यनिष्ठा से लेकर अनुशासन तक का पाठ

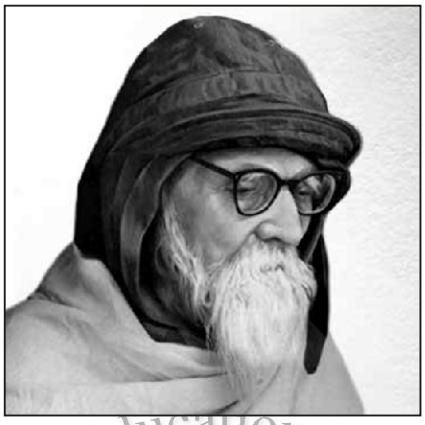

पढ़ाते। साबरमती के किनारे एक नया आश्रम बनाया गया, वो भी आजादी के लाखों अहिंसक सैनिकों के लिए छोटा पड़ने लगा। तब गाँधी जी के निर्देश पर 8 अप्रैल 1923 को वर्धा में सेवाग्राम आश्रम के संचालन में खादी और अन्य सृजनात्मक कार्यों की अलख जगाई। वर्धा में ही आचार्य विनोबा ने महाराष्ट्र धर्म मासिक पत्रिका के संपादन का कार्य प्रारंभ किया। इस पत्रिका में उपनिषदों की जानकारी के साथ साथ उन संतों के व्यक्तिव पर भी प्रकाश डाला गया जिनके कारण भक्ति आंदोलन का प्रारंभ हुआ।

सन् 1932 में धूलिया जेल में जो प्रवचन दिए वह पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए। विनोबा का लेखन हमारी संचित निधि है।

विनोबा ने सर्व धर्म समन्वय व समभाव पर अनेक पुस्तकें लिखी। अहिंसा की तलाश को उनकी जीवन झांकी कहा जाता है। विनोबा चौबीस भाषाओं के जानकार थे। विनोबा ने अठारह साल तक सत्तर हजार किलोमीटर से अधिक पदयात्रा की जिसे भूदान यात्रा के नाम से जाना जाता है। वे देश के हर हिस्से में गये। उड़ीसा के कोरापुट में आदिवासी गाँवों में चार महीने रुके, जहाँ उन्हें आठ सौ ग्रामदान हुए यानी पूर्ण गाँव एक परिवार। भूदान यात्रा में विनोबा ने बोधगया में समन्वय आश्रम, असम में महिलाओं के लिए मैत्री आश्रम, पवनार में स्त्री शक्ति के लिए ब्रह्मविद्या मंदिर की स्थापना की। विनोबा ने जय जगत यानी विश्व बंधुत्व, शांति सेना, सर्वोदय पात्र जैसे कार्य भी भूदान यात्रा में शुरू किए।

बाबा का प्रिय गीत आज भी प्रासंगिक है–

जय जगत यानि वसुधैव कुटुंबकम की भावना से ओतप्रोत गीत–

जय जगत पुकारे जा,
सिर अमन पर वारे जा,
सबके हित के वास्ते,
अपना सुख बिसारे जा!
प्रेम की पुकार हो,
सबका सबसे प्यार हो,
जीत हो जहान की,
क्यों, किसी की हार हो!
न्याय का विधान हो,
सबका हक समान हो,
सबकी अपनी ही जमीन,
सबका आसमान हो!
रंग भेद छोड़ दो,
जाति–पांति तोड़ दो,
मानवों में आपसी, अखंड प्रीत जोड़ दो!
शांति की हवा चले,
जग कहे वले–वले,
दिन उगे स्नेह का,
रात रंज की ढले!
जय जगत, जय जगत,
जय जगत पुकारे जा!

सन् 1961 में उन्होंने चंबल घाटी में एक दर्जन दस्यु सरगनाओं से आत्म समर्पण कराया। विनोबा का सबसे बड़ा संदेश था स्नेह, करुणा और सत्य का संदेश। उन्हें हृदय जोड़ने वाला बाबा भी कहा जाता है।

गिरते स्वास्थ्य व चिकित्सकों की सलाह के अनुसार 1937 ई. में वे पवनार आश्रम गए जहाँ उन्होंने गाँधी जी के अनुयायी के रूप में बरसों सेवाएं दी। अपने अनूठे संकल्प के कारण उन्होंने अन्न जल का त्यागकर 15 नवम्बर 1982 को अंतिम श्वास ली। 1958 में उन्हें पहले रमन मैग्सेसे पुरस्कार तथा 1983 में मरणोपरांत देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सवना, भींडर,
उदयपुर (राज.) **मो: 9829577660**

Rajasthan Education Department

विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस विशेष

पर्यावरण संरक्षण

❒ राम किशन गोठवाल

ईश्वर ने हमें पाँच महत्त्वपूर्ण तत्त्व प्रदान किए हैं पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश। हमारे ऋषि मुनि इस तथ्य को प्राचीन काल से ही भली-भाँति जानते थे कि इन्हीं पंचतत्त्वों से मानव शरीर निर्मित हुआ है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी मानव शरीर में पंचतत्त्वों की प्रधानता की स्थिति का निर्देश देते हुए सहज, सरल भाषा में वर्णन किया है:-

क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच तत्त्व यह अधम शरीरा।।

कभी आपने कल्पना की है कि इन पाँच तत्त्वों में से एक भी तत्त्व में विकार उत्पन्न हो जाए तो क्या होगा? प्राचीन भारतीय मनीषियों एवं ऋषि मुनियों को इस तथ्य का ज्ञान बहुत पहले से ही था कि यदि इन पंचतत्त्वों में से एक भी दूषित हो गया तो इसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है। इसलिए उन्होंने प्रकृति के समस्त अंगों में साम्यावस्था बनाए रखने के लिए प्रत्येक धार्मिक कृत्य करते समय लोगों के लिए शपथ का प्रावधान किया था जो आज भी प्रचलित है।

यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करता हुआ मानव जीवन एवं प्राकृतिक जीवन में एकता का दर्शन बहुत पहले ही कर चुका था। ऋग्वेद के नदी सूक्त व पृथ्वी सूक्त तथा अथर्ववेद का अरण्य सूक्त क्रमश: नदियों, पृथ्वी और वनस्पतियों के संरक्षण व संवर्धन की कामना का संदेश देते हैं। 'यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' सूक्ति भी मानव तथा प्रकृति के मध्य अन्यान्याश्रय संबंध की विज्ञानपुष्ट अवधारणा को बताती है। पर्यावरण का स्वच्छ और संतुलित होना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। भारतीय मनीषियों ने इसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था जबकि पाश्चात्य सभ्यता को यह तथ्य बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समझ में आया।

पर्यावरण शब्द परि और आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है जो चारों ओर से घेरे हुए। अर्थात् पर्यावरण वह

है जो हमारे चारों ओर व्याप्त है और जिसमें जैविक, अजैविक, भौतिक, रासायनिक कारक, मानवीय तथा पारिस्थिकी तंत्र को प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही मानव भी अपने क्रिया-कलापों द्वारा पर्यावरण को प्रभावित करता है, जिसमें सूक्ष्म जीवाणुओं से लेकर कीड़े-मकोड़े आदि सभी प्रकार के जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, जल, वायु, मिट्टी, नदी, समुद्र, पर्वत, चट्टानें और स्वयं मानव भी सम्मिलित है। पर्यावरण के भौतिक, जैविक व रासायनिक घटकों की विशिष्टताओं में मानवीय क्रियाओं द्वारा होने वाला अवांछित परिवर्तन जिससे मानव और समस्त जीवों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव है और प्राणियों के जीवन के अनुकूल है। मानव सभ्यता के विकास के साथ ही उसकी आवश्यकताओं का भी तेजी से विस्तार हुआ। तीव्र गति से बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव द्वारा आधुनिकता एवं वैज्ञानिकता के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का असीमित विदोहन किया गया। औद्योगिक एवं तकनीकी विकास के नाम पर मानव ने अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति और जनसंख्या के दबाव में प्रकृति का अनियंत्रित दोहन किया। औद्योगिक कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों के बढ़ने से पर्यावरण प्रदूषण नामक समस्या का जन्म हुआ जिसके कारण इस ग्रह पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं।

मानव ने बड़ी-बड़ी इमारतें और कल-कारखाने बनाने के लिए पेड़ों को काटकर अपने लिए तो समस्या उत्पन्न की ही है, पशु-पक्षियों से भी उनका निवास स्थान छीन लिया। मानव प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने के स्थान पर उस पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करने लगा जिसका दुष्परिणाम ये हुआ कि दोनों के संबंध बिगड़ने लगे। मानव की भोगवादी और शोषण की धारणा उसी के जीवन के लिए भयानक समस्या के रूप में आ खड़ी हुई। औद्योगिक कारखानों से निकलने वाला धुआँ, रासायनिक अपशिष्ट व कूड़ा-कचरा पर्यावरण प्रदूषण का कारण बनते हैं और इसी पर्यावरण प्रदूषण के कारण पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण प्रदूषण आज एक वैश्विक समस्या बन गई है। इसी वैश्विक समस्या पर पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित करने, लोगों को जागरूक करने और पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण करने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ के 195 से अधिक सदस्य देशों द्वारा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा 26 नवंबर को विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस का आयोजन किया जाता है।

औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण प्रदूषण आज सिर्फ क्षेत्रीय या देशीय समस्या नहीं बल्कि वैश्विक ज्वलन्त समस्या का रूप ले चुका है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही भूमण्डलीय तापन (ग्लोबल वॉर्मिंग) बढ़ रहा है। इसी भूमण्डलीय तापन के कारण जलवायु में परिवर्तन आ रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लोबल वॉर्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन परत का क्षरण, अम्लीय वर्षा, मृदा क्षरण, भूस्खलन हो रहा है। कहीं भारी वर्षा हो रही है तो कहीं सूखा पड़ रहा है, कहीं लू चल रही है तो कहीं ठण्ड बढ़ रही है। कहीं बर्फ की चट्टाने टूट रही हैं तो कहीं समुद्री जल स्तर में वृद्धि हो रही है, बेमौसम वर्षा हो रही है, मिट्टी की गुणवत्ता घट रही है, प्रदूषण तीव्र गति से बढ़ रहा है और कंक्रीट के

Rajasthan Education Department

जंगल ऊग रहे हैं। औद्योगिक विकास और प्रकृति के अविवेकपूर्ण असीमित विदोहन के कारण हो रहे पर्यावरण प्रदूषण के दुष्परिणामों का मानव जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी विश्व के 20 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में भारत के दिल्ली, कानपुर, वाराणसी सहित 14 शहर शामिल हैं। उत्तर प्रदेश का कानपुर दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इन शहरों का प्रदूषण स्तर 2.5 पी.एम. है जिसे मानव शरीर के लिए सबसे खतरनाक माना जाता है। भारत में प्रतिवर्ष 24 लाख व्यक्तियों की मृत्यु केवल प्रदूषण जनित रोगों से होती है जो दुनिया भर में होने वाली मौतों का 30 प्रतिशत है।

सम्पूर्ण पृथ्वी पर 71 प्रतिशत भाग जल एवं 29 प्रतिशत स्थल भाग है। दुनिया में 99 प्रतिशत जल महासागरों, नदियों, झीलों, झरनों आदि में है, जो पीने योग्य नहीं है। महज 1 प्रतिशत या इससे भी कम पानी पीने योग्य है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही औद्योगिकीकरण एवं असीमित दोहन से उत्तरोत्तर पानी कम और प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषित जल के उपयोग के कारण होने वाली मौतों पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़े चौंकाने वाले हैं।

W.H.O. की एक रिपोर्ट के अनुसार शुद्ध पेयजल के अभाव व डायरिया के कारण विश्व में लगभग 2300 व्यक्ति प्रतिदिन अकाल मृत्यु का शिकार हो रहे हैं। इसी प्रकार विश्व में होने वाली बच्चों की कुल मृत्यु का 60 प्रतिशत का कारण प्रदूषित जल का सेवन है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के एक अध्ययन के अनुसार देश की नदियों के अधिकांश हिस्से प्रदूषित है। इसके अतिरिक्त 17 प्रतिशत जलस्रोत गंभीर प्रदूषित है। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के अनुसार गंभीर प्रदूषण फैलाने वाली लगभग 11 प्रतिशत औद्योगिक इकाइयाँ नियमों का पालन नहीं कर रही है। विभिन्न औद्योगिक इकाइयों द्वारा घातक रासायनिक अपशिष्ट व कूड़ा-कचरा नदियों में प्रवाहित करना, तापीय प्रदूषित जल व रेडियोधर्मी अपशिष्टों का नदियों व समुद्री जल में मिलना, परमाणु परीक्षण करने से जल में नाभिकीय कण मिलने से जल का प्रदूषित होना, पेट्रोलियम पदार्थ कुओं से निकालते समय समुद्री जल में मिलना, अस्पतालों से निकलने वाला संक्रामक अपशिष्ट जल स्रोतों में विसर्जित करना, कृषि कार्यों में विषैले रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का प्रयोग करना, पारम्परिक प्रथाओं की पालना हेतु मानव शवों को नदियों में विसर्जित करना, घरेलू कूड़ा-कचरा, सीवरेज व गन्दे नालों को नदियों में प्रवाहित करना, मानव मल मूत्र, अपशिष्ट व पशुओं के शवों को जल स्रोतों में प्रवाहित करना आदि जल प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

जल प्रदूषित होने से मानव के साथ-साथ समस्त जीवों के स्वास्थ्य एवं वनस्पति, प्रजातियों पर खतरा मंडरा रहा है। मानवों में प्रदूषित जल के उपयोग से टाइफॉइड, पीलिया, हैजा, डायरिया, अंधापन, लकवा, हृदय, गुर्दा, मस्तिष्क, फेफड़े व श्वसन संबंधी रोग होते हैं। प्रदूषित जल से कपड़े धोने व नहाने से त्वचा संबंधी रोग उत्पन्न होते हैं। प्रदूषित जल से सिंचाई करने से विषैले तत्त्व फलों, सब्जियों व अन्य खाद्य पदार्थों में मिल जाते हैं जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं। नदियों द्वारा प्रवाहित प्रदूषित जल समुद्र में मिलने व लोगों द्वारा समुद्र में डाले जा रहे कचरे से समुद्री जल प्रदूषित हो रहा है, जिससे समुद्री जीवों जैसे डॉल्फिन व टूना जैसी मछलियों पर खतरा मंडरा रहा है। औद्योगिक कारखानों व तेल रिफाइनरियों से निकलने वाले रासायनिक पदार्थों जैसे क्लोरीन, अमोनिया, हाइड्रोजन सल्फाइड, जस्ता, निकिल व पारा आदि तत्त्वों के जल में मिलने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं। औद्योगिक अपशिष्टयुक्त जल को उपचारित कर पुन: उपयोग में लेना, रासायनिक खाद के स्थान पर जैविक खाद से कृषि को प्रोत्साहित करना, नगरों में जल मल के निस्तारण हेतु सीवरेज शोधन संयंत्रों की स्थापना करना, मृत पशु व मानव शवों को नदियों में विसर्जन पर पूर्ण रोक लगाना आदि उपायों से जल प्रदूषण रोका जा सकता है।

पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार वायु ही है जिससे पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और अन्य सभी प्राणी जीवित रहते हैं। इसलिए इसे प्राणवायु कहा जाता है। एक इंसान को जीवित रहने के लिए प्रतिदिन औसतन 350 लीटर ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है जिसे वह 8500 से 9000 लीटर वायु का अवशोषण करके प्राप्त करता है। वायुमण्डल कई गैसों का संघटन है। जिसमें नाइट्रोजन (78%), ऑक्सीजन (21%), कार्बन डाइऑक्साइड (0.03%), जलवाष्प (0.04%), धूलकण व अन्य गैसें (0.93%) होती हैं। वायु में अनेक प्रकार के बाहरी विषैले घटक मिल जाते हैं जिससे वायु की गुणवत्ता और विशिष्टताओं में परिवर्तन आ जाता है। कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर के ऑक्साइड, नाइट्रोजन के ऑक्साइड, क्लोरीन, सीसा, अमोनिया, कैडमियम, धूलकण आदि वायु प्रदूषक है। हम बिना खाए-पीए एक दो दिन जीवित रह सकते हैं लेकिन बिना श्वास लिए एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते हैं। विचार कीजिए जिस वायु में हम श्वास लेते हैं, वही प्रदूषित हो जाए तो हमारा जीवित रहना कितना मुश्किल हो जायेगा? वाहनों से निकलने वाला धुआँ, औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला धुआँ व खतरनाक रसायन, आण्विक संयंत्रों से निकलने वाली विषैली गैसें व धूलकण, तेल शोधन कारखानों से निकलने वाला धुआँ, कोयले व पेड़-पौधों के जलने से निकलने वाला धुआँ, ज्वालामुखी विस्फोट से निकलने वाला धुआँ, धूलकण, लावा, जीवाश्म ईंधन के लगातार दहन से कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसी विषैली गैसें वायु प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। वायु प्रदूषण के कारण सूर्यताप में कमी आती है जिससे पेड़-पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है। साथ ही ग्लोबल वॉर्मिंग भी बढ़ता है।

जलवायु एवं वायुमण्डलीय दशाओं पर प्रतिकूल प्रभाव से जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत में क्षरण, ग्रीनहाउस प्रभाव व मौसम पर प्रभाव पड़ता है। वायु प्रदूषण के कारण हवा में अवाँछित गैसों की उपस्थिति से मनुष्यों, पशु-पक्षियों को गंभीर समस्याएँ होने लगती है। वायु प्रदूषण से श्वसन क्रिया प्रभावित होती है जिससे मनुष्यों में दमा, खाँसी, सर्दी-जुकाम, एलर्जी, अंधापन, आँखों में जलन, सिर दर्द, फेफड़ों का कैंसर, गले में दर्द, निमोनिया, उल्टी, हृदय रोग, जीन परिवर्तन, आनुवंशिकीय रोग, त्वचा संबंधी रोग व कैंसर आदि रोग होते हैं। पृथ्वी के वायुमण्डल में सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड जल के साथ क्रिया करके

Rajasthan Education Department

नाइट्रिक एसिड व गंधक का तेजाब बनाकर वर्षा के साथ मिलकर धरती पर आते हैं जिसे अम्लीय वर्षा कहते हैं।

अम्लीय वर्षा के कारण जलीय प्राणियों की मृत्यु हो जाती है। पेड़-पौधों व कृषि फसलों की वृद्धि में गिरावट आ जाती है। सीसा और ताँबा जैसे घातक तत्त्वों के जल में मिलने से भयानक दुष्परिणाम होते हैं। अम्लीय वर्षा के कारण ही विश्व प्रसिद्ध आगरा का ताजमहल भी पीला पड़ता जा रहा है। मृदा की अम्लीयता बढ़ जाने से कृषि उत्पादकता भी कम हो जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय मेडिकल जर्नल द लैंसेट की रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2019 में 16.7 लाख व्यक्तियों की मौत केवल वायु प्रदूषण से हुई है। शोधकर्त्ताओं का कहना है कि वायु प्रदूषण के कारण होने वाली इन मौतों का यह आँकड़ा 2018 में देश में हुई कुल मौतों का 18 प्रतिशत है। वायु प्रदूषण एक धीमा जहर है जो सम्पूर्ण पर्यावरण व जैविक-अजैविक जगत को प्रभावित कर रहा है। यदि समय पर समाधान नहीं किया गया तो सम्पूर्ण सृष्टि नष्ट हो जाएगी। प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए वृक्षारोपण करना होगा। पेड़ों को काटने पर सजा का प्रावधान किया जाए। भारतीय वन नीति के अनुसार कुल क्षेत्रफल के 33 प्रतिशत क्षेत्र पर वन होने चाहिए। वाहनों के प्रदूषण पर नियंत्रण किया जाए, साथ ही पेट्रोल डीजल की अपेक्षा सौर ऊर्जा, बैटरी चालित, विद्युत आदि का उपयोग किया जाए। निर्धूम चूल्हों का उपयोग किया जाए। ईंट भट्टों, बर्तन बनाने व पकाने के उद्योगों को आबादी से दूर स्थापित किया जाए। प्रदूषण रहित वाहनों व बायोडीजल का उपयोग किया जाए।

प्राकृतिक एवं मानवीय क्रियाओं द्वारा विषैले, अवाँछित व अनुपयोगी तत्त्व मृदा में मिल जाने से मृदा की गुणवत्ता में परिवर्तन आ जाता है। विभिन्न औद्योगिक इकाइयों व खदानों से निकलने वाला ठोस कचरा, चीनी उद्योग व कागज उद्योग से निकलने वाला ठोस कचरा, प्लास्टिक (पॉलीथिन) की थैलियों का उपयोग मृदा प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे व विषैले रासायनिक तत्त्वों का उचित प्रबन्धन नहीं होना और उसे भूमि पर छोड़ दिये जाने से मृदा प्रदूषण होता है। खनन क्रियाओं से निकलने वाला अपशिष्ट वर्षा जल के साथ मिट्टी में मिलकर ऊर्वरा शक्ति नष्ट करते हैं। मृदा प्रदूषण के कारण कृषि योग्य भूमि की कमी हो जाती है। प्रदूषित भूमि में उत्पादित भोज्य पदार्थों से स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। कृषि कार्यों में कीटनाशकों, रासायनिक उर्वरकों, अमोनिया, पेट्रोलियम, हाइड्रोकार्बन, नाइट्रेट, नेथलीन, खरपतवार नाशक आदि के अधिक प्रयोग के कारण मृदा की ऊर्वरा शक्ति नष्ट होती है। अम्लीय वर्षा से मिट्टी की उत्पादकता घट जाती है तथा अधिक अम्लता के कारण मिट्टी के खनिज और पोषक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। कृषि कार्यों में कीटनाशकों व रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करना, जैविक उर्वरकों के प्रयोग को बढावा देना, मृदा अपक्षरण को रोकना, वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, फसल चक्र अपनाना, बाढ़ नियंत्रण करना आदि उपायों को अपनाकर मृदा प्रदूषण को रोका जा सकता है।

इस संदर्भ में कई वैश्विक पर्यावरण संधियाँ, सैकड़ों क्षेत्रीय और द्विपक्षीय वार्ताएँ व समझौते किए गए। 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्त्वावधान में आयोजित पृथ्वी शिखर सम्मेलन में 178 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में (1) ग्लोबल वॉर्मिंग को रोकने, (2) वन संरक्षण, (3) जैव विविधता कार्यक्रम तथा (4) रियो घोषणा पत्र आदि समझौते किए गए जिसके अन्तर्गत पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र की अखण्डता और गुणवत्ता को बनाए रखने, सुरक्षा और संरक्षण के लिए विभिन्न देश विश्व बंधुत्व की भावना से आपस में सहयोग करेंगे। भारत ने 2002 में इस संधि पर हस्ताक्षर किए और अनुमोदन किया कि पृथ्वी को ग्लोबल वॉर्मिंग से बचाने हेतु इसके लिए उत्तरदायी 6 ग्रीनहाउस गैसों (कार्बन डाइ ऑक्साइड, मिथेन, हाइड्रोक्लोरो कार्बन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन एवं सल्फर हेक्सा क्लोराइड) के उत्सर्जन को 2012 तक 5 प्रतिशत कम करना है। समझौते के अनुसार यूरोपीय संघ के लिए 8 प्रतिशत, अमेरिका 7 प्रतिशत, जापान को 6 प्रतिशत की कमी का लक्ष्य रखा गया था।

पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिकीय संतुलन एवं जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए विभिन्न देशों एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ ने साझा प्रयास किए जिनमें से प्रमुख निम्न हैं:- स्टॉकहोम सम्मेलन 1972, जेनेवा सम्मेलन 1979, वियना सम्मेलन 1985, मॉंट्रियल समझौता 1987, पृथ्वी शिखर सम्मेलन 1992, क्योटो सम्मेलन 1997, जोहान्सबर्ग सम्मेलन 2002, नासा दुआ सम्मेलन 2007, कानकून सम्मेलन 2010, दोहा सम्मेलन 2012, वारसा सम्मेलन 2013, विश्व पृथ्वी सम्मेलन 2016 आदि। उक्त सम्मेलनों के माध्यम से संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व के सभी देशों के साथ मिलकर जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता के सतत् विकास, ग्लोबल वॉर्मिंग, ग्रीनहाउस गैसों यथा कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFCs), हाइड्रोक्लोरो कार्बन (HFCs), सल्फर हेक्सा क्लोराइड (SCI_6) का उत्सर्जन कम करने, ओजोन परत का संरक्षण, विश्व बंधुत्व की भावना बढ़ाने आदि पर महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक समझौते किए।

कुछ अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थाएँ भी पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रयासरत हैं जिनमें से प्रमुख निम्नानुसार हैं:- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) नैरोबी, प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) स्विटजरलैण्ड, वन्यजीव निगरानी नेटवर्क (TRAFFIC), विश्व वन्यजीव कोष (WWF) स्विटजरलैण्ड, जलवायु परिवर्तन पर अन्तर-सरकारी पैनल (IPCC) जेनेवा स्विटजरलैण्ड। कुछ भारतीय संस्थाएँ भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है जैसे- बोटनिकल सर्वे ऑफ इण्डिया कोलकाता, द वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डिया देहरादून, कल्पवृक्ष (NGO), केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) जोधपुर, फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट (FRI) देहरादून, भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून, राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी शोध संस्थान (NEERI) नागपुर आदि।

प्राध्यापक (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
सिलारपुर (नीमराना),
अलवर-301705
मो. 9166060320

Rajasthan Education Department

शैक्षिक चिन्तन

मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा

❒ केदार शर्मा 'निरीह'

नई शिक्षा नीति में पाँचवी कक्षा तक मातृभाषा या स्थानीय बोली अथवा क्षेत्रीय भाषा को पढ़ाई का माध्यम बनाने बात की गई है। इसके अलावा यह भी कहा गया है कि यदि आगे की कक्षाओं में भी इसे जारी रखा जाता है तो यह और भी बेहतरीन होगा। शिक्षा मंत्रालय का कहना है कि बच्चा अपनी भाषा में चीजों को बेहतर ढंग से समझता है। इसलिए शुरूआती शिक्षा मातृभाषा में ही होनी चाहिए। उच्च शिक्षा में भी भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम विकसित किए जाने की बात इसमें कही गई है।

हालांकि एन.सी.एफ. 2005 में इस पर पर्याप्त ध्यान केन्द्रित किया गया है। स्कूल के वातावरण और सीखने की प्रक्रिया को बालक के सामाजिक, पारिवारिक परिवेश के संदर्भ में जोड़ने की बात कही गई। तदनुरूप पाठ्यपुस्तकों में भी बदलाव दृष्टिगोचर हुआ परंतु प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का प्रयोग जिस स्तर तक अपेक्षित था उस सीमा को अभी छूना बाकी है।

बच्चा जब पहली बार स्कूल आता है तो वह घर की एवं स्थानीय भाषा में पारगंत होकर आता है। उस भाषा में वह गीत, कहानी, अभिनय आदि के माध्यम से बहुत कुछ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी प्रक्रिया का सहारा लेकर दूसरी भाषा सिखाई जा सकती है। जैसे लता वृक्ष का सहारा लेकर ऊपर उसकी चोटी तक पहुँच जाती है वैसे ही मातृभाषा का सहारा लेकर बालक अन्य भाषाओं में कुशलता प्राप्त कर सकता है। अपरिचित तथ्यों, वस्तुओं और संदर्भों से युक्त वातावरण में स्कूल के औपचारिक पाठ्यक्रम से जुड़ी प्रक्रियाओं के दौरान यही बच्चे सहमे हुए रहते है। यानि स्कूल और बच्चों की घरेलू भाषाओं में भारी अन्तर तो है ही साथ ही कक्षाओं का लिखित माहौल भी कई नन्हें बच्चों के लिए सर्वथा अपरिचित ही होता है।

पाठ्यपुस्तकों में अपरिचित संदर्भ– अक्षरों की ध्वनि से पहचान कराने के लिए ऐसे–ऐसे अपरिचित संदर्भ चुने जाते हैं जिनको न तो बालक ने देखा है और न ही किसी प्रकार से वह इनसे परिचित है। थ से थर्मस, ज से जहाज, र से रथ, ठ से ठठेरा, र से रहँट, ह से हल, य से यज्ञ जैसे अनगिनत संदर्भ सभी क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकों में परंपरा से अंकित है। जबकि बालक के अपनी मातृभाषा में अनेक परिचित संदर्भ मौजूद होते हैं। स्वयं आलेख लेखक को (ज को 'जय' भगवान राम की, र से रस्सी, ल से लेने व द से देने का जैसे संदर्भ देकर) अत्यल्प समय एवं श्रम में अढ़ाई साल की बालिका को अर्थ सहित शब्द ध्वनि पहचान करवाने में सफलता मिली। पर कोई भी संदर्भ सार्वभौमिक नहीं हो सकते। बालक की किस संदर्भ से घनिष्ठता है, पाठ्यपुस्तक में उनको माध्यम बनाया जाना चाहिए।

शब्दों और वाक्यों की बात करें तो उनमें भी पाठ निर्माण के पीछे ध्वनि का ही तर्क काम करता है। एक ही ध्वनि से जुड़े शब्दों की प्रधानता होती है ताकि बालक के मस्तिष्क में उस मात्रायुक्त अक्षर की ध्वनि की पहचान पक्की हो जाए। परंतु उससे परिचित व अर्थपूर्ण संदर्भ नहीं बना पाने के कारण सीखने की प्रक्रिया अत्यंत बोझिल हो जाती है–'कह ईश कह' (बाल मंजरी पृ. 13) चीर बन, तीर चला, गीत गा (हिन्दी रीडर पृ. 13) गुलाब चुन। हापुड़ का साबुन ला। (इन्द्र धनुष स्वर माला पृ. 27)

यानि येन–केन प्रकारेण बालकों को वर्णमाला और बारहखड़ी का समुचित अभ्यास करवाना ताकि वे शब्दों और वाक्यों को पढ़ सके। साक्षर हो सके। परंतु अपरिचित शब्दों और संदर्भों से एवं वाक्यों में शब्दों का आपस में सुसंगत तालमेल नहीं होने से बालक कोई अवधारणा नहीं बना पाने के कारण वह निरंतर ऊबने लगता है, तद्भूत नीरसता के कारण कक्षा की प्रक्रिया से उसका जी उचटने लगता है। डर के कारण वह भले ही शिक्षक के निर्देशों का पालन करता रहे पर सीखने की प्रक्रिया में उसके द्वारा सक्रिय भूमिका निभाना संभव नहीं होता। कई बच्चे इस तरह कक्षा की प्रक्रिया में अक्षम रह जाते हैं और धीरे–धीरे उनके प्रति एक नकारात्मक सोच उभरने लगती है और उन्हें 'नालायक' मान लिया जाता है।

ऐसे बच्चे स्वयं भी अपने प्रति हीन भावना और नकारात्मक सोच आत्मसात कर लेते हैं और कक्षा में इनकी भागीदारी न के बराबर हो जाती है। चिन्ताजनक बात यह है कि ऐसे बच्चों की संख्या काफी अधिक होती है। शिक्षकों के लिए ये बच्चे एक बहुत बड़ी चुनौती प्रस्तुत करते हैं। पिछले दस वर्ष में हुए शोध कार्यों ने सिद्ध किया है कि कक्षा के भीतर बच्चों की असफलता का मुख्य कारण घर और समाज की तुलना में स्कूल के परिवेश का अंतर और असमानता होना है। घरेलू भाषा में और स्कूल की भाषा में अंतर ही कई बच्चों के लिए शिक्षा सामग्री से अर्थपूर्ण रिश्ता बनाने में बाधा उत्पन्न करता है। राजस्थान की अनेक बोलियों, हरियाणवी आदि क्षेत्रीय भाषाओं को पाठ्यपुस्तकों में प्रयोग की जा रही हिन्दी की तुलना में कक्षा के भीतर असमानता के नजरिए से देखा जाता है।

कहावत भी है कि 'कोस कोस में बदले पानी, बारह कोस पर बानी।' हर क्षेत्र के अपने अलग स्थान, मंदिर, वृक्ष, कहीं खेजड़ी तो कहीं नीम, तो कहीं कूंचे, अलग–अलग मेले तो अलग–अलग लोकदेवता। कहने का मंतव्य है कि बालक के परिवेश के परिचित तथ्यों, व्यक्तियों, स्थानों, वस्तुओं, पशुओं आदि का ही संदर्भ बालक के लिए अर्थग्राह्य होने के कारण समझकर पढ़ने एवं सोचकर लिखने के कौशल के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है। 'थप रतन घर थप' जैसे पाठ उसके बाल मन को कोई उद्दीपन नहीं दे पाते और उसका मन स्कूल से उचटने लगता है।

हर परिवेश की अपनी अलग पाठ्यपुस्तक होना समय की माँग है। पूरे प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा के लिए एक समान पाठ्यपुस्तकें लागू करना इसी दृष्टिकोण के चलते ठीक नहीं कहा जा सकता है। वरन प्रत्येक ब्लॉक पर वहाँ के परिवेश के अनुरूप विशेष पाठ्य पुस्तक एवं संदर्भ साहित्य, स्थानीय परिचित लोकगीत, कहानी, मुहावरे, लोकोक्ति आदि से प्रचूर होना वांछनीय है। अगर हो सके तो स्थानीय विद्यालय स्तर पर कार्यशाला आयोजित कर अपनी स्थानीय विशेषताओं से भरपूर, अपनी माटी की महक लिए अपनी अलग पाठ्यपुस्तक बनाई जानी चाहिए।

प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो. अनिल सदगोपाल का कहना है कि आज विद्यालय से ड्रॉप आउट के आँकड़े इकट्ठे किए जाते हैं, यह ड्रॉप आउट नहीं बल्कि शिक्षा से वॉक आउट है। ऐसा करके वो हमारे लिए यह संदेश दे रहे हैं कि आपकी शिक्षा

Rajasthan Education Department

हमारे लिए काम की नहीं है।

मनोवैज्ञानिक समाधान मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा– परिचित वस्तु, व्यक्ति, घटना तथा परिस्थितियों के प्रति अवधारणाओं का बनना और अभिव्यक्ति के लिए विचारों का निर्माण ये भाषा की मौखिक प्रक्रिया है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक पियाजे इन्हीं अवधारणाओं को स्कीमा नाम देते हैं। ज्योंही कोई नई चीज दिखाई या सिखाई जाती है तो पहले से उसके मनो आकाश में स्थित इस स्कीमा से उनकी अन्तः क्रिया होती है, उनमें आपस में समायोजन होता है। फिर दोनों के योग में अपनी स्वयं की स्वतंत्र प्रतिक्रिया जोड़कर बालक एक भिन्न रचनात्मक प्रतिक्रिया कर पाता है।

लेव ए. वायगोत्स्की स्वीकार करते हैं कि बच्चा समाज के बीच रहता हुआ ज्ञान अर्जित करता है। फिर इसका उपयोग करना सीख जाता है। अतः सीखने की भाषा उसकी समाज में बोली जाने वाले मातृभाषा में होना आवश्यक है। नॉम चोम्स्की का कहना है कि बालक के मस्तिष्क में कोई ऐसा जैविक उपकरण है जो सीमित परिचित ज्ञान के आधार पर असीमित भाषा और व्याकरण का उत्पादन शुरू कर देता है। वायगोत्स्की और चोम्स्की हमें बताते हैं कि बच्चा एक संज्ञानात्मक इकाई है। यह संज्ञानात्मक इकाई अपने स्थानीय समाज और उनकी भाषा बोली और परिवेश के साथ अन्तःक्रिया करते हुए स्कूल तक आता है। उस समय वह भाषिक दृष्टि से वयस्क होता है। अतः इसके सहारे उसे नई भाषा का वातावरण उसी भाषा के साहित्य और संवाद के माध्यम से पढ़ने–लिखने के अधिकतम अवसर देकर बनाया जा सकता है क्योंकि दुनिया की तमाम भाषाओं में भिन्नताओं के बावजूद उनका एक सार्वभौमिक व्याकरण होता है। इन भिन्नताओं और समानताओं के पैटर्न को समझकर कोई भी नई भाषा सीखी जा सकती है।

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षक बच्चे को उसकी मातृभाषा के परिवेश को ध्यान में रखते हुए उसे जो भाषा सिखाई जानी है, उसी भाषा के अधिकतम वातावरण की रचना करना नई भाषा सीखने में सहायता कर सकता है।

नई शिक्षा नीति से अपेक्षाएँ– नई शिक्षा नीति से यह अपेक्षा है कि विद्यालय में बच्चों को घर की भाषा का उपयोग करने की छूट दें और उनकी भाषा का सम्मान करें। भाषा में संप्रेषण और अभिव्यक्ति मौखिक भी होती है और लिखित भी। दूसरा तरीका लिखित अभिव्यक्ति को पढ़कर समझाना है एवं विचारों को लिपि में अभिव्यक्ति करना दोनों एक किस्म का तकनीकी कौशल है। केवल लिपि चिह्नों (वर्णमाला एवं बारहखड़ी) की पहचान करना और मिला–मिला कर पढ़ने के तकनीकी कौशल को पढ़ना–लिखना नहीं माना जा सकता। इसके लिए पढ़े गए के साथ अर्थनिर्माण और समझे गए अर्थ के साथ लिपि चिह्नों का सटीक उपयोग समझना बेहद जरूरी है।

अधिकतर स्थानीय बोलियों और मातृभाषाओं में अलग लिपि नहीं होती। वैसे भी लिपि भाषा को संग्रहित और संप्रेषित करने का कलात्मक माध्यम भर है। थोड़े से फेरबदल के साथ दुनिया की किसी भी भाषा को किसी भी लिपि में लिखा जा सकता है। देवनागरी लिपि को ही हिन्दी, नेपाली, संस्कृत हरियाणवी भोजपुरी, मैथिली, कुमाउंनी, गढ़वाली आदि अनेक भाषाएँ लिपि के रूप में प्रयोग करती है। पर भाषा के लिए लिपि होना अनिवार्य नहीं है। अंडमान निकोबार द्वीप समूहों की अनेक जनजातीय भाषाएँ लिपि विहीन हैं। अतः नई शिक्षा नीति में अमल के बाद अनेक बोलियों को निकटतम सर्वाधिक प्रचलित लिपि का आवरण मिलने वाला है। राजस्थान की अनेक बोलियों की अपनी कोई लिपि नहीं है पर मौखिक भाषा (मारवाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, ढूँढ़ाड़ी आदि) खूब प्रचलन में है। अब इन्हें प्राथमिक शिक्षण के लिए हिन्दी लिपि के आवरण में सजाया जा सकेगा। जिनमें वहाँ की लोक–कहानियाँ, लोक–गीत, स्थानीय मेलों, लोक–देवताओं, स्वतंत्रता सेनानियों, लोक–कलाओं, स्थानीय पशुओं, पक्षियों, रीति–रिवाजों, वस्त्रों, व्यंजनों का समावेशन होगा। उन पर बातचीत होगी। मुहावरे होंगे, कहावतें होगी। मातृभाषा का यह समृद्ध रूप लिपि की पहचान पर आरोहित होकर बालक के हृदय में नए–नए अर्थों का उजास करेगा। हँसाएगा। भीतर से आकांक्षा, अभीप्सा की सृष्टि होगी। यही अर्थ बालक की अंगुली पकड़कर सृजन की ओर, सौन्दर्य–बोध की ओर ले जाएगा। जहाँ से वह अपनी कल्पना को उड़ान देगा। तर्क, तुलना वर्गीकरण, विश्लेषण कर नए निष्कर्ष निकालेगा। माता मातृभाषा का दूध पीकर वह अभिव्यक्ति के नए आयामों की सृष्टि करेगा और वे नए आयाम नई पीढ़ी के लिए, मानवता के लिए नई राह प्रशस्त करेंगे।

आलेख का लेखक गवाह है कि उस अनुभव का जब प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण के दौरान बालकों को लिखने के लिए ऐसा विषय दिया गया जिस पर वे अपनी खुलकर अभिव्यक्ति कर सकें। विषय एक ऐसे कार्य पर था जिस पर वे घर पर सबसे अधिक समय खर्च करते थे। आपके घर पर कौनसा पालतू पशु है? आपके घर के अन्य सदस्य उसके लिए कौन–कौनसे कार्य करते हैं? आप स्वयं उसके लिए क्या–क्या कार्य करते हो? सभी बालकों ने सोच–सोच कर लिखा। बढ़–चढ़ कर लिखा। क्रियाएँ हिन्दी में थी। पर संज्ञाओं में स्थानीय शब्दों की भरमार थी। प्रार्थना सत्र के दौरान उनका वाचन करवाया गया। एक बार बालकों से घर से लिखकर लाने के लिए कहा गया। विषय था– कल्पना करो कि आप अपने भाई–बहनों के साथ घर पर अकेले हैं। आपके मम्मी–पापा किसी समारोह में दो दिन के लिए गए हैं। उनके जाने के तुरंत बाद अचानक आपके घर पर कुछ मेहमान आ गए। मेहमानों के आने के बाद से लेकर दूसरे दिन उनके जाने तक आपने कैसे आवभगत की? मैंने पाया कि बच्चों ने गहरी रुचि लेकर बढ़–चढ़कर लिखा। उन्हें अपने रीति–रिवाजों की गहरी समझ थी। परिजनों को जब दिखाया गया तो उनका कहना था कि आवभगत में बच्चों ने कोई कमी नहीं छोड़ी थी। यहाँ तक कि मेहमानों को विदा करते समय बड़ों को साफा बंधाकर कांधे पर अंगोछा रखकर, महिलाओं को चूड़ियाँ, कपड़े का पीस व रुपए देकर विदा करने की बात लिखी गई। जिस क्रमबद्धता और तर्कसंगतता से उन्होंने लिखा इससे उनकी अभिव्यक्ति और लेखन को नया आयाम मिला होगा। मातृभाषा सीखने, समझने एवं ज्ञान प्राप्ति में सरल है। इसके लिए ई–पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित किए जाएंगे। वर्चुअल लैब विकसित की जा रही है और राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलोजी फोरम (NEFT) बनाया जा रहा है। कुल मिलाकर उम्मीद की जानी चाहिए कि इससे भारतीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य समृद्ध होगा। आठ साल (जो कि सीखने की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण समय है) तक नींव, भाषाई दृष्टि से ठोकठोक कर भरी जा सकेगी ताकि उस पर सृजनशीलता का भव्य महल खड़ा किया जा सके।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खरेड़ा,
टोडारायसिंह, टोंक (राज.)–304001
मो: 9587615121

Rajasthan Education Department

विद्यालय में पुस्तकालय की उपादेयता

❒ कमल कुमार जाँगिड़

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 विद्यालय पुस्तकालय को एक बौद्धिक स्थान के रूप में परिकल्पित करती है। जहाँ शिक्षकों, बालकों और समुदाय को ज्ञान और परिकल्पना को गहराई से जानने का अवसर मिल सकता है। किसी भी पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य बालकों के लिए पढ़ने की सामग्री उपलब्ध करवाना और पाठकों को पोषित करना है।

मुदालियर आयोग भी बालकों के लिए पुस्तकालय की आवश्यकता के अनुरूप रुचियों व गुणवता पर बल देता है। यद्यपि बाल पुस्तकालय के संदर्भ में सभी आदर्श स्थितियाँ जो आयोग ने सुझाई है नहीं मिलती, फिर भी पढ़ने की संस्कृति को विकसित करने की परम्परा बहुत प्राचीन है। 2007 में शिक्षाविद् कृष्णकुमार ने पुस्तक संस्कृति पर बल देते हुए बाल पुस्तकालय पर जोर दिया है।

पुस्तकालय के उद्देश्यों यथा भाषा कौशल, ज्ञान, अभिव्यक्ति, समझ व संवाद जैसे बहुआयामी शैक्षिक उद्देश्यों से जोड़कर देखते हैं। पुस्तकालय औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा का ही अंग है। अध्ययन की आदत को विकसित करने के लिए पुस्तकालय की महती आवश्यकता है। स्वरुचि अध्ययन के दृष्टिकोण से पुस्तकालय एक संस्था या स्थान न होकर शिक्षक का कार्य करते हैं। पुस्तकालय में उपलब्ध संसाधन शिक्षा की पूरक व्यवस्था के रूप में कार्य करते हैं।

पुस्तकालय की उपयोगिता न केवल पढ़ने के लिए बल्कि कौशल विकास की दृष्टि से भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। प्राथमिक कक्षाओं में अधिक पुस्तकें उपलब्ध करवाना तथा बालकों का उन पर आपसी वार्तालाप जो भाषा, संस्कृति एवं देशकाल को समझने में सहयोग प्रदान कर सके। बालक स्वयं के स्तर पर पढ़ सके और अपनी कल्पनाशक्ति का विकास कर सके।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका ने पुस्तकालय को एक शिक्षा पद्धति के रूप में देखा, जिसे उन्होंने पुस्तकालय पद्धति नाम दिया। विभिन्न संदर्भों में पुस्तकालय सेतु का कार्य करता है यथा- विद्यालय, शिक्षक, बालक व समाज आदि। चूंकि पुस्तकालय अपने आप में एक जीवंत संस्था है। वस्तुतः पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है, जहाँ आश्चर्य, कुतूहल, सीखने का रोमांच, सक्रियता, बातचीत और परिचर्चा भी हो सकती है।

पुस्तकालय की उपादेयता :- पुस्तकालय पाठ्यक्रम के साथ-साथ विमर्श के अवसर भी उपलब्ध करवाता है। इसके अतिरिक्त ऐसे अवसर भी वहाँ मिलेंगे, जहाँ बालक अपने ज्ञानोपयोग व कौशल को गति प्रदान कर सके। उनके साथ जुड़े प्रसंगों व विचारों को सुनने, समझने व गढ़ने का सुअवसर मिलता है।

पुस्तकालय का महत्त्व वहाँ और बढ़ जाता है जहाँ यह विभेद हो कि किस उम्र में कौनसी पुस्तकें उपयोगी सिद्ध हो सकेगी। बाल पुस्तकालय का मूल उद्देश्य तो यही है कि बालक पढ़ें तथा बचपन में पठन के प्रति सकारात्मक लगाव व रुचि पैदा हो। नील गैमन लिखते हैं कि 'लाइब्रेरी का ताल्लुक आजादी से है, पढ़ने की आजादी।' ख्यालों की आजादी विचारो के आदान-प्रदान की आजादी, पुस्तकालयों का सम्बन्ध शिक्षा से भी है, मनोरंजन से भी। सुरक्षित दुनिया की रचना से है और जानकारियाँ हासिल करने से भी है। आगे वे भविष्य की कल्पना करते हुए यह कहते हैं कि पुस्तकालय के अस्तित्व को लेकर कोई गलतफहमी न पालें कि पुस्तकालय क्या होता था? उन्होंने 'शार्क' का उदाहरण देकर अस्तित्व को बचाने का आह्वान भी किया। पुस्तकालय भविष्य का दरवाजा है और अपने पूर्वजों के साथ संवाद करने का माध्यम भी।

प्रजातांत्रिक प्रणाली में शिक्षित तथा सूचना प्राप्त नागरिक ही समाज तथा देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकता है। वास्तव में समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति में क्षमता होनी चाहिए कि वह सही समय पर सही निर्णय ले सकें। ऐसे निर्णय खेत जोतने से लेकर जन प्रतिनिधियों को चुनने तक हर समय लेने पड़ते हैं। भारतीय संविधान भी सभी नागरिकों को न्याय, समानता व स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित करता है।

प्रसिद्ध विद्वान गेराल्ड जोनसन ने अपनी पुस्तक 'पब्लिक लाइब्रेरी सर्विसेज' में लिखा है कि विश्व के सर्वोत्तम विचारों को जानने का सबसे तेज और सबसे सरल माध्यम सार्वजनिक पुस्तकालय है। इन पुस्तकालयों के माध्यम से सूचनाएँ बिना किसी भेदभाव (रंग, जाति या धर्म के आधार पर) के निःशुल्क प्राप्त होनी चाहिए। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत सूचनाएँ उपयोगी एवं प्रत्येक क्षेत्र को छूती हुई यथा राजनीति, शिक्षा, कृषि, विज्ञान, विपणन, व्यापार आदि हो। इसके लिए सबसे सुलभ व सहज साधन है- दैनिक समाचार पत्र, पत्रिकाएँ एवं पुस्तकें। जिनका संकलन एवं उपलब्धता जन साधारण के लिए पुस्तकालयों के माध्यम से ही संभव है। चूंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। अतः नवीनतम कृषि अनुसंधान, प्रयोग, यंत्र, खाद व बीज व उनकी किस्मों के प्रकार व जानकारी ग्राम स्तर पर उपलब्ध हो जाए। ग्रामीण बालकों के लिए पुस्तकालय अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है जहाँ देश-विदेश के ताजा घटनाक्रम, रोजगार समाचार, सामान्य ज्ञान, विज्ञान व प्रशासनिक व्यवस्था आदि की अद्यतन जानकारियाँ मिलती रहे।

पुस्तकालय निरक्षर को साक्षर व साक्षर को विद्वान बनाते हैं। प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार पॉप के शब्दों में- Books are good friend and reading is a good habit. अतः नियमित अध्ययन की प्रक्रिया चिंतन व मनन का अवसर प्रदान करती है।

पुस्तकालयों का सतत शिक्षा से जुड़ना व सामाजिक दायित्व शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने का प्रयास है। पुस्तकों में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति सुरक्षित है। महात्मा गाँधी ने कहा था कि 'पुस्तकालय जहाँ सद्साहित्य है वहीं वे हमारी राष्ट्रीय धरोहर भी हैं।' विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें हमें शिक्षा, ज्ञान, प्रेरणा व नित्य नवीन जानकारियाँ देकर हमारा मार्गदर्शन करती है। महात्मा गाँधी के सपनों की 'ग्रामीण स्वराज' अवधारणा इन पुस्तकालयों के माध्यम से ही साकार हो सकती है।

अध्यापक
जवाहर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुचामन सिटी, नागौर (राज.) **मो: 9928278014**

Rajasthan Education Department

राष्ट्रीय सेवा योजना

व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त माध्यम

❒ रूपसिंह जाखड़

भारत में छात्रों को सामुदायिक विकास में सक्रियता से लगाने का विचार राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के युग की याद दिलाता है। छात्रों को अपने अध्ययनकाल में अपने बौद्धिक विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व निर्माण एवं बहुआयामी विकास कर भावी जीवन का निर्माण करना होता है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर 24 सितम्बर 1969 को महात्मा गाँधी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना देश के 37 विश्वविद्यालयों में 40,000 स्वयंसेवकों के साथ राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) के विकल्प के रूप में शुरू की गई थी। जहाँ इसकी इकाइयाँ कार्यरत हैं। यह योजना राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की स्मृति में एक श्रद्धांजलि थी जिन्होंने छात्रों को कैम्पस से बाहर निकलकर समुदाय के साथ रहने और उनसे सीखने के लिए प्रेरित किया। वे केम्पस-समुदाय, ज्ञान कार्य एवं मस्तिष्क व हाथ के बीच सामंजस्य बनाना चाहते थे। यह गाँधी जी का स्वप्न था कि देश का युवा वर्ग श्रम के प्रति निष्ठाभाव एवं सामुदायिक सेवा के द्वारा आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी एवं आत्मसम्मान वाले बनकर एक मजबूत भारत का निर्माण करें।

एन.एस.एस. की पृष्ठभूमि– देश की आजादी के बाद तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु उच्च शिक्षा प्रणाली में सामुदायिक सेवा लागू करना चाहते थे। तत्पश्चात भारत सरकार ने 1952 में अपने प्रथम पंचवर्षीय योजना में उक्त योजना के लिए रूपरेखा तैयार की। पंडित नेहरु के 1958 में शिक्षा मंत्रालय को दिए गए निर्देश के बाद 28 अगस्त 1959 को डॉ. सी.डी. देशमुख की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय सेवा समिति का गठन किया गया जिसने युवाओं के लिए राष्ट्रीय सेवा विषय का गहन अध्ययन किया। तत्पश्चात 1964 में डॉ. डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता वाले शिक्षा आयोग एवं 1969 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सिफारिश के आधार पर तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षामंत्री डॉ. वी.के.आर. राव ने राष्ट्रीय सेवा योजना को 24 सितम्बर 1969 को लागू कर दिया।

एन.एस.एस. का लक्ष्य– इस योजना का मूल लक्ष्य छात्र-छात्राओं को अपने अध्ययनकाल में सामुदायिक सेवा एवं श्रमदान के द्वारा उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का निर्माण करना है। स्वयंसेवक छात्र दो वर्ष तक के 240 घंटे के श्रमदान व सेवाकार्य छः एक दिवसीय शिविरों तथा एक विशेष दस दिवसीय आवासीय शिविर में भाग लेकर निम्न लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं- (1) समुदाय को समझना। (2) समुदाय के संदर्भ में अपने को आँकना। (3) समुदाय की आवश्यकताओं व समस्याओं को जानना। (4) सामाजिक दायित्व बोध व व्यावहारिक हल ढूँढ़ना। (5) प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण तथा नेतृत्व का गुण। (6) प्राकृतिक आपदाओं को रोकने का सशक्त माध्यम तथा आपातकाल से निपटने की क्षमता। (7) राष्ट्रीय एकता को क्रियात्मक रूप देना। (8) सामाजिक जीवन की क्षमता।

सिद्धांत वाक्य एवं प्रतीक चिह्न– राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्य 'मुझको नहीं तुमको' निस्वार्थ सेवा तथा प्रजातांत्रिक जीवन के सार को व्यक्त करता है। इसका प्रतीक चिह्न उड़ीसा के कोणार्क सूर्यमंदिर के रथचक्र पर आधारित है। सूर्यमंदिर का यह चक्र मुख्यतः गति, सृजन, संरक्षण एवं निर्मुक्ति के आवर्तन को अभिव्यक्त करता है तथा काल और स्थान से पूरे जीवन में गति के महत्त्व को बतलाता है। यह चक्र समाज में परिवर्तन लाने और उसे उन्नत करने के लिए निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयास करने का द्योतक है। यह प्रतीक चिह्न बेज पर उत्कीर्ण है जिसे स्वयंसेवक समाज की सेवा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए लगाते हैं। इसमें दो रंगों का समावेश है जिसमें लाल रंग उत्साह, सक्रियता, स्फूर्ति एवं जीवंतता का तथा गहरा नीला रंग ब्रह्माण्ड की ओर संकेत करता है जिसका रा.से.यो. एक छोटा अंश है। स्वयंसेवक विद्यार्थी मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अपना अंशदान देने को आठों प्रहर तैयार रहते हैं।

सेवा योजना के कार्यक्रम– कार्यक्रम प्रक्रिया के अंग इसके 100 स्वयंसेवक विद्यार्थी होते हैं जो कार्यक्रम प्रभारी अधिकारी के निर्देशन में सामुदायिक सेवा तथा श्रमदान का कार्य परिसर, भिन्न-भिन्न बस्तियों तथा गोद लिए गए गाँव में करते हैं। इसके दो प्रकार के कार्य होते हैं- नियमित तथा विशेष।

नियमित कार्यक्रम विद्यालय-कॉलेज, अध्ययन के बाद या सप्ताह के अंतिम दिवस को परिसर, ग्राम या शहर की बस्तियों एवं गोद लिए गाँव में स्वयंसेवक छात्रों के द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं। वे एक वर्ष में 20 घंटे के अभिनवन कार्यक्रम, 30 घंटे परिसर में श्रमदान कार्य तथा 70 घंटों के सामुदायिक कार्य में कुल 120 घंटे कार्य करते हैं। विद्यार्थी 70 घंटों के सामुदायिक कार्य में संस्थागत कार्य, ग्रामीण-शहरी परियोजनाएँ, उत्सव, प्राकृतिक विपदाओं से बचाव एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के लगभग 50 स्वयंसेवक दो सत्र में एक बार विशेष दस दिवसीय आवासीय शिविर में भाग लेते हैं जो कि किसी समीप की बस्ती या ग्राम में लगाया जाता है। शिविर में रहते हुए वे आर्थिक-सामाजिक सर्वे के आधार पर अनेक परियोजनाओं को मूर्तरूप देते हैं।

एन.एस.एस. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में– यह 1990 से नई शिक्षानीति की सिफारिश के आधार पर देश के सीनियर विद्यालयों (+2 स्तर) में संचालित की जा रहा है। वर्तमान में एन.एस.एस. से देश में 1.5 मिलियन स्वयंसेवक विद्यार्थी जुड़े हुए हैं। यह योजना केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के युवा एवं खेल विभाग द्वारा राष्ट्र में संचालित की जाती है। यह योजना देश के युवा छात्र-छात्राओं से जुड़ी हुई है। इसलिए उनका चरित्र निर्माण एवं बहुआयामी व्यक्तित्व निर्माण इसका मुख्य लक्ष्य है ताकि आज का युवा वर्ग देश का भावी कर्णधार बन सके।

देश की ज्वलंत समस्याओं के प्रति आमजन को जाग्रत करना राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का मुख्य उद्देश्य है। वे समुदाय के सम्पर्क में आकर उनमें प्रजातांत्रिक, वैज्ञानिक तथा देश को विकसित राष्ट्र बनाने की सोच उत्पन्न करने में सहयोग देता है, ताकि अपना देश भी विश्व क्षितीज पर नूतन आयाम स्थापित कर सके।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमथल,
धोरीमन्ना, बाड़मेर (राज.)
मो. 9460853012

Rajasthan Education Department

नोबल पुरस्कार 2021

शिक्षा में अधिक वर्ष अर्थात् अधिक आय

❒ मोहम्मद इमरान खान

अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार 2021 पाने वाले अर्थशास्त्री शिक्षा में अधिक वर्षों का व्यक्ति की आय से सीधा संबंध बताते हैं और न्यूनतम मजदूरी बढ़ने पर रोजगार के अवसर घटने की भ्रांति को दूर करते हैं।

वर्ष 2021 का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार कनाडा के डेविड कार्ड, अमेरिका के जोशुआ एंग्रिस्ट और नीदरलैंड के गुइडो इम्बेंस को दिया गया है। उनके प्राकृतिक प्रयोग (Natural Experiments) सिद्धांत के माध्यम से सामाजिक घटनाओं और विकास को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। यह सिद्धांत व्यक्तिगत रूप में व नीति निर्माताओं के लिए सामूहिक रूप से बेहतर निर्णय लेने में मददगार साबित होगा। समाज में हो रही विभिन्न घटनाओं के कारण व प्रभाव का सटीक आकलन आसान नहीं है। उदाहरण के तौर पर, इस प्रश्न का ठीक से जवाब नहीं दिया जा सकता कि किसी कार्य/निर्णय को करने के बजाय कोई दूसरा कार्य/निर्णय लिया गया होता तो क्या होता? रिसर्च के दौरान शोधकर्ता यादृच्छिक रूप से लिए गए एक समूह के डाटा का अध्ययन कर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। यह किसी दवा के परीक्षण के लिए तो कारगर होता है परंतु सामाजिक मुद्दों पर कारण व प्रभाव शोध के लिए उपयुक्त नहीं है।

इस बार के नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने सामाजिक मुद्दों के सटीक जवाब जानने के लिए प्राकृतिक प्रयोग विधि काम में ली। इसके तहत उपचार समूह और नियंत्रण समूह के डाटा तो लिए जाते हैं परंतु परीक्षण में शामिल होने या नहीं होने की स्वतंत्रता होती है। यद्यपि ऐसी स्थिति में निष्कर्ष तक पहुँचना कठिन हो जाता है। परंतु एंग्रीस्ट और इम्बेंस के फ्रेमवर्क के माध्यम से यह संभव हो पाया और सामाजिक मुद्दों से संबंधित निर्णय के प्रभावों का आकलन किया जा सकता है।

प्राकृतिक प्रयोग (Natural Experiments) विधि का प्रयोग कर युवाओं

के बेहतर भविष्य में पढ़ाई के वर्षों का प्रभाव आंका गया है इसके अनुसार 12 वर्ष शिक्षा लेने वाले युवाओं की आय 11 वर्ष शिक्षा लेने वाले युवाओं से 12% अधिक जबकि 16 वर्ष शिक्षा लेने वाले युवाओं की आय 65% अधिक पाई गई है। यह परीक्षण 1930 के दशक में जन्में अमेरिकी लोगों पर किया गया जिसके तहत 1 वर्ष और अधिक शिक्षा लेने पर औसतन 7% आय में बढ़ोतरी हई। अपने निष्कर्ष की सत्यता को सिद्ध करने के लिए एंग्रिस्ट ने वर्ष के प्रथम क्वार्टर में जन्म लेने वाले लोगों और अंतिम क्वार्टर में जन्म लेने वाले लोगों की आय का अध्ययन किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अंतिम क्वार्टर में जन्म लेने वाले लोगों की आय प्रथम क्वार्टर में जन्म लेने वालों की तुलना में अधिक थी क्योंकि उन्होंने शिक्षा में अधिक समय दिया। प्राकृतिक प्रयोग (Natural Experiments) के अनुसार समाज में प्राकृतिक रूप से यादृच्छिकता मौजूद होती है जो लोगों को नियंत्रण और उपचार समूह में विभाजित करती है तथा कारण प्रभाव संबंधों को जानने का अवसर प्रदान करती है।

इस सिद्धांत का प्रयोग कर न्यूनतम मजदूरी के बढ़ने पर रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने में किया। इस भ्रान्ति को गलत साबित किया गया कि न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने पर रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं। डेविड कार्ड ने न्यूजर्सी और पेंसिलवेनिया के फास्ट फूड रेस्टोरेंट्स में रोजगार और न्यूनतम मजदूरी के डेटा का अध्ययन किया। न्यूजर्सी में रोजगार के अवसर बढ़े हुए पाए गए जबकि 1 अप्रैल 1992 को वहाँ न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि 4.25% से 5.05% की गई थी और पेंसिलवेनिया में अपरिवर्तित रही थी।

इसी के साथ डेविड कार्ड ने विद्यालय में मौजूद संसाधनों और विद्यार्थियों के भविष्य में लेबर मार्केट में सफल होने के संबंध को भी जाना और पाया कि शिक्षा के प्रतिफल उन विद्यालयों में बेहतर मिले जहाँ विद्यार्थियों की तुलना में शिक्षकों का अनुपात बेहतर था।

नोबल पुरस्कार पाने वाले अर्थशास्त्रियों का यह शोध संतुलित सामाजिक विकास हेतु बेहतर निर्णय लेने के लिए एक मजबूत फ्रेमवर्क प्रदान करता है। प्राकृतिक प्रयोग सिद्धांत नीति निर्माताओं को बेहतर भविष्य के लिए सटीक योजना बनाने हेतु पृष्ठभूमि और कारण व प्रभाव को जानने के लिए उपकरण प्रदान करता है। भारत जैसे देश में जहाँ न्यूनतम मजदूरी, गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों के उत्थान हेतु चल रही योजनाएं, न्यूनतम समर्थन मूल्य और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में उपयुक्त शिक्षा नीति लागू करने में इनका उपयोग महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है।

शिक्षक व एपगुरु
ए-355, लक्ष्मीनगर, देवखेड़ा, अलवर-301001
मो. 9785984283

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2021

1. 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के दिशा-निर्देशों के सम्बन्ध में।
2. योगा ओलंपियाड दिशा-निर्देश सत्र 2021-22 के संबंध में।
3. सत्र 2021-22 में ट्रांसपोर्ट वाउचर से लाभान्वित पात्र/चयनित विद्यार्थियों की सूचना शाला दर्पण पोर्टल पर दिनांक 30 अक्टूबर, 2021 तक अद्यतन करने के क्रम में।
4. कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों एवं कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं हेतु ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना-दिशा निर्देश 2021-22
5. 33 जिला मुख्यालय पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के दिशा-निर्देशों के सम्बन्ध में।

1. 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के दिशा-निर्देशों के सम्बन्ध में।

● राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग ● क्रमांक : प. 04 (15)शिक्षा-1/2021 पार्ट जयपुर, दिनांक 22.10.2021 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● विषयः 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के दिशा-निर्देशों के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : विभाग का समसंख्यक पत्र दिनांक 13.09.2021

उपर्युक्त विषयान्तर्गत माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बजट वर्ष 2021-22 की घोषणा संख्या 37 की क्रियान्विति के अनुसरण में 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में उक्त प्रासंगिक पत्र द्वारा पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए संचालन की स्वीकृति प्रदान की गई थी, के अनुसरण में उक्त विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के विस्तृत दिशा-निर्देश संलग्न कर प्रेषित है।

कृपया जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन किया जाना सुनिश्चित करावें।

● संलग्न : यथोपरि

● **(भारतेन्द्र जैन)** शासन उप सचिव-प्रथम

महात्मा गाँधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन हेतु दिशा-निर्देश

1. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन – पूर्व प्राथमिक कक्षाएँ वर्तमान में 33 जिला मुख्यालयों पर संचालित प्रथम चरण के महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) के साथ वर्तमान भवन में संचालित की जाएगी। इस प्रकार से इन विद्यालयों का स्तर पूर्व प्राथमिक से 12वीं तक का होगा। अतिरिक्त कक्षा-कक्षों की आवश्यकता होने पर विद्यालयवार पृथक से भवन निर्माण हेतु प्रस्ताव राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर को प्रेषित किए जाएंगे।

2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें– पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर द्वारा तैयार किया गया है। पाठ्यचर्या संलग्न की जा रही है। पाठ्यपुस्तकें राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल द्वारा उपलब्ध करवाई जाएगी।

आकलन (Assessment):- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में आकलन सतत् और व्यापक मूल्यांकन पद्धति तथा पाठ्यचर्या में नियोजित अनुभवों पर आधारित होगा। आकलन में बच्चों के विकास का प्रेक्षण करना व प्रलेखन अर्थात उनके स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति, दिन-प्रतिदिन के अनुभव कला कार्य तथा अन्य उत्पादों में उनकी भागीदारी व उनका व्यवहार शामिल होगा।

3. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं हेतु विद्यालय समयः– पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम की अवधि प्रतिदिन 4 घण्टे होगी। पूर्व-प्राथमिक कक्षाएँ सप्ताह में 5 दिवस संचालिए की जाएगी। शनिवार के दिन शिक्षकों द्वारा पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम मूल्यांकन करने, अगले सप्ताह के कार्यक्रम की योजना बनाने, शिक्षक अधिगम सामग्री को तैयार करने, अभिभावकों से संपर्क करने,पोर्टफोलियों एवं रिकॉर्ड संधारण का कार्य किया जाएगा।

4. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेशः– पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि 3 वर्ष की होगी। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता के साथ प्रथम वर्ष में 3 वर्ष या 3 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को प्रवेश दिया जाएगा। प्रत्येक खण्ड में विद्यार्थियों की संख्या 25 निर्धारित होगी। आस-पड़ोस में रहने वाले बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी, यदि प्रवेश योग्य बच्चों की संख्या उपलब्ध सीटों से अधिक हो तो प्रवेश का आधार 'पहले आओ-पहले पाओ' या लॉटरी द्वारा होगा। महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों में उपर्युक्त दिशानिर्देशों का सख्ती से पालना की जाएगी।

5. स्टाफ का चयन

A. शिक्षक– शिक्षकों का चयन विभाग में पूर्व में से कार्यरत अध्यापक लेवल-1 में से वॉक-इन-इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा। इस हेतु प्रारंभिक शिक्षा विभाग में अध्यापकों के आरक्षित पदों में से प्रतिविद्यालय दो पदों का आवंटन किया जाएगा।

B. अन्य सहयोगी स्टाफ– इन विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन हेतु प्रति विद्यालय निम्नानुसार सहयोगी स्टाफ की सेवाएं वित्त विभाग के परिपत्र दिनांक 30.04.2018 के अनुसार रहेगी।

S. No.	Services	No. of Services	Approxiamte per school Annual Expenditure (Rs. in Lacs)
1	Care Taker for pre-primary classes (Nursery, L.K.G. & U.K.G.)	2	1.92

2	Peon for primary Classes	1	0.72
3	Cleaning Services	1	0.48
4	Guard	1	0.60

उक्त सेवाएं जिनके लिए विभाग में नियमित भर्ती नहीं की जाती है, के लिए उक्त वर्णितानुसार मानदेय पर स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल के पैटर्न पर सेवा प्रदाता के माध्यम से सेवा आधारित योग्य स्टाफ की सेवाएं प्राप्त की जाएगी।

6. रिकॉर्ड एवं रजिस्टर संधारण:– पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन के लिए सभी आवश्यक रिकॉर्ड तथा रजिस्टर व्यवस्थित रूप से संधारित किए जाएंगे। इन कक्षाओं हेतु पृथक से निम्नांकित रिकॉर्ड एवं रजिस्टर संधारित किया जाएगा।

- प्रवेश रजिस्टर
- स्वास्थ्य रजिस्टर
- प्रगति पंजिका (पोर्टफोलियो)
- शिक्षक दैनन्दिनी
- विविध रिकॉर्ड

इन निर्देशों में समय-समय पर परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन किए जा सकेंगे।

● **(भारतेन्द्र जैन)** शासन उप सचिव शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग

2. योगा ओलंपियाड दिशा–निर्देश सत्र 2021–22 के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-द/विविध/66179/2018-19 दिनांक : 18.10.2021 ● 1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक। 4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा। ● विषय : योगा ओलंपियाड दिशा-निर्देश सत्र 2021-22 के संबंध में। ● प्रसंग : राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर के पत्र क्रमांकः रा.स्कू.शि.प. /जय./मॉडल स्कूल-संचालन/योगा ओलंपियाड-259/4236 दिनांक 01.10.2021 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत संदर्भित पत्र की प्रति संलग्न कर लेख है कि समस्त महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के कक्षा 06 से 12 तक के विद्यार्थी भी योगा ओलंपियाड में सहभागिता करने हेतु पात्र हैं। अतः उक्त आदेशों में वर्णित दिशा-निर्देशों की पालना हेतु आप अपने अधीनस्थ समस्त महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के अधिकारियों/ संस्थाप्रधानों को यह निर्देशित करें कि वे उक्त बिन्दुओं की कार्यवाही सुनिश्चित करावें।

● संलग्न : यथोक्त

● **उप निदेशक** (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

योगा ओलंपियाड दिशा–निर्देश सत्र 2021–22

● राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् ● क्रमांक : रा.स्कू.शि.प./जय/मॉडल स्कूल संचालन/योगा ओलंपियाड-259/4236 दिनांक : 01.10.2021 ● योगा ओलंपियाड दिशा निर्देश : सत्र 2021-22

स्वास्थ्य, कल्याण, मित्रभाव, शांति, आमोद प्रमोद आनन्द और व्यापक सकारात्मक वातावरण एवं आध्यात्मिकता बनाने के लिए योग का महत्त्व है। योग सभी प्रकार की शारीरिक, मानसिक बीमारियों एवं समस्त व्याधियों से निपटने के लिए सशक्त औषधिरहित प्रणाली और एक निवारक प्रभावी उपाय है। योग हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है एवं शारीरिक फिटनेस, मानसिक सतर्कता और भावनात्मक संतुलन के लिए इसे किया जाता है। योग में विभिन्न आसन और मुद्राएँ हमारे पर्यावरण और समृद्ध जैव विविधता के साथ निकट संबंध दर्शाते हैं। योग प्रदर्शन और अभ्यास सभी के मन में आनन्द और आमोद-प्रमोद के साथ एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की लालसा जगाता है।

इसी दृष्टिकोण से योग के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता और समझ पैदा करने, मानवीय मूल्यों को मजबूत करने, स्वस्थ मनोवृत्ति बनाए रखने के लिए योगा ओलंपियाड प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना है।

मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पीएबी, 2021-22 में ओलंपियाड प्रतियोगिता हेतु राशि 10.20 लाख एक मुश्त स्वीकृत किए गए है। इस प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय, जिला स्तर व राज्य स्तर पर किया जाएगा। विभिन्न स्तरों पर करवाई जाने वाली इस प्रतियोगिता हेतु दिशा-निर्देश निम्न प्रकार है-

उद्देश्य–

1. यौगिक पद्धतियों के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करना और बच्चों को प्रेरित करना।
2. विभिन्न आसनों के लाभ और शारीरिक और मानसिक रोगों के उपचार में निवारक उपाय की समझ विकसित करना।
3. सम्पूर्ण स्वास्थ्य और कल्याण के लिए नियमित रूप से आसनों का अभ्यास करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना एवं जीवन में योग को सदैव अपनी दिनचर्या में शामिल करने हेतु प्रेरित करना।
4. मानव मूल्य स्थापित करना।
5. एकाग्रता एवं संतुलन के माध्यम से आध्यात्मिक पहलू को उजागर करना।

सहभागिता– समस्त राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थी योगा ओलंपियाड में सहभागिता कर पाएंगे।

योगा ओलंपियाड नियम व शर्तें :

1. **Grouping (वर्ग):–** योगा ओलंपियाड प्रतियोगिता बालक व बालिका वर्ग के लिए आयोजित की जाएगी, जिसके लिए 2 आयु वर्ग निम्नानुसार है-

a) जूनियर वर्ग (6 to 8th class/under 14 yrs/1st june 2007 below)

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

b) सीनियर वर्ग (9 to 12th class/under 19 yrs/ 1st June 2002 below)

योग प्रतियोगिता निम्न श्रेणियों में आयोजित की जाएगी:–

a) Athletics Asanas (एथलेटिक्स आसन)
b) Pranayam (प्राणायाम)
c) Kriya (क्रिया)
d) Bandh (बंध)

2. Level of organization of Yoga Olympiad (योगा ओलंपियाड के संगठन का स्तर)

- **विद्यालय स्तर** : यह योगा ओलंपियाड का पहला स्तर है जहाँ राजकीय अंग्रेजी माध्यम के स्कूल अपनी प्रविष्टियाँ भेज सकते हैं, जिसमें जूनियर एवं सीनियर वर्ग के दो–दो प्रतियोगी भाग लेंगे।
- **जिला स्तर** : यह योगा ओलंपियाड का दूसरा स्तर है। जहाँ केवल विद्यालय स्तर के विजेता प्रत्येक विद्यालय की चयन सूची के आधार पर भाग लेंगे।
- **राज्य स्तर** : यह योगा ओलंपियाड का तीसरा स्तर है जहाँ जिला स्तर के विजेता प्रत्येक जिले की चयन सूची के आधार पर ही भाग लेंगे।

3. Language (भाषा)– अभिव्यक्ति एवं निर्देशों का माध्यम हिन्दी या अंग्रेजी रहेगा।

4. Assessment for Evaluation (मूल्यांकन के लिए मापदंड)– मूल्यांकन मानदण्डों के आधार पर ज्यूरी द्वारा विभिन्न योग गतिविधियों के व्यावहारिक प्रदर्शन के आधार पर प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया जाएगा। केवल व्यावहारिक योग प्रथाओं के कार्य निष्पादन के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए अंकन पश्चात निर्णायक कम्पाईल शीट के आधार पर ही निर्णय किया जाएगा।

5. Panel of Judge (ज्यूरी)– प्रत्येक स्तर पर एक न्यायाधीश निर्णायकों की टीम गठित होगी, जो आसन, प्राणायाम, क्रिया एवं बंध में विशेषज्ञता रखते हैं। ज्यूरी के सदस्य राज्य के विभिन्न संस्थानों जैसे स्कूलों, योग संस्थानों के शिक्षकों में से लिए जाएंगे जिसमें निर्णायक पैनल में एक मुख्य निर्णायक अधिकारी और दो अधिकारी में एक स्कोरर और एक टाइम कीपर शामिल होंगे।

- निर्णायक पैनल प्रत्येक गतिविधि के लिए दिए गए अंकों को पृथक–पृथक स्कोर पर शीट पर लिखेंगे।
- स्कोरर ही स्वयं सहित निर्णायक पैनल के अंकों को कम्पाइल शीट पर गणना करेगा।
- टाइम कीपर स्टॉप वाच के सहयोग द्वारा समय की गणना करेगा।
- जूनियर और सीनियर स्तर के छात्र एवं छात्राओं की टीमों का अलग से मूल्यांकन किया जाएगा।

6. Judging (निर्णयन)– निर्णायक मापदंड में आसन की शुरूआत, धारण और स्थाई होना, शामिल होगा, तनाव या कम्पन्न की अभिव्यक्ति भी नोट की जाएगी। अंतिम मुद्रा को मुस्कराते हुए व सुखद अभिव्यक्ति के साथ स्वीकार किया जाएगा। निर्णयन अधिकारी द्वारा दिए जाने वाले अंकों का विवरण निम्नानुसार है–

क्र.सं.	आसन के अंकों का विवरण	अंक
1	पैटर्न	3 Point
2	अंतिम मुद्रा	5 Point
3	प्रस्तुति	2 Point
	कुल	10 Point

7. Scoring (अंकन)– एक दल को अधिकतम 100 अंक दिए जाएंगे। अर्थात निर्णायक पैनल की कम्पाईल शीट के आधार पर प्रत्येक वर्ग का 300 अंकों से विद्यालय का अंकन किया जाएगा। इस प्रकार प्रत्येक विद्यालय के चार दलों के आधार पर 1200 अंक निर्धारित होंगे, जिसमें एथलेटिक्स आसन के 60 अंकों में प्रत्येक आसन को 10 अंकों में से आंका जाएगा। जूनियर और सीनियर छात्र–छात्रा वर्ग का अंकन इस प्रकार रहेगा–

वर्ग	आसन	प्राणायाम	क्रिया	बंध	कुल अंक
जूनियर	60 अंक	20 अंक	20 अंक	–	100 अंक
सीनियर	60 अंक	20 अंक	10 अंक	10 अंक	100 अंक

8. Tie Breaker (टाइ ब्रेकर) :

- समान अंक वाले प्रतियोगियों के लिए निर्णायक पैनल द्वारा दिए गए कुल अंक, विजेता का निर्णय करेगा।
- यदि फिर भी बराबरी बनी रहती है तो Optional Asana (ऐच्छिक आसन) में अधिक अंक प्राप्त करने वाले को विजेता घोषित किया जाएगा।
- यदि फिर भी बराबरी बनी रहती है, तो ग्रुप 'ए' में प्राप्त अंक के आधार पर विजेता घोषित होगा।
- यदि फिर भी समान अंक वाले एक से ज्यादा प्रतियोगी है, तो उन्हें संयुक्त विजेता घोषित किया जाएगा।

9. Dress Code (ड्रेस कोड)– आसन करते समय ट्रैक सूट की अनुमति नहीं होगी। योग गतिविधि के समय टी–शर्ट, स्लैक्स, शार्ट्स, स्वीमिंग कॉस्ट्यूम अनिवार्य है।

10. Attempts to perform Yoga (योग प्रदर्शन के अवसर):– अनिवार्य आसन के लिए केवल एक अवसर होगा, जबकि ऐच्छिक आसन, प्राणायाम, क्रिया और बंध के लिए तीन अवसर दिए जाएंगे। तीन अवसरों में से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की गणना की जाएगी। प्रतियोगी द्वारा एक बार चयन करने के बाद कोई आसन नहीं बदला जाएगा।

11. Performance Time of Asanas (आसन प्रदर्शन की अवधि)– यदि आवश्यक हो तो आयोजक आसन के लिए समय सीमा कम कर सकते हैं जैसे–किसी आसन की समय सीमा को 2 मिनट से घटाकर 1 मिनट किया जा सकता है। यदि ऐसा कोई परिवर्तन किया जाता है तो वह सभी प्रतिभागियों पर लागू होगा।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

किसी भी परिस्थिति में अतिरिक्त समय-सीमा नहीं बढ़ाई जाएगी।

12. **Individual Championship (व्यक्तिगत प्रतियोगिता)–** व्यक्तिगत चैम्पियनशिप में विनर को 5 अंक, रनर अप को 3 अंक और सैकंड रनर अप को 2 अंक मिलेंगे और प्रथम राउण्ड आसन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले को योगा ओलम्पियाड चैम्पियनशिप के लिए बेस्ट खिलाड़ी के रूप में चयनित किया जाएगा। जो कि 90 अंकों के आधार पर होगा।

13. **Team Championship (दलीय प्रतियोगिता)–** टीम चैम्पियनशिप में विनर को 10 अंक, रनर अप को 6 अंक और सैकंड रनर अप को 4 अंक मिलेंगे। प्रत्येक वर्ग के विद्यालय में 300 अंकों में से निर्धारण किया जाएगा।

14. **Best of Best Championship (बेस्ट ऑफ बेस्ट चैम्पियनशिप)–** प्रत्येक आयु वर्ग से एक प्रतिभागी ही बेस्ट ऑफ बेस्ट प्रतियोगिता में भाग लेगा और पैनल के निर्देशानुसार निम्न तीन एडवांस आसन करने होंगे। विनर को 5 अंक, रनर अप को 3 अंक, द्वितीय रनर अप को 2 अंक दिए जाएंगे। अर्थात कुल 24 अंकों में से निर्धारण किया जाएगा।

Catergorization of advance Asanas & Scoring (एडवांस आसन का अंकन एवं वर्गीकरण)–

S.No.	Parameter	For example	Points
(a)	Balance factor and flexibility of torso and waist (पंजों और कमर का बल संतुलन एवं लचीलापन)	Standing Vruschik Asana (वृश्चिक आसन)	10
(b)	Asana with only flexibility (without balance) (केवल लचीलेपन के साथ आसन)	Dimbasana (डिम्बासन)	8
(c)	Other asana (अन्य आसन)	Garudasana (गरुड़ासन) Vatyanasana (वत्यानासन)	6

- अधिकतम अंक वाले स्कूल को योगा ओलम्पियाड चैम्पियनशिप स्कूल के खिताब से नवाजा या घोषित किया जाएगा। इसके लिए योगा ओलम्पियाड स्कूल कम्पाईल शीट का उपयोग किया जाएगा। जो कि परिणाम सूची के आधार पर ही तय होगा।

16. **Date of Birth & Eligibility (जन्म तिथि एवं मान्यता)–** जन्म तिथि, पात्रता और प्रोटेस्ट नोट के नियम SGFI के नियमों और मानदण्डों के अनुसार होंगे। कोई भी खिलाड़ी एक ही आयु वर्ग में तीन SGFI से अधिक के लिए भाग नहीं ले सकता।

जूनियर	सीनियर
1st JUne 2007 Below	1st June 2002 Below

17. **Eligibility Entry From (योग्यता प्रवेश फार्म)–** सभी प्रतिभागियों को पात्रता फार्म भरना होगा और इसके साथ गत वर्ष की अंकतालिका और जन्म तिथि प्रमाण-पत्र, आधार कार्ड एवं विद्यालय आईडी कार्ड प्रतिलिपि संलग्न करना अनिवार्य होगा।

18. **Award at the Yoga Olympiad (योग ओलम्पियाड में सम्मान)–** योग्यता और भागीदारी प्रमाण पत्र के साथ मेडल व शील्ड प्रत्येक स्तर पर प्रदान किए जाएंगे।

क्र.सं.	प्रतियोगिता	मेडल		
		गोल्ड	सिल्वर	ब्रॉन्ज
1	दलीय प्रतियोगिता	2	2	2
2	व्यक्तिगत प्रतियोगिता	1	1	1
3	बेस्ट ऑफ बेस्ट प्रतियोगिता	1	1	1
	कुल मेडल	4	4	4
क्र.सं.	प्रतियोगिता	ट्राफी		
		बड़ी	मध्यम	छोटी
1	दलीय प्रतियोगिता	1	1	1
2	व्यक्तिगत प्रतियोगिता	1	1	1
3	बेस्ट ऑफ बेस्ट प्रतियोगिता	1	1	1
	कुल ट्राफी	3	3	3

इसी प्रकार उपर्युक्त मेडल एवं ट्राफी प्रत्येक जूनियर एवं सीनियर वर्ग छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक रहेगी। इसके अतिरिक्त एक मुख्य ट्रॉफी जो योग ओलम्पियाड चैम्पियनशिप स्कूल शील्ड सभी वर्गों में अधिकतम अंक पाने वाले विद्यालय को 'स्पेशल शील्ड' से नवाजा जाएगा एवं एक विशेष शील्ड व्यक्तिगत चैम्पियनशिप में निकले अधिकतम अंक पाने वाले 'बेस्ट खिलाड़ी' को खिताब से नवाजा जाएगा।

19. **March Past (मार्च पास्ट)–** मार्च पास्ट में सभी को भाग लेना अनिवार्य है। सभी प्रतिभागी टीम अपनी स्कूल यूनिफॉर्म में मार्च पास्ट करेंगे।

20. **Participation Fees (सहभागिता शुल्क)–** भाग लेने वाला स्कूल प्रत्येक श्रेणी के लिए प्रविष्टि/प्रवेश शुल्क, भोजन और अन्य खर्चों के लिए प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के अनुसार भुगतान करेगा। रजिस्ट्रेशन शुल्क प्रविष्टि के साथ निर्धारित तिथि से पूर्व ही आयोजक के पास भिजवाया जाएगा।

21. **Composition of a Team (दल के कुल सदस्य)–** प्रत्येक वर्ग छात्र-छात्रा की एक टीम में अधिकतम 02 प्रतिभागी अनिवार्य रूप से शामिल होंगे। टीम में एक प्रतिभागी होने पर प्रतियोगिता के लिए पात्र नहीं माना जाएगा एवं प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पाएगा। अर्थात एक विद्यालय से प्रत्येक दल के कुल 02 संभागी एवं सभी वर्गों से कुल 08 संभागी भाग लेने के लिए पात्र होंगे।

22. **Evaluation for Juniors (जूनियर्स के लिए मूल्यांकन)–** जूनियर की प्रतियोगिता में कुल 100 अंक होंगे। आसन के लिए 60 अंक होंगे, 20 अंक प्राणायाम के लिए और क्रिया के लिए 20 अंक,

Rajasthan Education Portal सत्यमेव जयते

सूर्य नमस्कार वैकल्पिक होगा। सभी प्रतियोगियों द्वारा मंत्र जाप के साथ पूर्ण किया जाएगा। मूल्यांकन का विवरण नीचे दिया गया है–

एथलेटिक्स आसन का मूल्यांकन– कुल 06 आसन में से दोनों प्रतिभागियों को 03–03 आसन करने होंगे जिसमें दो आसन ग्रुप–ए से दो आसन व ग्रुप–बी में से जिनमें दो आसन ज्यूरी निश्चित करेगी व ग्रुप–सी में से दो ऐच्छिक आसन स्वयं चयन करेगा। प्रत्येक आसन का मूल्यांकन पैटर्न, अंतिम मुद्रा एवं अनुग्रह प्रस्तुति के आधार पर किया जाएगा–

ग्रुप	आसन	अवधि
'A' (Standing)	1 ताड़ासन/वृक्षासन	1 Min.
	2 त्रिकोणासन/गरुड़ासन	1 Min.
'B' (Sitting)	3 पश्चिमोत्तासन/गोमुखासन	1 Min.
	4 अर्धमत्सयेन्द्रासन/सुप्त वज्रासन	1 Min.
'C' (Prone/Spine) इस ग्रुप में से दो आसन प्रतिभागी द्वारा स्वयं चयन किए जाएंगे।	5 धनुरासन/चक्रासन	1 Min.
	भुजंगासन/हलासन	1 Min.
	योगमुद्रासन/बंध पदमासन	1 Min.
	शलभासन/मकरासन	1 Min.
	6 सेतुबंधासन/मत्स्यासन	1 Min.
	पवन मुक्तासन	1 Min.

प्राणायाम का मूल्यांकन– नीचे दिए गए 3 प्राणायाम में से कुल 2 प्राणायाम को एक ही प्रतिभागी द्वारा किया जाएगा। प्रतियोगिता से ठीक पहले एक प्राणायाम की घोषणा ज्यूरी द्वारा की जाएगी, जबकि शेष एक प्राणायाम प्रतिभागी की पसंद के अनुसार वैकल्पिक होगा। भ्रामरी अनुलोम विलोम, शीतकारी का प्रदर्शन निम्नानुसार मापदण्ड पर किया जाएगा–

1. अनुलोम विलोम, 2. शीतकारी, 3. भ्रामरी

प्राणायाम के मूल्यांकन मानदंड

प्राणायाम का प्रकार	मुद्रा	श्वास क्रिया	प्रस्तुति	योग
	03 अंक	05 अंक	02 अंक	10 अंक
1				
2				
			कुल (20 अंक)	

उपर्युक्त मानदंड में श्वास क्रिया के 05 अंक निम्न श्वास अवधि मानदंड तालिका के अनुसार देय होंगे–

श्वास अवधि मानदंड तालिका

S. No.	Duration	Points
a)	1-20 Sec.	1 Point
c)	20-40 Sec.	2 Point
e)	40-60 Sec.	3 Point
g)	60-80 Sec.	4 Point
i)	80-100 Sec.	5 Point

क्रिया का मूल्यांकन– कुल 2 क्रियाओं को नीचे दिए गए प्राणायाम करने वाले प्रतिभागी को छोड़कर दल के अन्य प्रतिभागी द्वारा किया जाएगा। 1. कपालभाती, 2. अग्निसार

तालिका : 3 क्रिया के मूल्यांकन मानदंड

क्रिया का नाम	मुद्रा	स्ट्रोक, स्ट्रेंथ एवं एजिलिटी	प्रस्तुति	योग
	03 अंक	05 अंक	02 अंक	10 अंक
1. कपालभाती				
2. अग्निसार				
			कुल (20 अंक)	

23. Evaluation for Seniors (सीनियर्स के लिए मूल्यांकन) : इसमें कुल 100 अंक होंगे, जिसमें 60 अंक आसन के, प्राणायाम के 20 अंक और क्रिया के 10 अंक तथा 10 अंक बंध के लिए होंगे। सूर्य नमस्कार वैकल्पिक होगा एवं सभी प्रतियोगियों द्वारा मंत्र जाप के साथ सम्पन्न किया जाएगा। मूल्यांकन का विवरण नीचे दिया गया है।

एथलेटिक्स आसन का मूल्यांकन– कुल 6 आसन नीचे दिए गए ग्रुप्स से दल के दोनों प्रतिभागियों के द्वारा जारी किया जाएगा। 4 प्रतिभागी प्रतियोगिता से ठीक पहले ज्यूरी द्वारा एक–एक आसन की घोषणा की जाएगी जबकि 02 ऐच्छिक आसन द्वारा चयन के अनुसार वैकल्पिक रहेगा। प्रत्येक आसन का मूल्यांकन विनयासा (पैटर्न) अंतिम मुद्रा और अनुग्रह व प्रस्तुति के आधार पर किया जाएगा–

ग्रुप	आसन	अवधि
'A' (Standing)	1 ताड़ासन/त्रिकोणासन	1 Min.
	2 वृक्षासन/हस्तोतानासन	1 Min.
'B' (Sitting)	3 कुक्कुटासन/धनुरासन	1 Min.
	4 शशंकासन/बकरासन	1 Min.
'C' (Prone/Spine) इस ग्रुप में से दो आसन प्रतिभागी द्वारा स्वयं चयन किए जाएंगे।	5 सर्वांगासन/शीर्षासन	1 Min.
	मयूरासन/कर्ण पीड़ासन	1 Min.
	शलभासन/नौकासन	1 Min.
	6 गर्भासन/पूर्ण चक्रासन	1 Min.
	तुलासन	1 Min.

प्राणायाम का मूल्यांकन – कुल 2 प्राणायाम को नीचे दिए गए 3 प्राणायाम में से प्रतिभागियों द्वारा किया जाएगा। प्रतियोगिता से ठीक पहले एक प्राणायाम की घोषणा ज्यूरी द्वारा की जाएगी, जबकि एक प्राणायाम प्रतिभागी की पसंद के अनुसार वैकल्पिक होगा। भस्त्रिका अनुलोम, विलोम, शीतली का प्रदर्शन निम्नानुसार मापदण्ड पर किया जाएगा।

1. अनुलोम–विलोम, 2. शीतली, 3. भस्त्रिका।

प्राणायाम के मूल्यांकन मानदंड

प्राणायाम का नाम	मुद्रा	श्वांस क्रिया	प्रस्तुति	योग
	03 अंक	05 अंक	02 अंक	10 अंक

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

1				
2				
				कुल (20 अंक)

उपरोक्त मानदंड में श्वांस क्रिया के 05 अंक निम्न श्वांस अवधि मानदण्ड तालिका के अनुसार देय होंगे–

श्वांस अवधि मानदंड तालिका

S. No.	Duration	Points
a)	1-20 Sec.	1 Point
c)	20-40 Sec.	2 Point
e)	40-60 Sec.	3 Point
g)	60-80 Sec.	4 Point
i)	80-100 Sec.	5 Point

क्रिया का मूल्यांकन– अग्निसार क्रिया को प्राणायाम करने वाले प्रतिभागी को छोड़कर दल के अन्य प्रतिभागी द्वारा किया जाएगा, जिसका मानदण्ड इस प्रकार रहेगा–

क्रिया के मूल्यांकन मानदंड

क्रिया का नाम	मुद्रा 03 अंक	स्ट्रोक, स्ट्रेंथ एवं एजिलिटी 05 अंक	प्रस्तुति 02 अंक	योग 10 अंक
अग्निसार क्रिया				
				कुल (10 अंक)

बंध का मूल्यांकन– उड्यान बंध नीचे दिए गए मानदंड अनुसार दल के किसी भी प्रतिभागी द्वारा किया जाएगा।

बंध के मूल्यांकन मानदंड

बंध का नाम	आमाशय को घुमाने व रोकने की अवधि 03 अंक	प्रस्तुति 05 अंक	श्वास अंदर व बाहर लेन की कला 02 अंक	योग 10 अंक
उड्यिान बंध				
				कुल (10 अंक)

उपर्युक्त में आमाशय रोकने की अवधि के 03 अंक का विवरण श्वांस मानदंड तालिका के अनुसार लिया जा सकता है।

योगा ओलंपियाड प्रतियोगिता हेतु व्यय विवरण : 2021–22

क्र. सं.	प्रतियोगिता स्तर	विवरण	व्यय हेत राशि रुपये में	वि.वि.	समय सीमा
1.	विद्यालय स्तर	–	–		अक्टूबर 2021
2.	जिला स्तर	आयोजक स्थल का साज सज्जा, कुर्सी-टेबल, पुरस्कार एवं विविध खर्च हेतु	33x20000= 660000/-		नवम्बर 2021
3.	राज्य स्तर	(अ) आयोज स्थल का साज-सज्जा, कुर्सी-टेबल, पुरस्कार, प्रमाण पत्र एवं विविध खर्च हेतु (ब) भोजन, नाश्ता एवं आवास (स) किराया (केवल प्रतियोगियों के लिए) (द) अन्य विविध व्यय कुल योग-	33x200x10= 66000/- 33x400x10= 132000/- 33x500x8= 132000/- 5000/- 335000/-		दिसम्बर 2021
4.	राज्य स्तर पर रिकॉर्ड संधारण	–	25000/-		
		कुल योग-	1020000/-		

लेखा सम्बन्धी बिन्दुः–

1. उक्त राशि का व्यय जी.एफ.एंड ए.आर. के नियमानुसार कर उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जावे।
2. जिस मद के लिए राशि उपलब्ध कराई जा रही है, व्यय उसी मद में किया जावे।
3. राशि का व्यय योजना के दिशा-निर्देश, एम.ओ.ई. की गाइडलाइन एवं राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013 की पूर्व पालना करते हुए विहित प्रक्रियानुसार किया जाना सुनिश्चित किया जावे।
4. उक्त राशि का व्यय वार्षिक कार्य योजना वर्ष 2021-22 की पीएबी में स्वीकृत अनुसार मद 77.11 से किया जाएगा।

● **(डॉ. भंवर लाल)** राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त

3. सत्र 2021–22 में ट्रांसपोर्ट वाउचर से लाभान्वित पात्र/ चयनित विद्यार्थियों की सूचना शाला दर्पण पोर्टल पर दिनांक 30 अक्टूबर, 2021 तक अद्यतन करने के क्रम में।

● राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् ● क्रमांक : रास्कूलशिप/जय/वै. एवं औ. शि./30C/2021-22/4121 दिनांक : 29.09.2021 ● मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजन समन्वयक, समग्र शिक्षा, समस्त जिले। ● अति. जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा, समस्त जिले। ● विषयः सत्र 2021-22 में ट्रांसपोर्ट वाउचर से लाभान्वित पात्र/ चयनित विद्यार्थियों की सूचना शाला दर्पण पोर्टल पर दिनांक 30 अक्टूबर, 2021 तक अद्यतन करने के क्रम में। ● प्रसंग : परिषद से जारी ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना दिशा-निर्देश क्रमांक 3544 दिनांक 15.09.2021।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समग्र शिक्षा की वार्षिक कार्य योजना एवं बजट सत्र 2021-22 में राज्य सरकार के प्रस्तावानुसार बालक-बालिकाओं को विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रस्तावित की गयी ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना को स्वीकार

शेष भाग पृष्ठ 31 पर....

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

राजस्थान के प्रारंभिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों/अनाथ बच्चों हेतु संचालित आवासीय विद्यालयों/विशेष प्रशिक्षण शिविरों एवं शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों के लिए कोविड-19 के कारण कक्षा शिक्षण प्रारंभ होने पर शेष अवधि के लिए विभाग द्वारा वर्ष : 2021-22 का शिविरा पंचांग प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षा विभाग के नियंत्रणाधीन संचालित विद्यालयों में शेष सत्र का आयोज्य विभिन्न शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक कार्यक्रमों/क्रियाकलापों/गतिविधियों के अनुरूप तैयार किया गया है। उनकी अनुशंषा पर निदेशक, प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की स्वीकृति के बाद ही संस्थाप्रधान द्वारा परिवर्तन किया जा सकेगा।

सामान्य निर्देश : 1. शिक्षण सत्र : 2021-2022 दिनांक 07 जून, 2021 से आरम्भ है। 2. शीतकालीन अवकाश 25 दिसम्बर, 2021 से 31 दिसम्बर, 2021 तक रहेगा। 3. विद्यार्थियों हेतु ग्रीष्मावकाश 17 मई, 2022 से 30 जून, 2022 तक रहेगा। 4. वार्षिक परीक्षा/बोर्ड परीक्षा में अंतिम परीक्षा होने के उपरान्त विद्यार्थियों को आगामी कक्षा में अस्थाई प्रवेश दिया जाए। 5. आगामी सत्र : 2022-23 हेतु दिनांक : 24 से 30 जून, 2022 की अवधि में प्रवेशोत्सव के द्वितीय चरण का आयोजन होगा। इस अवधि में संस्थाप्रधान एवं शिक्षकगण हाउस होल्ड सर्वे के आधार पर अब तक प्रवेश से वंचित/हार्ड कोर समूह के बच्चों का प्रवेश विद्यालय/आँगनबाड़ी में करवाए जाने हेतु विशिष्ट कार्य योजना के तहत नामांकन वृद्धि अभियान संचालित करेंगे। संस्थाप्रधान द्वारा समस्त स्टाफ से नवीन समय विभाग चक्र के अनुरूप सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र के लिए कक्षा शिक्षण हेतु विषय योजना का निर्माण करवाया जाकर योजना का परिवीक्षण किया जाएगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों को टी.सी./नव प्रवेशित विद्यार्थियों का एस.आर. रजिस्टर में पंजीयन सम्बन्धी कार्यों का समुचित निष्पादन किया जाएगा। 6. केन्द्र सरकार द्वारा समस्त राष्ट्र के लिए रेडियो/दूरदर्शन/समाचार पत्रों में घोषित अवकाश विद्यालयों में भी मान्य होंगे। 7. यदि किसी कारणवश रेडियो/दूरदर्शन/लिखित राज्य सरकार के आदेश द्वारा राज्य में कोई सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाए, तो वह भी विद्यालयों में मान्य होगा। 8. यदि किसी क्षेत्र विशेष अथवा वर्ग विशेष/कारण विशेष को आधार बनाकर या किसी विशेष दिन का सेक्शनल/रीजनल अवकाश/स्थानीय अवकाश राज्य सरकार द्वारा घोषित किया जाए तो वह अवकाश उसी क्षेत्र विशेष अथवा वर्ग विशेष/कारण विशेष के विद्यालयों पर ही लागू होगा। अन्य क्षेत्र के विद्यालयों पर उक्त अवकाश लागू नहीं रहेंगे। 9. शिविरा पंचांग एवं राजस्थान सरकार के पंचांग में उल्लेखित समान अवकाश की तिथि में कोई विसंगति हो तो ऐसी स्थिति में राजस्थान सरकार के पंचांग की तिथि को सही मानते हुए इस पंचांग में वैसा ही संशोधन माना जाए। 10. यदि कोविड गाइडलाइन के अनुरूप अनुमत होती है तो बाल सभाओं में वृहद और सामुदायिक बाल सभाओं में बाल संरक्षण के तहत बाल अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाए तथा बाल विवाह के दुष्परिणाम व बाल विवाह निषेध अधिनियम की जानकारी दी जाए। इसी प्रकार पीटीएम व एसडीएमसी की बैठकों में भी जन समुदाय के साथ उक्त बाबत चर्चा की जाए। 11. यदि कोविड गाइडलाइन के अनुरूप अनुमत होती है तो, बाल-सभाओं/ पीटीएम/एसएमसी/ एसडीएमसी की बैठकों में 'तम्बाकू निषेध क्षेत्र' तम्बाकू मुक्त विद्यालय की गाइडलाइन तथा COTPA ACT 2003 की जानकारी दी जाए ताकि विद्यालय व उसके आसपास का क्षेत्र तम्बाकू मुक्त रह सके। 12. प्रत्येक सोमवार को कक्षा 1 से 5 तक के छात्र-छात्राओं को आयरन की WIFS पिंक गोली तथा कक्षा 6 से 12 के छात्र-छात्राओं को आयरन फोलिक एसिड की WIFS नीली गोली मध्याह्न भोजन उपरान्त दी जाए।

प्रवेश : 1. कक्षा-1 में प्रवेश के समय राज्य सरकार द्वारा संशोधित प्रावधानानुसार विद्यार्थियों की आयु 5 वर्ष से अधिक होनी निर्धारित की गई है। 2. राज्य सरकार प्रवेश प्रक्रिया हेतु कोई निश्चित तिथि का निर्धारण कर सकती है। फिर भी आर.टी.ई. अधिनियम-2009 के अनुसार बालक-बालिकाओं का विद्यालय में प्रवेश वर्ष पर्यन्त हो सकेगा। 3. राज्य कर्मचारी/माता-पिता/अभिभावक के स्थान परिवर्तन की स्थिति में स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र के आधार पर विद्यार्थी को मध्य सत्र में प्रवेश दिया जा सकेगा। 4. यदि परिस्थितिवश बोर्ड द्वारा रोके गए परीक्षा परिणाम विलम्ब से घोषित किए जाते हैं, तो विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम की घोषणा के सात दिवस के भीतर प्रवेश दिया जाए। प्रवेश के समय ही विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करवाना सुनिश्चित किया जाए। 5. हाउस हॉल्ड सर्वे में आउट ऑफ स्कूल (OoSC) के रूप में चिह्नित बालक-बालिकाओं की मैनस्ट्रीमिंग हेतु अनामांकित बालक-बालिकाओं के माता-पिता /अभिभावकों से सम्पर्क कर उनका आयु अनुरूप कक्षा में प्रवेश कराना, उनके विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता का आकलन करना एवं आवश्यकतानुसार संघनित पाठ्यक्रम के माध्यम से विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था करना सुनिश्चित किया जाए। 6. ड्रॉपआउट एवं अनामांकित विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को उनकी आयु के अनुरूप कक्षा में नामांकन पश्चात, विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं का फंक्शनल असेसमेंट करवाया जाकर, पात्र बच्चों को समग्र शिक्षा अभियान के अन्तर्गत निःशुल्क अंग-उपकरण उपलब्ध कराए जाएंगे एवं होमबेस्ड एज्यूकेशन से जोड़े गए बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप कक्षा में प्रवेश सुनिश्चित किया जाएगा। 7. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय एवं मेवात बालिका आवासीय/ वैकल्पिक शिक्षा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत संचालित आवासीय विद्यालयों में अनामांकित एवं ड्रॉपआउट बालिकाओं को प्रवेश दिलवाया जाएगा। पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों (PEEO's) की बैठक में चर्चा कर उनके सहयोग से परिक्षेत्र की पात्र बालिकाओं का उक्त विद्यालयों में प्रवेश करवाया जाए। 8. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय हेतु राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् कार्यालय के दिशा-निर्देशों के अनुरूप विद्यालय की कुल सीटों की 5 प्रतिशत सीटों पर विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को प्रवेशित किए जाने हेतु विशिष्ट प्रयास किए जाए।

प्रार्थना सभा : प्रार्थना सभा कार्यक्रम हेतु 25 मिनट का समय निर्धारित है, जिसमें की जाने वाली गतिविधियाँ- राष्ट्रगीत, प्रार्थना, योगाभ्यास, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, समाचार वाचन, प्रतिज्ञा, राष्ट्रगान आदि हैं। प्रत्येक माह के प्रथम सोमवार को प्रार्थना सभा में समस्त कार्मिक एवं विद्यार्थी तम्बाकू उपयोग नहीं करने की शपथ लेंगे।

नोट : प्रार्थना सभा वर्तमान में कोविड-19 गाइडलाइन के तहत स्थगित है। स्थगित गतिविधियों का संचालन कोविड-19 की गाइडलाइन में अनुमति प्राप्त होने पर पृथक से निर्देश जारी किए जाने पर ही किया जाए।

विद्यालय प्रबंधन : विद्यालय की व्यवस्था एवं प्रबंधन, विद्यालय प्रबंधन समिति/विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SMC/SDMC) द्वारा किया जाएगा। विद्यालय के सुचारू संचालन के लिए समग्र शिक्षा अभियान द्वारा निम्न सुविधाएँ प्रदान की जाएगी- 1. राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में सामान्य शैक्षिक, सह-शैक्षिक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं पुराने उपकरणों के प्रतिस्थापन तथा विद्यालय स्वच्छता एक्शन प्लान हेतु कम्पोजिट स्कूल ग्रान्ट दिए जाने का प्रावधान है। इस सम्बन्ध में राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के कम्पोजिट स्कूल ग्रांट दिशा-निर्देश सत्र : 2020-21 हेतु जारी पत्रांक: रास्कूशिपा/जय/वै.शि./CSG दिशा-निर्देश/2020-21/13763 दिनांक : 17.08.2020 के अनुसार छात्र संख्या के आधार पर किए गए वित्तीय प्रावधानों के अनुसार इस राशि में से 10 प्रतिशत राशि स्वच्छता एक्शन प्लान हेतु निर्धारित की गई है। उपर्युक्त आदेश के तहत शौचालय/मूत्रालयों की साफ-सफाई, पेयजल सुविधा के रख-रखाव तथा मध्याह्न भोजन से पूर्व साबुन से हाथ धोने की व्यवस्था एवं स्वच्छता हेतु स्वच्छता अनुदान राशि का उपयोग किया जाए। 2. प्रत्येक विद्यार्थी की 'शाला स्वास्थ्य कार्यक्रम' के अन्तर्गत स्वास्थ्य जाँच की जाए तथा रेकॉर्ड संधारित किया जाए।

कालांशवार समय विभाजन : प्रतिदिन 8 कालांश में से ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन विद्यालय संचालन समयानुरूप अग्रांकित विवरणानुसार कालांशवार समय विभाजन चक्र रहेगा। प्रार्थना सभा तथा मध्यान्तर, प्रत्येक हेतु 25 मिनट का समय निर्धारित है।

समय सारिणी : एक पारी विद्यालयों हेतु समय सारिणी निम्नानुसार होगी :

क्र. सं.	विवरण	ग्रीष्मकाल में विद्यालय संचालन हेतु कालांश विभाजन	शीतकाल में विद्यालय संचालन हेतु कालांश विभाजन
1	समयावधि	01 अप्रैल से 30 सितम्बर	01 अक्टूबर से 31 मार्च
2	विद्यालय समय	07:30 बजे से 01:00 बजे तक (कुल 5:30 घंटे)	10:00 बजे से 4:00 बजे तक (कुल 6:00 घंटे)
3	प्रार्थना सभा एवं योगाभ्यास	07:30 बजे से 07:55 बजे तक (25 मिनट)	10:00 बजे से 10:25 बजे तक (25 मिनट)
4	प्रथम कालांश	07:55 बजे से 08:30 बजे तक (35 मिनट)	10:25 बजे से 11:05 बजे तक (40 मिनट)
5	द्वितीय कालांश	08:30 बजे से 09:05 बजे तक (35 मिनट)	11:05 बजे से 11:45 बजे तक (40 मिनट)
6	तृतीय कालांश	09:05 बजे से 09:40 बजे तक (35 मिनट)	11:45 बजे से 12:25 बजे तक (40 मिनट)
7	चतुर्थ कालांश	09:40 बजे से 10:15 बजे तक (35 मिनट)	12:25 बजे से 01:05 बजे तक (40 मिनट)
8	मध्यान्तर	10:15 बजे से 10:40 बजे तक (25 मिनट)	01:05 बजे से 01:30 बजे तक (25 मिनट)
9	पंचम कालांश	10:40 बजे से 11:15 बजे तक (35 मिनट)	01:30 बजे से 02:10 बजे तक (40 मिनट)
10	षष्ठम कालांश	11:15 बजे से 11:50 बजे तक (35 मिनट)	02:10 बजे से 02:50 बजे तक (40 मिनट)
11	सप्तम कालांश	11:50 बजे से 12:25 बजे तक (35 मिनट)	02:50 बजे से 03:25 बजे तक (35 मिनट)
12	अष्टम कालांश	12:25 बजे से 01:00 बजे तक (35 मिनट)	03:25 बजे से 04:00 बजे तक (35 मिनट)

नोट : 1. शैक्षिक गुणवत्ता एवं मनोविज्ञान के मद्देनजर कालांशों में विषय आवंटन काठिन्य स्तर के आधार पर इस प्रकार किया जाए कि अपेक्षाकृत कठिन विषय के बाद सरल विषय का कालांश हो। यथासंभव मुख्य विषयों का शिक्षण प्रथम छह कालांश में किया जाए। जहाँ तक संभव हो, समस्त विद्यालय एक पारी में चलाए जाएंगे। जो विद्यालय वर्तमान में दो पारी में चल रहे हैं तथा विद्यालय की परिस्थितिवश आगामी सत्र में भी दो पारी/आंशिक दो पारी में संचालन आवश्यक है, इस सम्बन्ध में शासन-निदेशालय द्वारा यदि पृथक से निर्देश जारी किया जाता है तो वह प्रभावी होगा।

शिविरा पञ्चाङ्ग 2021-22

नवम्बर-2021

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

नवम्बर 2021 ● कार्य दिवस-19, रविवार-04, अवकाश-07, उत्सव-04 ● 29 अक्टूबर से 07 नवम्बर-मध्यावधि अवकाश। 04 नवम्बर-दीपावली (अवकाश)। 05 नवम्बर-गोवर्धन पूजा (अवकाश)। 06 नवम्बर-भैया दूज (अवकाश)। 09 नवम्बर-कालिदास जयन्ती। 11 नवम्बर-राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव)। 12 नवम्बर-एन.ए.एस. का आयोजन। 14 नवम्बर-बाल दिवस (पं. जवाहर लाल नेहरु जयन्ती) (उत्सव)। 17 नवम्बर-एन.एम.एम.एस. 2020-21 (RSCERT)। 19 नवम्बर-गुरु नानक जयन्ती (अवकाश-उत्सव) एवं राष्ट्रीय एकीकरण दिवस (श्रीमती इन्दिरा गाँधी जयन्ती)-उत्सव। 19 से 25 नवम्बर-कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। 23 से 25 नवम्बर-जिला स्तरीय विज्ञान मेला (तीन दिवसीय) (RSCERT)। 26 नवम्बर-संविधान दिवस (उत्सव)। 26-27 नवम्बर-रोल प्ले एवं लोक नृत्य राज्य स्तरीय (दो दिवसीय) (RSCERT)। 29-30 नवम्बर-जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन (कोरोना गाइडलाइन के अनुसार)। नोट-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं यथा-(अ) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, (ब) राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, (स) राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5) ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

दिसम्बर-2021

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

दिसम्बर 2021 ● कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-06, उत्सव-02 ● 01 दिसम्बर-विश्व एकता दिवस (उत्सव)। 10 दिसम्बर-मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। दिसम्बर माह के दूसरे व तीसरे सप्ताह में-अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन। 25 दिसम्बर-क्रिसमस डे (अवकाश)। 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर-शीतकालीन अवकाश (विभाग के समस्त आहरण-वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान हेतु माह दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही सुनिश्चित करना)। नोट-जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। ● माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5) ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

जनवरी-2022

रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

जनवरी 2022 ● कार्य दिवस-26, रविवार-05, अवकाश-00, उत्सव-05 ● 09 जनवरी-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। 08 जनवरी-PTM-II का आयोजन। 08 से 10 जनवरी-राज्य स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (तीन दिवसीय) (RSCERT)। 11 से 14 जनवरी-राज्य स्तरीय विज्ञान मेला (चार दिवसीय)। 12 जनवरी-स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), ''कॅरियर डे''। 14 जनवरी-मकर सक्रान्ति (उत्सव)। 21-22 जनवरी-राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन (कोरोना गाइडलाइन के अनुसार)। 23 जनवरी-सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। 26 जनवरी-गणतंत्र दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य)। 30 जनवरी-शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन) (महात्मा गाँधी पुण्य तिथि)। नोट-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। ● कोविड-19 की परिस्थितियाँ अनुकूल रहने की स्थिति में माह जनवरी-फरवरी-2022 में विद्यालयों में वार्षिक समारोह के साथ एल्युमिनाई मीट (सखा-संगम) का आयोजन किया जाएगा। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

फरवरी-2022

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	
बुध	2	9	16	23	
गुरु	3	10	17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

फरवरी 2022 ● कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-00, उत्सव-02 ● 05 फरवरी-बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। 10 फरवरी-कृमि मुक्ति दिवस-समस्त विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। 13 फरवरी-एन.एम.एम.एस. 2021-22 (RSCERT) (रविवार)। 14 फरवरी-मॉप अप दिवस-राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (10 फरवरी-2020) को वंचित रहे विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। 15 से 18 फरवरी-तृतीय परख का आयोजन। फरवरी के तृतीय सप्ताह में-सत्रान्त की संस्था प्रधान वाक्पीठ (प्राचि/उप्राचि/माचि/उमाचि) का आयोजन (17 से 22 फरवरी की अवधि में)। 26 फरवरी-स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव)। 28 फरवरी-अंतरराष्ट्रीय विज्ञान दिवस (RSCERT)। नोट-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● कोविड-19 की परिस्थितियाँ अनुकूल रहने की स्थिति में माह जनवरी-फरवरी-2022 में विद्यालयों में वार्षिक समारोह के साथ एल्युमिनाई मीट (सखा-संगम) का आयोजन किया जाएगा। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

मार्च 2022 ● कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-03, उत्सव-03 ● 01 मार्च-महा शिवरात्रि (अवकाश-उत्सव)। 15 मार्च-विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)। 17 मार्च-होलिका दहन (अवकाश)। 18 मार्च-धुलण्डी (अवकाश)। 30 मार्च-राजस्थान दिवस (उत्सव)। मार्च के अन्तिम सप्ताह/अप्रेल माह में प्रथम सप्ताह-वार्षिक परीक्षा का आयोजन। नोट- (1) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं का आयोजन। (2) बोर्ड परीक्षा आयोजन के कारण सामुदायिक बाल सभा आयोजन स्थगित रखा गया है। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

मार्च-2022

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

अप्रेल 2022 ● कार्य दिवस-23, रविवार-04, अवकाश-03, उत्सव-03 ● 01 अप्रेल-विद्यालय समय परिवर्तन-1. एक पारी विद्यालय-प्रात: 07:30 से दोपहर 01:00 बजे तक। 2. दो पारी विद्यालय-प्रात: 07:00 से सायं 06:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:30 घंटे)। 02 अप्रेल-चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव)। मार्च के अन्तिम सप्ताह/अप्रेल माह में प्रथम सप्ताह-वार्षिक परीक्षा का आयोजन। 10 अप्रेल-रामनवमी (अवकाश-उत्सव)। 14 अप्रेल-महावीर जयन्ती/डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती-ज्ञान दिवस (अवकाश-उत्सव), अहिंसा दिवस (अवकाश-उत्सव)। 15 अप्रेल-गुड-फ्राइडे (अवकाश)। 27 अप्रेल-विद्यालय में आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रक्रिया का आरम्भ एवं नामांकन हेतु विद्यार्थियों के चिह्नीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ। 30 अप्रेल- 1. वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा परीक्षा परिणामों की प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को समीक्षा हेतु प्रेषित करना। 2. सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। 3. संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर सत्रपर्यन्त हुए कार्यों की समीक्षा करना एवं आगामी सत्र की विद्यालय योजना हेतु विचार-विमर्श कर निर्णय लेना तथा योजना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना। अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM-IV) एवं SDMC/SMC की साधारण सभा का संयुक्त रूप से आयोजन एवं करणीय कार्यों के संबंध में प्रस्ताव पारित करना। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

अप्रेल-2022

रवि		3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

मई 2022 ● कार्य दिवस-12, रविवार-05, अवकाश-14, उत्सव-01 ● 01 मई-नवीन सत्र : 2022-23 प्रारम्भ (परीक्षा परिणाम के आधार पर विद्यार्थियों का चिह्नीकरण कर उपचारात्मक शिक्षण प्रारम्भ)। 01 से 16 मई-प्रवेशोत्सव-प्रथम चरण का आयोजन। 03 मई-ईदुल फितर (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार) परशुराम जयन्ती (अवकाश)। 07 मई-रवीन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती (उत्सव)। मई माह में-पूरक परीक्षा का आयोजन। 14 मई-सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। 16 मई-पूरक परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं प्रगति-पत्र का वितरण। 17 मई से 30 जून-ग्रीष्मावकाश। नोट-1. संस्थाप्रधान ग्रीष्मावकाश में मुख्यालय से बाहर हों, तो वह विद्यार्थियों को टी.सी. जारी करने हेतु मुख्यालय पर रहने वाले वरिष्ठतम शिक्षक को टी.सी. पर हस्ताक्षर करने हेतु अधिकृत करावें तथा इसका अनुमोदन संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी से कराकर संबंधित को पाबन्द करें, ताकि विद्यार्थियों को टी.सी. प्राप्त करने में कोई असुविधा न हों। 2. ''राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा-द्वितीय स्तर'' (कक्षा-8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु) का आयोजन। 3. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

मई-2022

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

जून 2022 ● कार्य दिवस-06, रविवार-04, अवकाश-20, उत्सव-03 ● 02 जून-महाराणा प्रताप जयन्ती (अवकाश उत्सव)। 21 जून-अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (अवकाश-उत्सव) : समस्त विद्यालयों में प्रात: 7 से 8 बजे तक उत्सव आयोजन। 24 जून-1. SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक का आयोजन एवं सत्र पर्यन्त कार्य योजना का अनुमोदन। 24 से 30 जून-प्रवेशोत्सव-द्वितीय चरण का आयोजन। इस अवधि में संस्था प्रधान एवं शिक्षकगण हाउस होल्ड सर्वे के आधार पर अब तक प्रवेश से वंचित/हार्ड कोर समूह के बच्चों का प्रवेश विद्यालय/आंगनबाड़ी में करवाए जाने हेतु विशिष्ट कार्य योजना के तहत नामांकन वृद्धि अभियान संचालित करेंगे। संस्था प्रधान द्वारा समस्त स्टाफ से नवीन समय विभाग चक्र के अनुरूप सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र के लिए कक्षा शिक्षण हेतु विषय योजना का निर्माण करवाया जाकर योजना का परिवीक्षण किया जाएगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों को टी.सी./नव प्रवेशित विद्यार्थियों का एस.आर. रजिस्टर में पंजीयन सम्बन्धी कार्यों का समुचित निष्पादन किया जाएगा। 28 जून-भामाशाह जयन्ती (उत्सव), राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन। 30 जून-SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक में अनुमोदित कार्य योजना को अन्तिम रूप दिया जाना। नोट-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार- WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

जून-2022

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	
शनि	4	11	18	25	

© सर्वाधिकार निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के पास सुरक्षित हैं।

2. दो पारी में संचालित विद्यालयों का समय :-

क्र.सं.	अवधि	विद्यालय संचालन का समय
1.	1 अप्रैल से 30 सितम्बर तक	प्रात: 7:00 से सायं 6:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:30 घंटे)
2.	1 अक्टूबर से 31 मार्च तक	प्रात: 7:30 से सायं 5:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे)

3. दो पारी विद्यालय (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) के संस्था प्रधान का समय प्रातः 10.00 से सायं 5.00 बजे तक रहेगा। वे अपने स्तर पर स्वैच्छा से इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं करेंगे। 4. निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान अजमेर द्वारा आकाशवाणी के सहयोग से विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम के तहत कक्षा 3 से 12 तक के लिए चयनित विषयों के पाठ्यक्रम आधारित चयनित पाठ, गैर पाठ्यक्रम आधारित पाठ तथा बोर्ड कक्षाओं के विभिन्न विषयों पर परीक्षामालाओं का प्रसारण आकाशवाणी केन्द्रों द्वारा करवाया जाता है। समस्त संस्थाप्रधान छात्र/छात्राओं को शिक्षण का लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से स्वयं के विद्यालय में रेडियो की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम के तहत किए जा रहे प्रसारण को अनिवार्यतः सुनवाने की व्यवस्था करेंगे। 5. राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा प्रत्येक कक्षा हेतु पुस्तकालय कालांश का निर्धारण किया गया है। यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक विद्यार्थी पुस्तकालय की सुविधा से लाभान्वित हो, अतः रोटेशन के आधार पर प्रति सप्ताह प्रत्येक कक्षा हेतु पुस्तकालय कालांश का निर्धारण किया जाए। 'समग्र शिक्षा अभियान के औपचारिक व वैकल्पिक शिक्षा प्रकोष्ठ' द्वारा प्रत्येक विद्यालय को 5000/- से 20000/- रुपये तक पुस्तकालय अनुदान के रूप में राशि का प्रावधान किया गया है। 6. राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के भवनों में संचालित राजकीय माध्यमिक विद्यालय/माध्यमिक कक्षाएँ एवं राजकीय प्राथमिक विद्यालय/प्राथमिक कक्षाएँ निम्नांकित व्यवस्थानुसार संचालित की जाए।

क्र.सं.	विद्यालय का प्रकार	पारी	पारी क्रम
1.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 1 से 8
2.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 6 से 8
3.	उच्च माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 9 से 12)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 11 से 12 द्वितीय पारी कक्षा 9 से 10
4.	माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 10)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 6 से 10 द्वितीय पारी कक्षा 1 से 5
5.	माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 10)	(दो पारी)	प्रथम पारी कक्षा 9 से 10 द्वितीय पारी कक्षा 6 से 8

यदि एक ही शाला परिसर में दो विद्यालय संचालित हो तथा दो पारी में संचालन की स्वीकृति प्राप्त हो, तो माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रथम पारी में तथा प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय द्वितीय पारी में संचालित होंगे। जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-प्रारंभिक/माध्यमिक अपने स्तर पर इस व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। समन्वित विद्यालय जो दो या दो अधिक परिसर में संचालित हैं, में समान स्तर की समस्त कक्षाएँ एक ही समय में (समान पारी में) संचालित की जाएगी। इस सम्बन्ध में अन्य विशेष परिस्थिति के कारण आवश्यक परिवर्तन के लिए अनुमति प्राप्त की जानी होगी।

सहशैक्षिक गतिविधियाँ : 1. समस्त सह शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन विभागीय निर्देशों के अनुरूप किया जाए। 2. सभी राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'चाईल्ड राइट्स क्लब, वन एवं पर्यावरण क्लब, विज्ञान क्लब एवं रोड सेफ्टी क्लब' की स्थापना अनिवार्य रूप से की जाए तथा इनसे संबंधित गतिविधियों का संचालन आवश्यक रूप से किया जाए। तम्बाकू नियंत्रण हेतु Tabaco Moniter विभागीय निर्देशानुसार बनाए जाए। 3. सभी विद्यालय वार्षिक उत्सव शासन द्वारा निर्धारित तिथि तक मनाएंगे। विद्यालयों को अपनी प्रतियोगिताएँ/समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (SUPW) एवं समाज सेवा शिविर/वार्षिक उत्सव सहित अन्य गतिविधियाँ यथा-उत्कृष्ट उपलब्धि प्रदान करने वाले संस्थाप्रधान/शिक्षक एवं विद्यार्थियों को पुरस्कार इत्यादि इससे पूर्व समयावधि में समाप्त करनी होगी। इसके बाद उच्चतम कक्षाओं के संक्षिप्त विदाई समारोह (आशीर्वाद एवं अभिवादन समारोह) एवं 'सखा संगम' जैसे कार्यक्रम ही आयोजित किए जा सकते हैं। समस्त विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (SUPW) एवं समाज सेवा शिविर के दौरान गाँधी जी द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छता सम्बन्धी गतिविधियों को सहज प्रवृत्ति एवं दैनिक वृत्ति के रूप में अंगीकार करने की सीख के विशेष संदर्भ में दैनिक जीवन में 'स्वच्छता एवं साफ-सफाई की अनिवार्यता' विषयक उद्बोधन तथा सामूहिक श्रमदान द्वारा विद्यालय परिसर के सौंदर्यकरण एवं वृक्षारोपण सम्बन्धी गतिविधियाँ अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाए। 4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा संचालित विद्यालय आधारित मूल्यांकन योजना के अन्तर्गत कक्षा 9 एवं 10 के लिए विद्यालय में संचालित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति में प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेना अनिवार्य होगा तथा स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास हेतु सुविधानुसार आयोजित प्रवृत्तियों में से प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम दो प्रवृत्तियों में भाग लेना अनिवार्य होगा। 5. प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा के समस्त विद्यालयों के लिए खेलकूद सामग्री क्रय किए जाने हेतु 'समग्र शिक्षा अभियान के औपचारिक व वैकल्पिक शिक्षा प्रकोष्ठ' द्वारा प्रत्येक विद्यालय को 5000/- से 25000/- रुपये तक की राशि का प्रावधान किया गया है। 6. समस्त विद्यालयों में 'विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी)' एवं 'विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (एसडीएमसी)' की कार्यकारिणी समिति बैठक प्रतिमाह अमावस्या के दिन ही आयोजित की जाएगी। 'समग्र शिक्षा अभियान सामुदायिक गतिशीलता प्रकोष्ठ' के प्लान के अनुसार 'विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी)' एवं 'विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (एसडीएमसी)' की उक्त बैठकों को 'समुदाय जागृति दिवस' के रूप में मनाया जाए। यदि अमावस्या के दिन विद्यालय में अवकाश हो तो इनका आयोजन अगले कार्य दिवस पर किया जाएगा। 'विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी)' एवं 'विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (एसडीएमसी)' हेतु गैर आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर से प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुरूप करवाया जाएगा। 7. पर्यावरण संबंधी ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए युवा एवं ईको क्लब की गतिविधियों का आयोजन तथा व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों के लिए स्थानीय हस्तशिल्प एवं स्थानीय कलाकारों से अनुभव साझा करने के लिए माह दिसम्बर, 2021 के पश्चात एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जाएगा।

नोट : उपर्युक्त में से वर्तमान में कोविड-19 गाइडलाइन के तहत स्थगित गतिविधियों का संचालन कोविड-19 की गाइडलाइन में इन गतिविधियों की अनुमति प्राप्त होने पर पृथक से निर्देश जारी किए जाने पर ही किया जाए।

प्रबोधन एवं प्रबंधन : 1. एकीकृत जिला सूचना प्रणाली के अन्तर्गत 30 सितम्बर के आधार पर जिले के राजकीय/केन्द्रीय/निजी आदि समस्त विद्यालयों, जिनमें कक्षा 1-12 तक के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, शैक्षिक नियोजन की दृष्टि से उनकी विभिन्न सूचनाएँ, यथा विद्यार्थियों/शिक्षकों/विद्यालयों की श्रेणीवार संख्या आदि संकलित की जाए। सभी शिक्षक/संस्थाप्रधान यू-डाईस सूचना संकलन प्रपत्र की समय पर पूर्ति सुनिश्चित करें। 2. कल्प कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित विद्यालयों में कम्प्यूटर लैब का रखरखाव विद्यालय को समग्र शिक्षा अभियान से उपलब्ध कराई जा रही स्कूल फेसिलिटी ग्राण्ट/मैन्टीनेन्स ग्राण्ट से विद्यालय द्वारा करवाया जाए एवं लैब को सुरक्षित रखते हुए विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों हेतु प्रति सप्ताह अधिकतम दो-दो कालांश प्रति कक्षा लगवाएं जाएं एवं विद्यालय में उपलब्ध ई-कन्टेन्ट (विज्ञान, गणित एवं अंग्रेजी) द्वारा सम्बलन प्रदान किया जाए। 3. राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT) उदयपुर के विज्ञान एवं गणित विभाग द्वारा सत्र के प्रत्येक माह के अंतिम सप्ताह में निर्धारित समयानुसार विज्ञान मेला, जनसंख्या शिक्षा आधारित प्रशिक्षण, विज्ञान, गणित एवं एन.एम.एम.एस. से सम्बन्धित कुल 8 वी.सी. (वर्ष भर में) आयोजित की जाएगी।

उत्सव एवं अवकाश : 1. प्रत्येक माह में अंकित उत्सव अनिवार्यतः मनाए जाए। 2. किसी भी सप्ताह में आने वाले उत्सवों को उसी सप्ताह के शनिवार (No Bag Day) के अन्य कार्यक्रम के साथ मनाया जाए। 3. 15 अगस्त तथा 26 जनवरी को पूर्ण अवकाश होते हुए भी उत्सव मनाया जाना अनिवार्य है। शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की स्वयं के विद्यालय में उपस्थिति अनिवार्य है। 4. 02 अक्टूबर का उत्सव उसी दिन ही मनाया जाए। इस दिन विद्यार्थियों द्वारा महात्मा गाँधी के जीवन पर आधारित नाटक, कविता, अभिनय आदि गतिविधियाँ/क्रियाकलाप करवाया जाएं। साथ ही जिन विद्यालयों में प्रोजेक्टर की सुविधा अथवा बड़ी स्क्रीन उपलब्ध है, वहाँ इस दौरान रिचर्ड एटनबरों की फिल्म 'गाँधी' एवं गाँधीजी के जीवन तथा गाँधी दर्शन से सम्बन्धित डॉक्यूमेंट्री, फीचर फिल्में अथवा अन्य संदर्भ साहित्य से सम्बन्धित दृश्य सामग्री का प्रदर्शन विद्यार्थियों द्वारा गाँधीजी के जीवन चरित्र एवं मूल्यों से प्रेरणा ग्रहण करने के उद्देश्य से करवाया जाए। 5. मध्यावधि अवकाश, शीतकालीन अवकाश तथा ग्रीष्मावकाश में विद्यालयों के मंत्रालयिक कर्मचारी केवल राजपत्रित अवकाश का ही उपभोग करेंगे। 6. जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश सम्बन्धित जिले के विद्यालय में मान्य होंगे। 7. संस्थाप्रधान पंचांग में निर्दिष्ट अवकाशों के अतिरिक्त सत्र में दो दिवस का अवकाश घोषित कर सकेंगे।

नोट : उपर्युक्त में से वर्तमान में कोविड-19 गाइडलाइन के तहत स्थगित गतिविधियों का संचालन कोविड-19 की गाइडलाइन में इन गतिविधियों की अनुमति प्राप्त होने पर पृथक से निर्देश जारी किए जाने पर ही किया जाए।

मूल्यांकन एवं परीक्षा : 1. कक्षा-6 से 12 की परख, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षा एवं पूरक परीक्षाएँ (कक्षा-8 में डाइट तथा कक्षा-10 एवं 12 में वार्षिक परीक्षा के स्थान पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा परीक्षा ली जाएगी) इस पंचांग के अनुसार सम्पन्न की जाए तथा परीक्षा परिणामों की घोषणा तथा विद्यार्थियों को प्रगति पत्रों का वितरण निर्धारित तिथि की जाने वाली तिथि को अनिवार्य रूप से कर दिया जाए। 2. परख अवधि में शाला समय से पूर्व विद्यार्थियों को अगले दिवस परख की तैयारी हेतु छोड़ा जा सकता है, लेकिन कर्मचारी पूरे समय तक उपस्थित रहेंगे। 3. सभी स्तर के विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा के लिए क्रमशः एक तथा दो दिवसों का परीक्षा तैयारी अवकाश रहेगा। इन दिनों में विद्यालय खुलेंगे और अध्यापक एवं मंत्रालयिक कर्मचारी परीक्षा के अभिलेख तथा व्यवस्था संबंधित कार्य पूर्ण करेंगे। इस प्रकार का अवकाश रविवार एवं अन्य राजपत्रित अवकाश छोड़कर किया जाएगा। 4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु परीक्षा पूर्व तैयारी हेतु शासन द्वारा निर्धारित अवकाश रहेगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों हेतु आवश्यकतानुसार विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाए। 5. एस.आई.क्यू.ई./सी.सी.ई. संचालित विद्यालयों में पारम्परिक प्रक्रिया से मूल्यांकन न होकर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया से ही मूल्यांकन किया जाएगा। 6. विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं के नियमित मूल्यांकन प्रक्रिया के सम्बन्ध में राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग, प्रारंभिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग के परिपत्र क्रमांक : प.14 (3) प्राशि/आयो/2014, जयपुर, दिनांक : 27.10.2014 की पालना की जाए।

अन्य प्रतियोगिताएं/गतिविधियाँ : 1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर तथा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (RSCERT), उदयपुर तथा विभिन्न अभिकरणों इत्यादि एवं विभाग द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों में सृजनात्मक कौशल विकास तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं अभिरुचि विकास के उद्देश्य से आयोजित की जाने वाली समस्त प्रतियोगिताएँ विद्यालय स्तर पर शनिवार को ही आयोजित करवाई जाए। 2. 'बस्ता मुक्त दिवस' (शनिवार) के अवसर पर आयोजित होने वाले उत्सवों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न सहशैक्षिक गतिविधियों यथा-खेलकूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण, निबंध लेखन इत्यादि के आयोजन पर विशेष ध्यान दिया जाए। 3. प्रतिमाह एक बाल सभा में गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित 'बुनियादी शिक्षा की अवधारणा' का ज्ञान विद्यार्थियों को देते हुए पारम्परिक घरेलू कुटीर उद्योग का व्यावहारिक प्रदर्शन करवाया जावे, जैसे मिट्टी के बर्तन या खिलौने बनाना, तकली कातना, चरखे का उपयोग इत्यादि। इस हेतु विद्यालय के आस-पास से आर्टिजन को विद्यालय में आमंत्रित किया जाकर प्रत्यक्ष प्रदर्शन करने का प्रयास किया जाए। विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को सहशैक्षिक गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए।

...पृष्ठ 26 का शेष भाग

किया गया है। ट्रांसपोर्ट वाउचर के विस्तृत दिशा-निर्देश संदर्भित पत्रानुसार जारी किए जा चुके हैं।

ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से पात्र/चयनित विद्यार्थियों को लाभान्वित करने हेतु आपको निर्देशित किया जाता है कि परिषद कार्यालय से जारी संदर्भित दिशा-निर्देशों की पालना करते हुए विद्यार्थियों की समस्त सूचनाओं को शाला दर्पण पोर्टल पर दिनांक 30 अक्टूबर, 2021 तक सीबीईओ लॉगइन के माध्यम से अद्यतन करवाया जाना सुनिश्चित करें। उक्त तिथि के पश्चात राज्य स्तर से पोर्टल को लॉक कर दिया जाएगा। निर्धारित तिथि के पश्चात किसी भी प्रकार का संशोधन अथवा योजना हेतु विद्यार्थी की प्रविष्टि को स्वीकार नहीं किया जाएगा। ऐसी स्थिति में समस्त जिम्मेदारी आपकी स्वयं की रहेगी।

अतः कार्य की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए निर्देशों की पालना निर्धारित तिथि से पूर्व करवाया जाना सुनिश्चित कराएं।

● **(डॉ. भंवर लाल)** राज्य परियोजना निदेशक

4. कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों एवं कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं हेतु ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना दिशा-निर्देश 2021-22

● राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद ● क्रमांक : रास्कूशिप/जय/वै.शि./TV/दिशा-निर्देश/2021-22/3544 दिनांक : 15.09.2021 ● विषयः कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों एवं कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं हेतु ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना दिशा-निर्देश 2021-22

1. प्रस्तावना

1.1 निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 द्वारा 6 से 14 आयु वर्ग के समस्त बालक-बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

1.2 राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार (आरटीई) नियम, 2011 के नियम 7 (4) में ऐसे छितरी एवं कम आबादी क्षेत्रों एवं ढाणियों, जहाँ नियम 7 (1 व 3) में निर्धारित मानदण्डानुसार विद्यालय का संचालन संभव नहीं है, में निवास कर रहे 6-14 आयुवर्ग के बालक-बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा हेतु निःशुल्क ट्रांसपोर्ट सुविधा उपलब्ध करवाई जाने का प्रावधान किया गया है।

1.3 बिन्दु संख्या 1.2 में वर्णित क्षेत्रों तथा उनसे सम्बद्ध वास स्थानों में निवास कर रहे 6 से 14 आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं को सहज एवं गुणवत्तापरक प्रारंभिक शिक्षा के लिए उनके वास स्थान के निकटस्थ विद्यालयों में अध्ययन हेतु सुगमतापूर्वक पहुँचाने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सत्र 2017-18 से ट्रांसपोर्ट वाउचर सुविधा प्रदान की गई।

1.4 ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 9 से 12 में अध्ययनरत व 5 कि.मी. से अधिक दूरी से विद्यालय आने वाली बालिकाएँ जो निःशुल्क साइकिल योजना से लाभान्वित नहीं है तथा ग्रामीण क्षेत्र के राउमावि में वांछित संकाय/विषय उपलब्ध न होने पर निकटवर्ती शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में 5 कि.मी. से अधिक दूरी से अध्ययन के लिए आने वाली कक्षा 11 व 12 की बालिकाएँ जो निःशुल्क साइकिल योजना से लाभान्वित नहीं है, को ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के तहत निःशुल्क ट्रांसपोर्ट वाउचर सुविधा का लाभ दिए जाने का प्रावधान रखा गया है।

2. उद्देश्य-

2.1 बालिका शिक्षा में नामांकन दर, ठहराव दर बढ़ाने व जेण्डर गैप कम करने की दृष्टि से तथा बालिका सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कक्षा 9 से 12 की पात्र/चयनित बालिकाओं को ट्रांसपोर्ट वाउचर की सुविधा से लाभान्वित किया जाना है।

2.2 आरटीई नियमों के तहत छितरी, कम आबादी क्षेत्रों एवं ढाणियों, जहाँ निर्धारित मानदण्डानुसार विद्यालय का संचालन संभव नहीं है, में निवास कर रहे 6 से 14 आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं को सहज एवं गुणत्तापूर्ण शिक्षा के लिए उनके वास स्थान से निकटस्थ विद्यालयों में अध्ययन हेतु सुगमतापूर्ण पहुँचाने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्र के कक्षा 1 से 8 पात्र बालक-बालिकाओं हेतु ट्रांसपोर्ट वाउचर सुविधा का प्रावधान किया गया है।

3. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से लाभान्वित होने हेतु पात्रता-

● **कक्षा 1 से 8 तक के बालक-बालिकाओं हेतु**

1. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में नामांकित कक्षा 1 से 5 के ऐसे बालक-बालिकाएँ जिनके वास स्थान से 1 किमी. से अधिक की दूरी तक कोई राजकीय प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध नहीं है।

2. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में नामांकित कक्षा 6 से 8 के ऐसे बालक-बालिकाएँ जिनके वास स्थान से 2 किमी. से अधिक की दूरी तक कोई राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध नहीं है।

3. मॉडल विद्यालयों की उसी पंचायत समिति की कक्षा 6 से 8 की बालिकाएँ, जिनके निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 02 किमी. से अधिक है।

● **कक्षा 9 से 10 की बालिकाओं हेतु**

1. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 9 से 10 में अध्ययन हेतु 5 किमी. से अधिक की दूरी से आने वाली बालिकाएँ।

2. मॉडल विद्यालयों की उसी पंचायत समिति की कक्षा 9 से 10 की बालिकाएँ, जिनके निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 05 कि.मी. से अधिक है।

● **कक्षा 11 से 12 की बालिकाओं हेतु**

1. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11 से 12 में अध्ययन हेतु 5 किमी. से अधिक की दूरी से

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

आने वाली बालिकाएँ।

2. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में वांछित संकाय अथवा विषय उपलब्ध न होने पर निकटवर्ती शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 11 व 12 की 5 किमी. से अधिक की दूरी से अध्ययन हेतु आने वाली बालिकाएँ।

3. मॉडल विद्यालयों की उसी पंचायत समिति की कक्षा 11 से 12 की बालिकाएँ, जिनके निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 05 किमी. से अधिक है।

4. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के तहत निर्धारित राशि की दर–

कक्षा	विद्यालय का प्रकार	वास स्थान से विद्यालय की दूरी	श्रेणी	दर (प्रति उपस्थिति दिवस)	वर्ष/माह में अधिकतम स्वीकृत/देय राशि प्रति विद्यार्थी
1 से 5	राजकीय विद्यालय	1 कि.मी. से अधिक	बालक व बालिका	10 रुपये	300 प्रति माह (वर्ष 2021–22 में कोविड–19 के कारण 05 माह के लिए अधिकतम 1500/– बजट स्वीकृत है।)
6 से 8	राजकीय विद्यालय	2 कि.मी. से अधिक	बालक व बालिका	15 रुपये	
	स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल	2 कि.मी. से अधिक उसी पंचायत	बालिका	15 रुपये	
9 से 12	राजकीय विद्यालय	5 कि.मी. से अधिक ग्रामीण क्षेत्र का विद्यालय	बालिका	20 रुपये	540 प्रतिमाह (वर्ष 2021–22 में कोविड–19 के कारण 05 माह के लिए अधिकतम 2700/– बजट स्वीकृत है।)
	स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल	5 कि.मी. से अधिक उसी पंचायत	बालिका	20 रुपये	
11 से 12	राजकीय विद्यालय	ग्रामीण क्षेत्र में वांछित संकाय /विषय उपलब्ध नहीं होने पर 5 कि.मी. से अधिक के शहरी विद्यालयों में आने वाली	बालिका	20 रुपये	

5. ध्यान देने योग्य बातें:–

5.1 विद्यार्थियों के निवास स्थान से विद्यालय की दूरी सही एवं भली प्रकार जाँचकर शाला दर्पण पर प्रविष्ट करें। त्रुटि के कारण विद्यार्थी योजना से वंचित रहने पर समस्त जिम्मेदारी सम्बन्धित संस्थाप्रधान की रहेगी।

5.2 राजकीय विद्यालयों में कक्षा 9 में प्रवेश लेने वाली समस्त बालिकाओं को साइकिल योजना के अन्तर्गत लाभान्वित किया जा रहा है। अतः साइकिल योजना के तहत किसी भी वर्ष में लाभान्वित होने वाली कक्षा 9 से 12 की बालिकाएँ ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का लाभ लेने हेतु पात्र नहीं होगी।

5.3 कक्षा 9 में प्रवेश लेने वाली बालिकाएँ साइकिल योजना से अथवा नियमानुसार ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना में से किसी भी एक योजना का लाभ ले सकती है।

5.4 किसी भी स्थिति में कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं को उक्त दोनों योजनाओं से एक साथ लाभान्वित नहीं किया जा सकेगा।

5.5 कक्षा 9 में साइकिल योजना से लाभान्वित बालिका कक्षा 12 तक ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से लाभान्वित नहीं किया जा सकेगा।

5.6 शिविरा पंचांग के कार्य दिवसों की गणना के आधार पर परिषद कार्यालय से ट्रांसपोर्ट वाउचर की राशि जारी की जाती है। संस्थाप्रधान द्वारा पात्र विद्यार्थियों को वास्तविक उपस्थिति की गणना करते हुए ही ट्रांसपोर्ट वाउचर/सुविधा राशि जारी की जानी है। सत्र समाप्ति पर मद में ही रही बचत राशि सूचना जिला कार्यालय द्वारा परिषद कार्यालय को संलग्न निर्धारित प्रपत्र में दी जाएगी।

5.7 संस्थाप्रधान द्वारा विद्यार्थियों की शाला दर्पण पर निर्धारित प्रपत्र 'विद्यार्थी विस्तृत विवरण प्रपत्र' में अंकित की गई निवास स्थान से विद्यालय की दूरी में किसी प्रकार के संशोधन को सीबीईओ द्वारा ही किया जा सकेगा। इस हेतु सम्बन्धित संस्थाप्रधान द्वारा लिखित में सीबीईओ कार्यालय को सूचित करना होगा। इसी प्रकार सीबीईओ कार्यालय से संशोधन पश्चात भी किसी प्रकार के संशोधन किए जाने की कार्यवाही सीडीईओ/एडीपीसी लॉग-इन से की जा सकेगी।

6. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का संचालन–

6.1 ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का संचालन राज्य स्तर पर राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद अन्तर्गत समसा, जिला स्तर पर सीडीईओ/एडीपीसी, ब्लॉक स्तर पर सीबीईओ, पंचायत स्तर पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ) एवं विद्यालय स्तर पर एसडीएमसी/एसएमसी द्वारा किया जाएगा।

6.2 पीईईओ/माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों/स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल की एसएमसी/एसडीएमसी को ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना की राशि हस्तान्तरित की जाएगी।

6.3 विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)/विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) के द्वारा आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का समूह गठन कर प्रत्येक शैक्षणिक सत्र के प्रारम्भ से पूरे सत्र के लिए किराए के वाहन से स्थानीय सामूहिक ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था की जाएगी।

6.4 विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)/विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) के द्वारा सामूहिक ट्रांसपोर्ट के लिए मासिक

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

किराए का निर्धारण करके ट्रांसपोर्ट सुविधादाता से सारणी-2 में निर्धारित राशि की सीमा तक व्यवस्था की जा सकेगी। यदि निर्धारित मासिक किराया राज्य सरकार द्वारा देय राशि से अधिक है तो जनसहभागिता/भामाशाह से अंतर की राशि की व्यवस्था का प्रयास किया जावेगा। अंतर की राशि किसी भामाशाह/जनसहभागिता से उपलब्ध नहीं हो पाने की स्थिति में संबंधित छात्राओं के अभिभावकों की सहभागिता से प्राप्त कर व्यवस्था की जा सकेगी।

6.5 अभिभावक द्वारा सामूहिक ट्रांसपोर्ट सुविधा नहीं लेने की स्थिति में लिखित में संलग्नक आवेदन प्रपत्र-क प्रस्तुत करने पर छात्राओं को सारणी-2 में वर्णित राशि या वास्तविक व्यय जो भी कम हो, उपलब्ध कराया जाएगा।

7. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना संचालन के दायित्व-

A. परिषद कार्यालय, जयपुर के दायित्व-

7.1 ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के संचालन हेतु राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा समस्त जिलों के एडीपीसी कार्यालय को ट्रांसपोर्ट वाउचर राशि उपलब्ध कराई जाएगी।

7.2 परिषद कार्यालय के शाला दर्पण प्रकोष्ठ द्वारा उपलब्ध करवाई ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना हेतु नियमानुसार पात्र/चयनित बच्चों की सूची को जिला कार्यालय को प्रेषित की जाएगी।

7.3 शिविरा कैलेंडर में निर्धारित शैक्षिक दिवसों की गणना करते परिषद कार्यालय द्वारा अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक कार्यालय के खाते में ट्रांसपोर्ट वाउचर राशि हस्तान्तरण की जाएगी।

B. अति. जिला परियोजना के समन्वयक के दायित्व-

1. परिषद कार्यालय से प्राप्त ट्रांसपोर्ट वाउचर की राशि को पीईईओ विद्यालय की एसडीएमसी/एसएमसी के खातों में हस्तान्तरण करते नियमानुसार पात्र/चयनित बच्चों के नाम मय विद्यालयवार इत्यादि की सूची भी सम्बन्धित पीईईओ को उपलब्ध कराई जाएगी।
2. ग्रामीण क्षेत्र के ऐसे माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय जो पीईईओ के अधीन नहीं है, के पात्र/चयनित बच्चों के लिए राशि एवं सूची का हस्तान्तरण सम्बन्धित विद्यालय की एसडीएमसी को करना सुनिश्चित करेंगे।
3. पीईईओ को जारी की गई राशि एवं बच्चों की सूची से सीबीईओ कार्यालय को भी अवगत कराया जाएगा ताकि योजना का प्रभावी क्रियान्वयन एवं मॉनीटरिंग की जा सके।
4. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना हेतु पीईईओ को जारी की गई राशि का संलग्न निर्धारित प्रपत्र में उपयोगिता प्रमाण पत्र ब्लॉकवार प्राप्त करना तथा समीक्षा उपरान्त परिषद कार्यालय को प्रेषित करना।

C. सीबीईओ के दायित्व-

1. सीबीईओ द्वारा ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना की मॉनीटरिंग की जाएगी। पीईईओ कार्यालय एवं ब्लॉक के प्राविं/उप्राविं/माध्यमि/उच्च माध्यमिक विद्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण कर रेन्डम सर्वे द्वारा ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का प्रभावी क्रियान्वयन करवाया जाएगा।
2. ब्लॉक के समस्त पीईईओ/कार्यालयों से ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का दिशा-निर्देशानुसार प्रभावी क्रियान्वयन करवाना।
3. उपयोगिता प्रमाण-पत्र ब्लॉक के समस्त पीईईओ/माविं/उमाविं से प्राप्त कर समीक्षा पश्चात सूचना को समेकित करते हुए उपयोगिता प्रमाण-पत्र एडीपीसी कार्यालय को प्रेषित करना।

D. पीईईओ/संस्थाप्रधान/एसडीएमसी/एसएमसी के दायित्व-

सारणी-3

दायित्व	किए/करवाए जाने वाले कार्य	प्रपत्र	उप प्रपत्र	कक्षा
समस्त संस्थाप्रधान	ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना हेतु पात्र विद्यार्थियों या उनके अभिभावकों से भरवाया जाएगा।	1	भाग-क	समस्त
समस्त संस्थाप्रधान	प्रपत्र-1 की जाँच एवं प्रमाणीकरण करना	1	भाग-ख	समस्त
एसडीएमसी/ एसएमसी	दिशा निर्देशानुसार अनुशंषा/अनुमोदन करना	2	भाग-क	समस्त
समस्त संस्थाप्रधान	शाला दर्पण पोर्टल पर प्रविष्टी का अंकन कर प्रमाणीकरण करना	2	भाग-ख	समस्त
पीईईओ/ सम्बन्धित संस्थाप्रधान	पात्र/चयनित बच्चों हेतु सामूहिक सुविधा/ ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना की राशि हस्तांतरण करना	3	-	पात्र/ चयनित बच्चे

1. समस्त संस्थाप्रधानों द्वारा विद्यालय में नामांकित बच्चों के अभिभावकों से उक्त सारणी के अनुसार निर्धारित प्रार्थना/आवेदन प्रपत्र-1 का भाग-क भरवाया जाएगा।
2. संस्थाप्रधान द्वारा समस्त प्रार्थना/आवेदन पत्रों के सत्यापन/ प्रमाणीकरण प्रपत्र-1 के भाग-ख में किया जाएगा।
3. प्रपत्र-2 के भाग-क में समस्त एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा पात्र विद्यार्थियों को ट्रांसपोर्ट वाउचर अथवा सामूहिक परिवहन सुविधा से लाभान्वित किए जाने की अनुशंषा/अनुमोदन किया जाएगा।
4. प्रपत्र-2 के भाग-ख द्वारा संस्थाप्रधान के अनुमोदन/स्वीकृति पश्चात सूची के विद्यार्थियों की ट्रांसपोर्ट वाउचर की सूचना शालादर्पण पोर्टल पर प्रविष्ट की जाएगी।
5. प्रपत्र-3 द्वारा पीईईओ व अधीनस्थ/सम्बन्धित संस्थाप्रधान द्वारा पात्र/चयनित बच्चों हेतु सामूहिक ट्रांसपोर्ट सुविधा/ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना की राशि जारी करने का अनुमोदन/स्वीकृति दी जानी है।
6. पीईईओ के अधीनस्थ विद्यालयों द्वारा प्रतिमाह की उपस्थिति पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रस्तुत की जाएगी।
7. पात्र विद्यार्थियों को उनके बैंक खाते में अथवा उनके माता-

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

पिता/अभिभावक के खाते में तथा सामूहिक परिवहन व्यवस्था के लिए सम्बन्धित को ऑनलाइन/चेक द्वारा राशि हस्तांतरित की जाएगी। किसी भी स्थिति में राशि का नगद भुगतान नहीं किया जाए।

8. ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय जो पीईईओ नहीं है। वे सभी संस्थाप्रधान स्वयं के विद्यालय के पात्र/चयनित बच्चों को सामूहिक ट्रांसपोर्ट सुविधा/ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से लाभान्वित करने के लिए उक्त सारणी-3 के समस्त प्रपत्रों की पूर्ति करते हुए नियमानुसार कार्यवाही करेंगे।

9. सामूहिक परिवहन सुविधा का विकल्प चुनने वाले विद्यार्थियों के लिए यह सुविधा प्रत्येक शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ से पूरे सत्र के लिए किराए के वाहन से की जाएगी। इस व्यवस्था में एक ही रास्ते से आने वाले विद्यार्थियों तथा स्थानीय साधनों की उपलब्धता का ध्यान रखा जाएगा। उक्त कार्य में अन्य शिक्षकों एवं अभिभावकों का सहयोग लिया जाएगा। वाहन में निर्धारित क्षमता में ही विद्यार्थी बैठें, यह प्रधानाध्यापक एवं पीईईओ द्वारा सुनिश्चित किया जाएगा।

10. सामूहिक ट्रांसपोर्ट सुविधा प्रदाता को देय एक मुश्त मासिक किराए का भुगतान पीईईओ विद्यालय व अधीनस्थ विद्यालयों की SDMC/SMC द्वारा सम्बन्धित बैंक खाते में किया जाएगा। यदि यह राशि राज्य सरकार द्वारा अनुज्ञेय राशि से अधिक है तो, जनसहभागिता/भामाशाह/संबंधित विद्यार्थियों के अभिभावकों की स्वैच्छिक सहभागिता से अन्तर की राशि की व्यवस्था का प्रयास किया जा सकता है।

11. सामूहिक ट्रांसपोर्ट सुविधा नहीं लेने वाले विद्यार्थियों को ट्रांसपोर्ट वाउचर का भुगतान अनुज्ञेय राशि या वास्तविक व्यय जो भी कम हो, के अनुसार उनके अथवा उनके माता-पिता/अभिभावक के खातों में ऑनलाइन/चेक द्वारा हस्तान्तरित किया जाएगा। नकद राशि वितरित नहीं की जाए।

8. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का वित्तीय प्रबंधन–

8.1 ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के संचालन हेतु राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा समग्र शिक्षा की पीएबी में ट्रांसपोर्ट वाउचर मद में स्वीकृत राशि का उपयोग किया जाएगा।

8.2 अनुमोदित वार्षिक बजट 2021-22 में कक्षा 1-5 एवं कक्षा 6-8 के ट्रांसपोर्ट वाउचर हेतु पात्र विद्यार्थियों को प्रति विद्यार्थी अधिकतम रुपए 3000/- और कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं को छः माह हेतु प्रतिमाह 540/- रुपये की गणना से सत्र 2021-22 हेतु अधिकतम 3240/- रुपये का प्रावधान किया गया है। इससे अधिक राशि किसी भी विद्यार्थी को देय नहीं है।

8.3 राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जिलों को ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के अंतर्गत दो किश्तों में जारी की जाएगी। यह राशि शालादर्पण पोर्टल पर पात्र विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार जारी की जाएगी।

8.4 सत्र का उपयोगिता प्रमाण-पत्र ब्लॉक कार्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

8.5 सत्र का उपयोगिता प्रमाण-पत्र के ब्लॉक के समस्त पीईईओ/माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों से प्राप्त कर ब्लॉक का उपयोगिता प्रमाण-पत्र एडीपीसी कार्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

8.6 सभी ब्लॉक कार्यालय से उपयोगिता प्रमाण-पत्र प्राप्त कर जिले का उपयोगिता प्रमाण-पत्र राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद (समग्र शिक्षा) के वैकल्पिक शिक्षा एवं औपचारिक प्रकोष्ठ को प्रेषित किया जाएगा।

8.7 विगत शैक्षणिक सत्र की ट्रांसपोर्ट वाउचर की शेष राशि को समायोजित कर आगामी शैक्षणिक सत्र की ट्रांसपोर्ट वाउचर राशि जिलों को परिषद द्वारा की जाएगी।

8.8 राशि का उपयोग गतिविधि व शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार एवं वित्तीय नियमों की पूर्ण पालना करते हुए विहित प्रक्रियानुसार किया जाना सुनिश्चित करें।

8.9 कार्य में 'राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं नियम 2013' की अक्षरशः पालना सुनिश्चित की जाए।

8.10 राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.1(16)शिक्षा-1/2007 जयपुर दिनांक 24.01.2020 के अनुसार स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल की बालिकाओं को अन्य राजकीय विद्यालयों की भाँति ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से लाभान्वित किया जाना है।

8.11 राशि का उपयोग वित्तीय नियमानुसार किया जाएगा।

9. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना की मॉनीटरिंग एवं पर्यवेक्षण–

9.1 **राज्य स्तर–** राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा संबंधित प्रकोष्ठ एवं शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से।

9.2 **जिला स्तर–** सीडीईओ/एडीपीसी कार्यालय द्वारा।

9.3 **ब्लॉक स्तर–** सीबीईओ कार्यालय द्वारा।

9.4 **विद्यालय स्तर–** पीईईओ एवं माध्यमिक शिक्षा के संस्थाप्रधान तथा एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा।

10. माँग एवं प्रगति की सूचना

10.1 ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना हेतु पात्र विद्यार्थियों की संख्या शालादर्पण पोर्टल पर प्राप्त की जाकर उसी अनुसार जिलों को राशि हस्तांतरित की जाएगी।

10.2 ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना की प्रगति की समीक्षा शालादर्पण पोर्टल पर राज्य स्तर पर की जाएगी।

संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(डॉ. भंवर लाल)** आयुक्त व राज्य परियोजना निदेशक

परिशिष्ट-1

Transport Voucher Target for 2021-22
(For Elementary Setup Schools)

	Number of Students				Financial in lac @
S.N.	District	Primary	Upper Primary	Total	Rs. 1500/-
1	AJMER	3228	4821	8049	120.7350
2	ALWAR	4180	4486	8666	129.9900
3	BANSWARA	4800	8684	13484	202.2600
4	BARAN	1493	4890	6383	95.7450
5	BARMER	33792	24138	57930	868.9500
6	BHARTPUR	1477	1601	3078	46.1700

Rajshri Education Department सत्यमेव जयते

7	BHILWARA	1712	7995	9707	145.6050
8	BIKANER	14060	7224	21284	319.2600
9	BUNDI	1937	4072	6009	90.1350
10	CHHITORGARH	2047	5075	7122	106.8300
11	CHURU	7627	3497	11124	166.8600
12	DAUSA	3665	3214	6879	103.1850
13	DHAULPUR	1373	1740	3113	46.6950
14	DUNGARPUR	4284	7126	11410	171.1500
15	GANGANAGAR	4287	6053	10340	155.1000
16	HANUMANGARH	4022	2625	6647	99.7050
17	JAIPUR	8458	5537	13995	209.9250
18	JAISAIMER	8807	5330	14137	212.0550
19	JALOR	19617	10966	30583	458.7450
20	JHALAWAR	727	3552	4279	64.1850
21	JHUNJHUNU	6334	3373	9707	145.6050
22	JODHPUR	31471	16782	48253	723.7950
23	KARAULI	1591	2685	4276	64.1400
24	KOTA	969	1334	2303	34.5450
25	NAGAUR	17328	10860	28188	422.8200
26	PALI	4998	5224	10222	153.3300
27	PRATAPGARH	2297	4084	6381	95.7150
28	RAJSAMAND	3810	5964	9774	146.6100
29	SAWAI MADHOPUR	2620	3660	6280	94.2000
30	SIKAR	17288	9199	26487	397.3050
31	SIROHI	4239	3022	7261	108.9150
32	TONK	2314	3915	6229	93.4350
33	UDAIPUR	15215	14057	29272	439.0800
	TOTAL	**242067**	**206785**	**448852**	**6732.7800**

परिशिष्ट–2

Transport Voucher Target for 2021-22
(For Secondary Setup Schools)

Sr No.	District	Class 9 & 10		Class 11 & 12		Total	
		Physical	Financial for 5 month @ 540/- par month per student	Physical	Financial for 5 month @ 540/- par month per student	physical	Fin. In lac
1	AJMER	508	13.71600	944	25.48800	1452	39.20400
2	ALWAR	712	19.22400	925	24.97500	1637	44.19900
3	BAHSWARA	914	24.67800	825	22.27500	1739	46.95300
4	BARAN	572	15.44400	428	11.55600	1000	27.00000
5	BARMER	1726	46.60200	1158	31.26600	2884	77.86800
6	BHARATPUR	141	3.80700	249	6.72300	390	10.53000
7	BHILWARA	857	23.13900	903	24.38100	1760	47.52000
8	BIKANER	1658	44.76600	1249	33.72300	2907	78.48900
9	BUNDI	441	11.90700	444	11.98800	885	23.89500
10	CHHITAUR GARH	576	15.55200	607	16.38900	1183	31.94100
11	CHURU	1840	49.68000	1938	52.32600	3778	102.00600
12	DAUSA	338	9.12600	485	13.09500	823	22.22100
13	DHAULPUR	178	4.80600	225	6.07500	403	10.88100
14	DUNGARPUR	781	21.08700	1062	28.67400	1843	49.76100
15	GANGA NAGAR	2055	55.48500	1800	48.60000	3855	104.08500
16	HANUMAN GARH	1129	30.48300	1318	35.58600	2447	66.06900
17	JAIPUR	603	16.28100	1481	39.98700	2084	56.26800
18	JAISALMER	675	18.22500	385	10.39500	1060	28.62000
19	JALOR	1016	27.43200	507	13.68900	1523	41.12100
20	JHALAWAR	346	9.34200	435	11.74500	781	21.08700
21	JHUNJHUNU	863	23.30100	1441	38.90700	2304	62.20800
22	JODHPUR	1933	52.19100	1511	40.79700	3444	92.98800
23	KARALI	300	8.10000	298	8.04600	598	16.14600
24	KOTA	199	5.37300	346	9.34200	545	14.71500
25	NAGAUR	2101	56.72700	1710	46.17000	3811	102.89700
26	PALI	565	15.25500	532	14.36400	1097	29.61900
27	PRATAP GARH	512	13.82400	399	10.77300	911	24.59700
28	RAJSAMAND	412	11.12400	404	10.90800	816	22.03200
29	SWAI MADHOPUR	587	15.84900	453	12.23100	1040	28.08000
30	SIKAR	2593	70.01100	3198	86.34600	5791	156.35700
31	SIROHI	261	7.04700	166	4.48200	427	11.52900
32	TONK	603	16.28100	825	22 27500	1428	38.55600
33	UDAIPUR	948	25.59600	942	25.43400	1890	51.03000
	Grand Total	**28943**	**781.46100**	**29593**	**799.01100**	**58536**	**1580.47200**

प्रपत्र–1 (भाग–क)

कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों एवं कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं के लिए ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के तहत लाभ लेने हेतु प्रार्थना पत्र (विद्यार्थी/अभिभावक द्वारा भरा जाएगा)

1. छात्र/छात्रा का नाम व पता :.....
2. पिता/अभिभावक का नाम :.....
3. वर्तमान विद्यालय का नाम व पता :.....कक्षा.....
4. निवास स्थान का पता: .....
5. निवास स्थान से विद्यालय की दूरी :.....किमी.....मीटर

A. कक्षा 1 से 5 के लिए 1 किमी से अधिक पर एवं कक्षा 6 से 8 के लिए 2 किमी से अधिक एवं कक्षा 9 से 12 के लिए 5 किमी से अधिक दूरी होने पर निम्न कारणों में से किसी एक कारण पर ✓ का निशान लगाए–

I. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों के लिए–

- विद्यार्थी के निवास स्थान के 1 किमी परिधि में राजकीय विद्यालय है परन्तु स्वेच्छा से अध्ययनरत है। ☐
- विद्यार्थी के निवास स्थान के 1 किमी परिधि में राजकीय विद्यालय है परन्तु अपने भाई/बहन/परिवारजन के साथ विद्यालय में अध्ययनरत है। ☐
- विद्यार्थी के निवास स्थान के 1 किमी परिधि में राजकीय विद्यालय नहीं है। ☐

II. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए–

- विद्यार्थी के निवास स्थान के 2 किमी परिधि में राजकीय विद्यालय है परन्तु स्वेच्छा से अध्ययनरत है। ☐
- विद्यार्थी के निवास स्थान के 2 किमी परिधि में राजकीय विद्यालय है परन्तु अपने भाई/बहन/परिवाजन के साथ विद्यालय में अध्ययनरत है। ☐
- विद्यार्थी के निवास स्थान के 2 किमी परिधि में राजकीय विद्यालय नहीं है। ☐

III. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं के लिए–

- बालिका के निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 5 किमी से अधिक है व बालिका साइकिल योजना से लाभान्वित नहीं है। ☐

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

IV. शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 11 एवं 12 की ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के लिए–

- बालिका के निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 5 किमी से अधिक है व बालिका साइकिल योजना से लाभान्वित नहीं है। ☐

V. स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूलों की कक्षा 6 से 8 को उसी पंचायत समिति की बालिकाओं के लिए–

- बालिका के निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 2 किमी से अधिक है। ☐

VI. स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूलों की कक्षा 9 से 12 की उसी पंचायत समिति की बालिकाओं के लिए–

- बालिका के निवास स्थान से विद्यालय की दूरी 5 कि.मी. से अधिक है व बालिका साइकिल योजना से लाभान्वित नहीं है। ☐

VII. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना हेतु विकल्प–

- एसएमसी/एसडीएमसी के माध्यम से सामूहिक परिवहन सुविधा ली जानी है। ☐
- स्वयं के स्तर पर ट्रांसपोर्ट व्यवस्था ली जानी है। ☐

(अभिभावक/संरक्षक के हस्ताक्षर) **(छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर)**

प्रपत्र – 1 (भाग–ख)

(कार्यालय उपयोग हेतु)

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि इस आवेदन में वर्णित समस्त तथ्य मेरी जानकारी में सत्य है। छात्र/छात्रा.....कक्षा..... में अध्ययनरत है जिसका एस.आर. क्रमांक.....है। अतः उक्त छात्र/छात्रा के आवेदन पत्र की जाँच कर ली गई है एवं सभी तथ्य सही पाए गए है। ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना 2021–22 के दिशा–निर्देशानुसार अनुशंसा हेतु SMC के समक्ष प्रस्तुत है।

हस्ताक्षर संस्थाप्रधान

मय सील

प्रपत्र–2

भाग–क

एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा अनुशंसा/अनुमोदन

SMC/SDMC की बैठक दिनांक.....को हुई। बैठक में ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के तहत आवेदन करने वाले निम्नांकित विद्यार्थियों के आवेदनों की जाँच की गई। ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना 2021–22 के दिशा–निर्देश अनुसार निम्नलिखित विद्यार्थियों को योजना का लाभ दिए जाने की अनुशंषा की जाती है–

विद्यालय का नाम.....

क्र. सं.	एस. आर. संख्या	विद्यार्थी का नाम	पिता/ अभिभावक का नाम	कक्षा	बैंक का नाम	आईएफएससी खाता	खाता संख्या

हस्ताक्षर SMC/SDMC **हस्ताक्षर SMC/SDMC**

अध्यक्ष **सचिव**

मय सील **मय सील**

प्रपत्र–2 (भाग–ख)

संस्थाप्रधान द्वारा प्रविष्टि का शाला दर्पण पर अंकन व अनुमोदन/स्वीकृति

ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना हेतु विद्यालय की एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा अनुंशषा उपरान्त प्राप्त प्रपत्र–2 भाग–क के अनुसार समस्त विद्यार्थियों की शाला दर्पण पर ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का लाभ दिए जाने की प्रविष्टि ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना 2021–22 के दिशा–निर्देश अनुसार कर दी गई है। समस्त विद्यार्थियों को ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का लाभ दिए जाने की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

ह. संस्थाप्रधान

मय सील व दिनांक

प्रपत्र–3

पीईईओ विद्यालय/माध्य. विद्यालय/उच्च माध्य. विद्यालय एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा राशि जारी करने का अनुमोदन/स्वीकृति

(ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना का संचालन इसी एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा किया जाना है)

SMC/SDMC की बैठक दिनांक.....को हुई। बैठक में ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना के पात्र विद्यार्थियों को निम्नानुसार ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना से लाभान्वित किए जाने की स्वीकृति/अनुमोदन प्रदान किया जाता है–

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	विद्यार्थी का नाम	पिता/ अभिभावक का नाम	एस. आर. संख्या	कक्षा	अवधि	सुविधा/ ट्रांसपोर्ट वाउचर (1)/ सामूहिक परिवहन (2)	देय राशि

हस्ताक्षर SMC/SDMC **हस्ताक्षर SMC/SDMC**

अध्यक्ष **सचिव**

मय सील **मय सील**

उपयोगिता प्रमाण–पत्र (विद्यालय स्तर)

ट्रांसपोर्ट वाउचर

विद्यालय का नाम.....यू.डाइस कोड.....

विद्यालय का प्रकार– पीईईओ/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय

ट्रांसपोर्ट वाउचर प्राप्त राशि.....दिनांक.....

प्रमाणित किया जाता है कि सत्र 2021–22 में ट्रांसपोर्ट वाउचर राशि रु.....का उपयोग एसएमसी/एसडीएमसी के द्वारा कर लिया गया है। उपयोग की गई राशि.....है एवं शेष राशि..... व पूर्व अवशेष राशि रु.....कुल राशि रु.....बची थी जिसे चालान/चेक/डिमाण्ड ड्रॉफ्ट संख्या.....दिनांक.....द्वारा समर्पित कर दिया गया है/जमा करा दिया गया है, इसका आगामी वर्ष में देय सहायता अनुदान में समायोजित कर लिया जाएगा।

शैक्षणिक सत्र शैक्षणिक सत्र 2021–22 में ट्रांसपोर्ट वाउचर

Rajasthan Education Department

2021-22 में ट्रांसपोर्ट वाउचर की कुल प्राप्त राशि	की कुल उपयोग की गई राशि निःशुल्क सामूहिक ट्रांसपोर्ट सुविधा में	बैंक खाते में सीधे लाभान्वित	कुल उपयोग की गई राशि	विद्यालय में शेष राशि

दिनांक : **हस्ताक्षर एवं नाम**

संस्थाप्रधान

नोट : बैंक से प्राप्त ब्याज का आहरण न करें। इसके लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे।

कार्यालय ब्लॉक........जिला........

उपयोगिता प्रमाण-पत्र (ब्लॉक स्तर)

ट्रांसपोर्ट वाउचर

प्रमाणित किया जाता है कि सत्र 2021-22 में ब्लॉक........... जिला...........के...........प्राथमिक.........उच्च प्राथमिक...... माध्यमिक.......एवं उच्च माध्यमिक.........विद्यालयों को जारी की गई ट्रांसपोर्ट वाउचर की राशि का उपयोग संबंधित संस्थाप्रधान द्वारा ट्रांसपोर्ट वाउचर हेतु परिषद से जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप किया जाकर निर्धारित प्रपत्र में यू.सी. प्राप्त कर ली गई है जिसके आधार पर एकजाई उपयोगिता प्रमाण-पत्र संलग्न कर प्रस्तुत है-

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	डाईस कोड	विद्यालय का प्रकार प्रावि/उप्रावि/मावि/उमावि	ट्रांसपोर्ट वाउचर			वि. वि.
				प्राप्त राशि	व्यय राशि	शेष राशि	
1	2	3	4	5	6	7	8
योग							

हस्ताक्षर **हस्ताक्षर**

सहायक लेखाधिकारी **मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी**

सीबीईओ कार्यालय **ब्लॉक कार्यालय**

उपयोगिता प्रमाण-पत्र (जिला स्तर)

ट्रांसपोर्ट वाउचर

प्रमाणित किया जाता है कि सत्र 2021-22 में जिला.......... को ट्रांसपोर्ट वाउचर मद में प्राप्त राशि रुपये..........में से कुल.......... प्राथमिक, कुल...........उच्च प्राथमिक, कुल ....माध्यमिक एवं कुल............उच्च माध्यमिक विद्यालयों को कुल.......... राशि जारी की गई एवं.............राशि के उपयोगिता प्रमाण पत्र प्राप्त कर कैश बुक की पृष्ठ संख्या...............पर समायोजन किया जा चुका है। उक्त राशि का व्यय परिषद से प्राप्त कर दिशा निर्देशों के अनुरूप ही किया गया है तथा प्राप्त उपयोगिता प्रमाण पत्र के आधार पर जिले द्वारा एमपीआर में मासिक आधार पर व्यय की प्रविष्टि की जा रही है। दोनों राशियों में अन्तर होने पर हस्ताक्षरकर्ता जिम्मेदार है।

हस्ताक्षर **हस्ताक्षर**

सहायक परियोजना समन्वयक/प्रभारी **सहायक लेखाधिकारी**

....

हस्ताक्षर **हस्ताक्षर**

अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक **जिला परियोजना समन्वयक**

....

5. 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के दिशा-निर्देशों के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/अंग्रेजी माध्यम/पूर्व प्राथमिक/2021-22 दिनांक 26.10.2021 ● 1. जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय)-माध्यमिक समस्त जिले, 2. प्रधानाचार्य जिला मुख्यालय महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) समस्त जिले ● विषयः 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के दिशा-निर्देशों के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : शासन उप सचिव प्रथम शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग राजस्थान सरकार जयपुर का पत्र दिनांक : 22.10.2021 ।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बजट वर्ष 2021-22 की घोषणा संख्या 37 की क्रियान्विति के अनुसरण में 33 जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन की स्वीकृति प्रदान की गई है। शासन स्तर से प्राप्त स्वीकृति एवं दिशा-निर्देशों के अनुसरण में उक्त विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन हेतु विस्तृत दिशा-निर्देश निम्नानुसार है-

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन हेतु दिशा-निर्देशः-

1. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन – पूर्व प्राथमिक कक्षाएँ वर्तमान में 33 जिला मुख्यालयों पर संचालित प्रथम चरण के महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) के साथ वर्तमान भवन में संचालित की जाएगी। इस प्रकार से इन विद्यालयों का स्तर पूर्व प्राथमिक से 12वीं तक का होगा।

- **अतिरिक्त कक्षा–**कक्ष की आवश्यकता होने पर विद्यालयवार पृथक से भवन निर्माण हेतु प्रस्ताव राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर को प्रेषित किए जाने है। इस हेतु जिले के समसा कार्यालय के अभियन्ता के साथ समन्वय कर तक मीना व प्रस्ताव अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा के माध्यम से परियोजना निदेशक को भेजा जाना सुनिश्चित करें।

2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें– पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें राजस्थान राज्य एवं शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर द्वारा तैयार किया गया है। पाठ्यचर्या संलग्न की जा रही है। पाठ्यपुस्तकें राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल द्वारा उपलब्ध करवाई जाएगी।

आकलन (Assessment):– पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में आकलन सतत और व्यापक मूल्यांकन पद्धति तथा पाठ्यचर्या में नियोजित अनुभवों पर आधारित होगा। पोषण की स्थिति, दिन-प्रतिदिन के अनुभव कला कार्य तथा अन्य उत्पादों में उनकी भागीदारी व उनका व्यवहार शामिल होगा।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

3. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं हेतु विद्यालय समयः– पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम की अवधि प्रतिदिन 4 घण्टे होगी। इन कक्षाओं हेतु विद्यालय समय निम्नानुसार रहेगा।

पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन समय

शरदकालीन (1 अक्टूबर से 31 मार्च)	10.00 बजे से 02.00 बजे तक (4 घण्टे)
ग्रीष्मकालीन (1 अप्रैल से 30 सितम्बर)	08.00 बजे से 12.00 बजे तक (4 घण्टे)

- पूर्व-प्राथमिक कक्षाएँ सप्ताह में 5 दिन संचालित की जाएगी। शनिवार व रविवार के दिन पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों का अवकाश रहेगा।
- शनिवार के दिन शिक्षकों द्वारा पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम मूल्यांकन करने, अगले सप्ताह के कार्यक्रम की योजना बनाने, शिक्षक अधिगम सामग्री को तैयार करने, अभिभावकों से सम्पर्क करने, पोर्टफोलियों एवं रिकॉर्ड संधारण का कार्य किया जाएगा।

4. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेशः– पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि 3 वर्ष की होगी। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता के साथ प्रथम वर्ष में 3 वर्ष या 3 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को प्रवेश दिया जाएगा। प्रत्येक खण्ड में विद्यार्थियों की संख्या 25 निर्धारित होगी। आस-पड़ोस में रहने वाले बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी, यदि प्रवेश योग्य बच्चों की संख्या उपलब्ध सीटों से अधिक हो तो प्रवेश का आधार लॉटरी द्वारा होगा। महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों में उपरोक्त दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन की जाएगी।

जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश के सम्बन्ध में–

1. जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं हेतु सत्र सत्र 2021-22 के लिए नवीन प्रवेश का कार्य दिनांक 08.11.2021 से प्रारंभ किया जाना है।
2. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश के लिए अधिकतम 25 सीटों का प्रावधान रहेगा।
3. पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश हेतु आस-पड़ोस में रहने वाले बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी, यदि प्रवेश योग्य विद्यार्थियों की संख्या उपलब्ध सीटों से अधिक हो तो प्रवेश का आधार लॉटरी के माध्यम से किया जाएगा।
4. प्रवेश सम्बन्धी कार्य पूर्ण निष्पक्षता एवं पारदर्शिता से निष्पादित करवाए जाने हेतु सम्पूर्ण उत्तरदायित्व संबंधित प्रधानाचार्य का होगा जहाँ प्रधानाचार्य नहीं है, वहाँ वर्तमान संस्थाप्रधान उक्त कार्य करेंगे।
5. समस्त जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश हेतु सत्रः 2021-22 के लिए संबंधित जिले के जिला शिक्षा शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक कार्यालय में पदस्थापित अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक प्रकोष्ठ) नोडल अधिकारी होंगे जिनकी देखरेख में प्रवेश कार्य सम्पादित किया जाएगा।
6. सभी प्राप्त आवेदन पत्रों की पारदर्शी तरीके से प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण कर क्रमवार वरीयता सूची तैयार की जाएगी, जिसे संलग्न समय सारिणी के अनुसार विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जाएगा, जिससे भविष्य में रिक्त होने वाली सीटों को पूर्ण पारदर्शिता से भरा जा सके। प्रवेश प्रक्रिया में राज्य सरकार द्वारा जारी कोविड-19 गाइडलाइन की पालना सुनिश्चित करावे।
7. प्रवेश हेतु आवेदन विद्यालय समय में व्यक्तिशः अथवा संबंधित विद्यालय/जिला अधिकारी द्वारा उपलब्ध कराई गई ई-मेल आई.डी. पर ऑनलाइन किए जा सकेंगे।
8. प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात प्रवेश सम्बन्धी सूचना संलग्न प्रारूप में इस कार्यालय की email id: mgges03@gmail.com पर तत्काल भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।
9. प्रवेश कार्यक्रम हेतु समय सारिणी-

क्र.सं.	कार्यक्रम का विवरण	निर्धारित तिथि /समयावधि
1.	पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र लेने की समयावधि	08.11.2021 से 15.11.2021 तक
2.	पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश हेतु प्राप्त आवेदनों की सूची नोटिस बोर्ड पर चस्पा करना।	16.11.2021
3.	पूर्व प्राथमिक कक्षा Nursery, L.K.G. & U.K.G. के लिए लॉटरी निकालने की तिथि।	17.11.2021
4.	पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में नव प्रवेशित विद्यार्थियों की सूची विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा करना।	18.11.2021
5.	पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश कार्य पूर्ण कर कक्षाएं प्रारंभ करना।	पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का प्रारंभ राज्य सरकार द्वारा कोविड-19 की गाइडलान में पूर्व प्राथमिक कक्षा संचालन अनुमत होने पर किया जाएगा।

5. स्टाफ का चयन

A. शिक्षक

- शिक्षकों का चयन विभाग में पूर्व में से कार्यरत अध्यापक लेवल-1 में से वॉक इन इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।
- अन्य सहयोगी स्टाफ : इन विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के संचालन हेतु प्रति विद्यालय निम्नानुसार सहयोगी स्टाफ की सेवाएं वित्त विभाग के परिपत्र दिनांक 30.04.2018 के अनुसार रहेगी।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

S. No.	Services	No. of Services	Approxiamte per school Annual Expenditure (Rs. in Lacs)
1	Care Taker for pre-primary classes (Nursery L.K.G. & U.K.G.)	2	1.92
2	Peon for primary Classes	1	0.7
3	Cleaning Services	1	0.48
4	Guard	1	0.60

उक्त सेवाओं के लिए उपर्युक्त अनुसार वर्णित मानदेय पर स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल के पैटर्न पर सेवाप्रदाता के माध्यम से सेवा आधारित योग्य स्टाफ की सेवाए प्राप्त की जाएगी।

6. रिकॉर्ड एवं रजिस्टर संधारण:– पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन के लिए सभी आवश्यक रिकॉर्ड तथा रजिस्टर व्यवस्थित रूप से संधारित किए जाएंगे। इन कक्षाओं हेतु पृथक से निम्नांकित रिकॉर्ड एवं रजिस्टर संधारित किया जाएगा।

- प्रवेश रजिस्टर
- स्वास्थ्य रजिस्टर
- प्रगति पंजिका (पोर्टफोलियो)
- शिक्षक दैनन्दिनी
- विविध रिकॉर्ड

इन निर्देशों में समय-समय पर परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन किए जा सकेंगे। पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का प्रारम्भ करने हेतु उपरोक्त दिशा-निर्देशों की पालना में आवश्यक कार्यवाही सम्पादित करते हुए प्रवेश प्रक्रिया यथासमय सम्पूर्ण कर अधोहस्ताक्षरकर्ता को पालना रिपोर्ट से अवगत करवाना सुनिश्चित करावें।

● संलग्न : आवेदन पत्र का प्रारूप।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : नवम्बर, 2021

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
08.11.21	सोमवार	जयपुर	3	हिन्दी	9	मै सड़क हूँ
09.11.21	मंगलवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	1	रिश्तों की समझ
10.11.21	बुधवार	उदयपुर	11	रसायन विज्ञान	2	परमाणु संरचना
11.11.21	गुरुवार	जयपुर	12	हिन्दी साहित्य	2	सुमिरनी के मनके
12.11.21	शुक्रवार	जोधपुर	9	उर्दू (जान पहचान)	3	नादान दोस्त
13.11.21	शनिवार	कोटा		गैर पाठ्यक्रम (बाल दिवस) **No bag Day**		
15.11.21	सोमवार	उदयपुर	12	इतिहास	3	बंधुत्व,जाति और वर्ग
16.11.21	मंगलवार	कोटा	4	पर्यावरण अध्ययन	17	मेले
17.11.21	बुधवार	बीकानेर	7	सामाजिक विज्ञान	8	ईश्वर से अनुराग
18.11.21	गुरुवार	जोधपुर	9	सामाजिक विज्ञान	2	संविधान निर्माण
20.11.21	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम **No bag Day**		
22.11.21	सोमवार	उदयपुर	3	हिन्दी	12	साहसी बालिका
23.11.21	मंगलवार	कोटा	7	सामाजिक विज्ञान	4	वायु
24.11.21	बुधवार	बीकानेर	11	इतिहास	8	संस्कृतियों का टकराव
25.11.21	गुरुवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	14	खाने से पचने तक
26.11.21	शुक्रवार	उदयपुर	6	हिन्दी	14	लोकगीत
27.11.21	शनिवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम **No bag Day**		
29.11.21	सोमवार	बीकानेर	8	संस्कृत	8	संसार सागरस्यं नायका:
30.11.21	मंगलवार	कोटा	10	हिन्दी	3	कारक

● **(इन्द्रा सोनगरा)** प्रभारी अधिकारी शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के कर कमलों से

'गांधी विचार संस्कार परीक्षा' राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह

❒ रवि पारीक

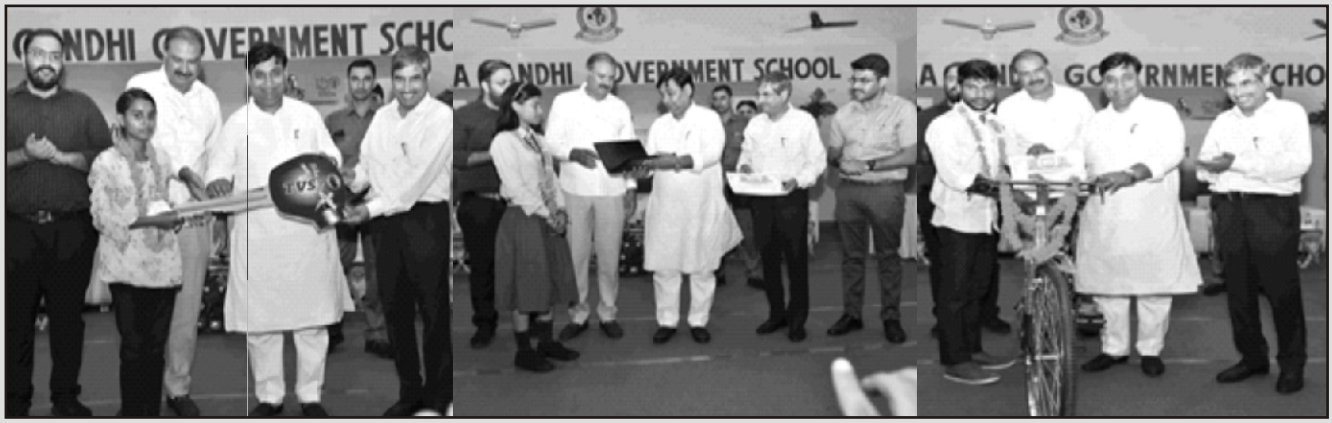

नवम्बर 2019 के आखिरी महीनों में जब गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का आयोजन हुआ तो हर परीक्षार्थी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के मूल विचारों को जानने समझने के लिए ना सिर्फ उत्सुक था बल्कि उनके मन में एक गहरे विचार बीज का प्रस्फुटन था कि जिस व्यक्ति ने पूरी दुनिया को अपना अनुयायी बनाया, ना उसने किसी धर्म का सहारा लिया, ना किसी राष्ट्र को जीत लेने का संदेश दिया बल्कि उस महामानव महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा तथा प्रेम के शाश्वत संदेश को दुनिया के प्रत्येक संवेदनशील हृदय तक पहुँचा दिया। समस्त विश्व के समक्ष भारतीयता को सबसे मजबूती से रखने का कार्य करते हुए महात्मा गाँधी प्रत्येक भारतीय को एक नया आत्मविश्वास दे रहे थे। महात्मा गाँधी का विचार संस्कार प्रत्येक विद्यार्थियों तक अपने मौलिक रूप में पहुँचे। इस उद्देश्य के साथ शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार ने यह तय किया कि एक परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को राष्ट्रपिता के विचारों को पढ़ने, समझने और जीवन में उतारने का अवसर मिलना चाहिए और ये उद्देश्य पूरा भी हुआ। राजस्थान के प्रत्येक जिले में माह नवम्बर 2019 में आयोजित ''गाँधी विचार संस्कार परीक्षा'' में विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया किन्तु परीक्षा के बाद ही कोरोना ने भारत और समूचे विश्व को चपेट में ले लिया। सितम्बर 2021 तक आते आते जब स्थितियाँ थोड़ी सामान्य होने लगी तो माननीय शिक्षा मंत्री महोदय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने अपने गाँधीवादी सरोकारों को साकार करते हुए राज्य के समस्त जिलों में ''गाँधी विचार संस्कार परीक्षा–2019'' के विजेता विद्यार्थियों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया और साथ ही जयपुर जिला स्तर के कार्यक्रम को राज्य स्तरीय समारोह के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया। श्रीमान् निदेशक महोदय द्वारा संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, जयपुर संभाग, जयपुर को राज्य स्तरीय समारोह का नोडल अधिकारी बनाया गया। राज्य स्तरीय समारोह दिनांक 02 अक्टूबर, 2021 को राजकीय महात्मा गाँधी विद्यालय आदर्शनगर जयपुर में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्वयं माननीय शिक्षा मंत्री महोदय मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रफीक खान, माननीय विधायक, आदर्शनगर जयपुर ने की। साथ ही श्री पवन कुमार गोयल अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, डॉ. भँवर लाल राज्य परियोजना निदेशक, समसा और श्री सौरभ स्वामी निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान की गरिमामयी उपस्थिति से सभागार रोशन हो उठा।

इस अवसर पर श्रीमान गोविन्द सिंह जी डोटासरा ने अपने उद्बोधन में शिक्षा समुदाय से आह्वान किया कि वे राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका पहचाने और गरीब के बच्चे को एक सफल बेहतर नागरिक बनाने में अपना योगदान दें। उन्होने गाँधी जी के विचारों एवम् संस्कारों को जीवन में साकार करने को ही सच्ची श्रद्धांजलि बताया। श्री पवन कुमार गोयल ने गाँधी जी को राष्ट्र का सच्चा नायक बताते हुए उनके जीवन को ही उनका संदेश बताया। श्री सौरभ स्वामी ने महात्मा गाँधी को समस्त मानवता की सबसे बड़ी उम्मीद बताया और कहा कि आने वाली सभ्यताओं के हर चरण में महात्मा गाँधी जी प्रासंगिक रहेंगे। समारोह में कुल 114 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया जिनमें से प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिका को स्कूटी, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को लैपटॉप, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को साइकिल एवं शेष 111 विद्यार्थियों को ट्राफी एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया। सम्पूर्ण राज्य में कुल 39 स्कूटी, कुल 44 लैपटॉप, कुल 49 साइकिल तथा कुल 3678 ट्रॉफी–मग दिए गए इस प्रकार कुल 3810 पुरस्कार दिए गए।

कार्यक्रम के अन्त में श्री घनश्याम दत्त जी जाट संयुक्त निदेशक एवं नोडल अधिकारी स्कूल शिक्षा विभाग, जयपुर संभाग, जयपुर ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कचौलिया,
बस्सी, जयपुर **मो. 9799394137**

Rajshri Education Department

अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस

मेधावी बेटियों को किया सम्मानित

❒ पृथ्वीराज लेघा

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस 11 अक्टूबर को जिला स्तरीय कार्यक्रम स्थानीय राजकीय महारानी उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में आयोजित समग्र शिक्षा की ओर से जिला स्तरीय कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवरसिंह भाटी, विशिष्ट अतिथि पूर्व गृह एवं यातायात मंत्री श्री वीरेन्द्र बेनीवाल व अध्यक्षता जिला कलेक्टर श्री नमित मेहता ने की।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में कहा कि राज्य सरकार बालिका शिक्षा के विकास एवं विस्तार तथा महिला सशक्तीकरण के लिए हर संभव प्रयासों में जुटी हुई है तथा जिले की बालिकाओं के लिए उच्च शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में बेटियों के अव्वल रहने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि वे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। पूर्व गृह एवं यातायात मंत्री श्री वीरेन्द्र बेनीवाल ने कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कहा कि बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत जरूरी है कि इन्हें सशक्त, सुरक्षित और बेहतर माहौल मिले। इन्हें कानूनी अधिकारों से अवगत होना चाहिए। बालिकाओं को इसकी जानकारी होनी चाहिए कि इनके पास अच्छी शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य देखभाल का अधिकार है। जिला कलेक्टर श्री नमित मेहता ने कहा कि कुछ बड़ा बनने के लिए अपना लक्ष्य व उद्देश्य बड़ा रखें क्योंकि जिनका लक्ष्य बड़ा होता है उनकी सोच भी उसी के अनुरूप विकसित होती है और अच्छी शिक्षा ग्रहण कर अपना लक्ष्य जरूर पा लेते हैं। अतिरिक्त जिला परियोजना समन्यक श्री हेतराम सारण ने सभी आगन्तुक अतिथियों, बालिकाओं व अध्यापिकाओं का स्वागत उद्बोधन देते हुए कहा कि बालिकाएँ भावुक नहीं, संवेदनशील बनें और अपने लक्ष्य को दिमाग में रखते हुए सफलता अर्जित करें। कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक बीकानेर मण्डल श्री तेजासिंह ने कहा कि हमारी बेटियां बेटों से किसी भी प्रकार कम नहीं है बेटियों को प्रोत्साहन व अवसर मिले तो वे हर स्तर पर सफलता प्राप्त करती है। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री राजकुमार शर्मा ने कहा कि कार्यक्रम की थीम 'मेरी बेटी मेरा सम्मान' है। बालिकाओं को सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री सुरेन्द्र सिंह भाटी ने कहा कि बेटी को वरदान मानकर उसे खूब पढ़ाएं और प्रगति की राह पर आगे बढ़ाएं ताकि वह हमारा अभिमान बन सके। कार्यक्रम अधिकारी श्री पृथ्वीराज लेघा ने कहा कि बेटियाँ प्रत्येक परिवार के लिए अनमोल धरोहर है। कार्यक्रम में सहायक परियोजना समन्वयक सर्वश्री कैलाश कुमार बड़गुजर, कार्यक्रम अधिकारी शिवशंकर चौधरी, रामदान चारण, श्री कृष्ण चौधरी, उमर फारूख, अजय बारहठ, रामचन्द्र विश्नोई, धीरज पारीक, ओमप्रकाश गोदारा, प्रधानाचार्य सुमन आर्य, मोनिका गौड़, स्नेहलता रावत आदि मौजूद रहे।

इस अवसर पर प्रत्येक ब्लॉक से बालिकाओं द्वारा भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी), विज्ञान, गणित, व सामान्य चेतना विषयक स्टॉल लगाए गए व कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई साथ ही प्रत्येक ब्लॉक से अध्यापिका मंच द्वारा स्वास्थ्य, पोषण, कोरोना आदि विषयों पर स्टॉल लगाई गई जिसका सभी आगन्तुकों द्वारा अवलोकन किया गया व काफी सराहना की गई।

इस अवसर पर गंगा बाल विद्यालय की बालिकाओं द्वारा शारीरिक शिक्षिका स्नेहलता रावत के नेतृत्व में आत्मरक्षा प्रशिक्षण का डेमो दिया गया। विभिन्न क्षेत्रों में खेल, शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 125 मेधावी बालिकाओं को प्रमाण पत्र, टी शर्ट व केप देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम अधिकारी
कार्यालय अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक,
समग्र शिक्षा अभियान, बीकानेर
मो. 9929548840

Rajasthan Education Department

मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर!

विद्यालय की बदली तस्वीर

राजस्थान का पहला पर्यटन विद्यालय जालोर जिले के रानीवाडा ब्लॉक का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कागमाला एजुकेशन के पर्यटन डेस्टिनेशन से कम नहीं है। स्कूल को यह मूर्तरूप देने के लिए यहाँ के प्रधानाचार्य नारायणलाल जीनगर के कुशल नेतृत्व में स्वयं संस्थाप्रधान व स्टाफ ने कोरोना काल में विद्यालय समय व शाला समय पश्चात् के समय का सदुपयोग करते हुए मजदूर, कारीगर व कलाकार की भूमिका निभाकर रोजाना 6 से 8 घंटे तक कार्य कर शिक्षण सहायक सामग्री के मॉडल का निर्माण किया जिसमें स्टाफ ने चुनाई, लिपाई, रंगरोगन कर टीएलएम आधारित मॉडल बनाकर विद्यालय को शिक्षा पर्यटन के रूप में विकसित किया।

यहाँ स्काउट मॉडल, स्पोर्ट्स मॉडल, स्टार मॉडल, गणित मॉडल, पृथ्वी सर्कल मॉडल, भारत दर्शन मॉडल, जयहिन्द मॉडल, एबीसीडी मॉडल, सौर मण्डल मॉडल, मानव श्वसन तंत्र मॉडल, मानव हृदय मॉडल, ट्रेन मॉडल, ऐरोप्लेन मॉडल का निर्माण किया साथ ही पर्यावरण संरक्षण हेतु बापू वाटिका व अमृता देवी मॉडल तथा कोरोना जागरूकता अभियान के तहत कोविड वैक्सीन का भी मॉडल बनाया।

शिक्षा सेतु व स्वास्थ्य मदद बैंक की स्थापना : विद्यालय में पढ़ने वाले गरीब व असहाय विद्यार्थियों के लिए स्टेशनरी, पोशाक, जूते-चप्पल, छात्र शुल्क व गंभीर बीमारी से ग्रसित विद्यार्थियों के इलाज करवाने की व्यवस्था उक्त बैंक व भामाशाह के सहयोग से की जाती है। अब तक लगभग तीन लाख रु. की सामग्री का वितरण किया जा चुका है।

कोविड टीकारण जागरूकता मॉडल बना सेल्फी पॉइंट : कबाड़ से जुगाड़ कर विद्यालय की चारदीवारी पर बनाया गया कोविड टीकाकरण जागरूकता मॉडल जिसमें 13 फीट लम्बी इंजेक्शन व 4 फीट लम्बी वैक्सीन बनाई गई है। यहाँ रोजाना 100 लोग सेल्फी लेते नजर आते हैं।

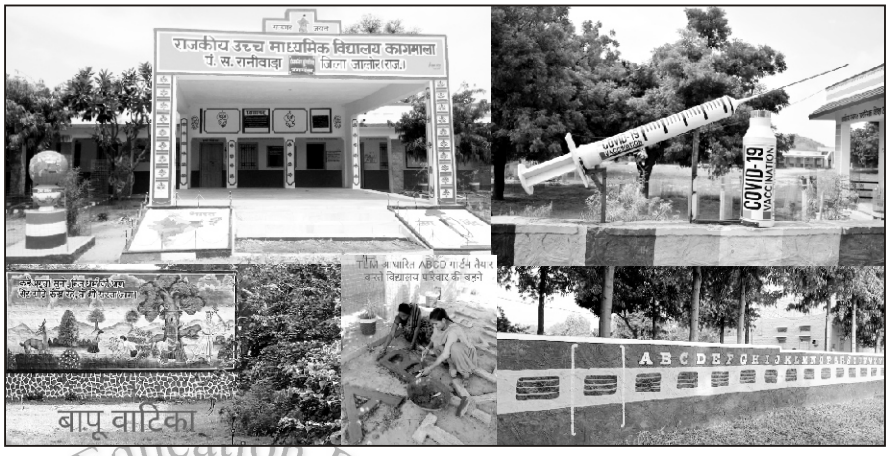

किताबी ज्ञान को मॉडलों के जरिए किया आसान : स्टाफ ने किताबी ज्ञान को मॉडलों के माध्यम से वास्तविकता में उतारा है, विद्यालय में आने वाले नवप्रवेशी विद्यार्थियों हेतु एबीसीडी मॉडल व गणित मॉडल के जरिए विद्यार्थी खेल-खेल में सीखते हैं। वहीं बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु मानव हृदय, मानव श्वसन तंत्र, पृथ्वी सर्कल, भारत दर्शन, गणित मॉडल व सौर मण्डल से पढ़ाई में काफी सहयोग मिला है। साथ ही स्कूल स्टाफ की कड़ी मेहनत से पिछले वर्षों का बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है।

भामाशाहों ने दिल खोलकर किया सहयोग : प्रधानाचार्य व स्टाफ की कार्यशैली से प्रभावित होकर भामाशाहों ने विद्यालय में पीईईओ कक्ष, जल मंदिर, सरस्वती मंदिर, बापू वाटिका, सीसीटीवी, फर्नीचर, चारदीवारी की ऊँचाई बढ़ाना, रंगमंच निर्माण, भोजनशाला निर्माण व स्पीच स्टेण्ड का निर्माण करवाया। प्रधानाचार्य नारायणलाल जीनगर के कार्यकाल में आज तक लगभग 35 लाख रु. के कार्य भामाशाहों के सहयोग से सम्पन्न हुए।

आजीवन भामाशाह : प्रधानाचार्य ने राजकीय पर्व 15 अगस्त व 26 जनवरी पर विद्यार्थियों के लिए मिठाई, भोजन, साउण्ड, लाईट डेकोरेशन व टेन्ट के लिए आजीवन भामाशाह बना लिए हैं।

प्रधानाचार्य व स्टाफ की कड़ी मेहनत से बदली विद्यालय की तस्वीर : प्रधानाचार्य नारायणलाल जीनगर सहित विद्यालय स्टाफ उदमसिंह चाहर, श्रीमती अमिता कुमारी, जेमताराम चौधरी, छगनाराम सुथार, रमेश जीनगर, रगाराम भील, मदनलालन बिश्नोई, चौथाराम, कृष्णलाल, दुर्गेश कुमार, पवन कुमार उज्ज्वल का सहयोग रहा। पर्यावरण संरक्षण हेतु स्टाफ ने 111 ट्री गार्ड व पौधे भेंट किए।

प्रधानाचार्य की कलम से : विद्यालय के नवाचारों से विद्यालय का परीक्षा परिणाम व नामांकन में बढ़ोतरी हुई है। विद्यालय के नवाचारों के मॉडल को देखने विद्यालय समय पश्चात आस-पास के गाँवों से विद्यार्थी, ग्रामीण, शिक्षक बंधु, अभिभावक, संस्थाप्रधान आते हैं तथा कई विद्यालयों में इन नवाचारों को लागू भी किया गया है व मॉडल बनाए जा रहे हैं। आगामी मॉडल जो प्रगति पर है- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, फायर सेफ्टी पोइंट व हैगिंग एबीसीडी। कागमाला विद्यालय को ब्लॉक, जिला व मण्डल स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है तथा विद्यालय आईएसओ. प्रमाणित भी है।

रमेश कुमार जीनगर
व्याख्याता (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कागमाला,
ब्लॉक-रानीवाड़ा, नागौर (राज.)
मो. 7300464268

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पुस्तक समीक्षा

युगान्तर कर्मयोगी

लेखक : प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'; **प्रकाशक** : यूनिक ट्रेडर्स, 250, चौड़ा रास्ता, जयपुर ; **संस्करण** : 2020; **मूल्य** : ₹ 180; **पृष्ठ** : 120

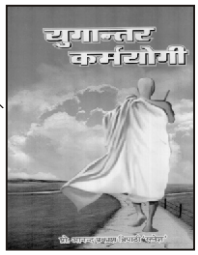

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनू के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एक सिद्धहस्त लेखक हैं तथा इनकी अब तक करीब 54 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। ये दर्शन शास्त्र, जीवनी साहित्य, कहानी, लघुकथा, बालकथा आदि विविध साहित्य विधाओं में लेखन कर रहे हैं। इनका लेखन 60 वर्ष की अवस्था पार कर लेने के बावजूद भी अनवरत चल रहा है। इन्हें देश-विदेश में अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है।

इनकी प्रस्तुत समीक्ष्य पुस्तक 'युगान्तर कर्मयोगी' महान दार्शनिक, विचारक, आध्यात्मिक संत, प्रवचनकार, महाकवि, लेखक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जीवन के संस्मरणों, घटनाओं और जीवनी पर आधारित है। इस पुस्तक को नाट्य कृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सरल भाषा और घटना व विचार प्रवाह के साथ निरन्तर बहता हुआ यह नाटक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जीवन को पुनः जीवन्त बना देता है। इसमें दिए गए चैतन्य सूत्रधार की टिप्पणियाँ इस नाटक को एक ताकत प्रदान करती है। नाटक सूत्रधार से ही शुरू होता है और सूत्रधार के वक्तव्य के साथ ही सम्पन्न होता है। नाटक का प्रारम्भ महाप्रज्ञ के देवलोक को दर्शाते हुए किया गया है। इसके बाद दृश्य बदल कर महाप्रज्ञ के जन्म के समय को रूपांकित किया गया है और इसके बाद सतत उनके जीवन के समस्त महत्त्वपूर्ण घटनाओं के दृश्य एक फिल्म की तरह चलते रहते हैं और अंतिम इच्छा तक पूरा विवरण समेट लेते हैं। इसमें देश की प्रमुख हस्तियों के महाप्रज्ञ के प्रति प्रकट विचारों को भी रेखांकित किया गया है। पुस्तक में राष्ट्रपति अब्दुल कलाम और आचार्य महाप्रज्ञ की मुलाकात और उनके परस्पर वार्तालाप को भी शामिल किया गया है, जिसमें आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व के निर्माण की बात और अहिंसा समवाय मंच की उपयोगिता पर विचार-विमर्श प्रसिद्ध है। इस नाट्यकृति में लेखक ने आचार्य महाप्रज्ञ के सुदीर्घ जीवनयात्रा को बहुत कम शब्दों में मात्र तीन अंकों में समाविष्ट करके भी उसे परिपूर्ण बना दिया है। यह उनकी विशेषता ही कही जा सकती है। नाटक के कथानक के केन्द्र में आचार्य महाप्रज्ञ का जीवनवृत्त है। लघुसंवाद न केवल नाटक को आगे बढ़ाते हैं अपितु पाठकों पर अद्वितीय प्रभाव भी डालते हैं। नाटक के अन्य वैशिष्ट्यों से समलंकृत प्रस्तुत नाटक नाट्यकला की कसौटी पर खरी उतरता है।

पुस्तक की भूमिका का लेखन 'पूर्व रंग' के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने किया है। उन्होंने लिखा है-'इस नाट्यकृति के माध्यम से हम दृश्य-श्रव्य रूप में आचार्य श्री से सहज साक्षात्कार करते हैं। उनके जीवनादर्शों से अभिप्रेरित होते हैं। इस दृष्टि से यह कृति अभिनंदनीय है, मननीय है, पठनीय है और मंचनीय है।' यह लिखना कोई अतिश्योक्ति नहीं बल्कि वास्तविकता भी यही है। पुस्तक में 'स्वकथ्य' के रूप में लेखक के स्वयं के विचार संक्षेप में वर्णित किए गए हैं और अपने लिखे नाटकों की श्रेणी में इसे अपनी श्रद्धा का प्राकट्य बताया गया है। उन्होंने बताया है कि कोरोना काल में लगाए गए लॉकडाउन के समय का सदुपयोग करते हुए उन्होंने इस नाट्यकृति की संरचना की। पुस्तक में अपने एक शिष्य अभिषेक चारण का 'हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास' आलेख शामिल करके नाटक विधा के बारे में विवरण देकर इसे और उपयोगी बनाया गया है, जो विद्यार्थी वर्ग के लिए अधिक लाभदायक सिद्ध होगा। आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' की यह कृति सचमुच महत्त्वपूर्ण है। यह ऐसी कृति है, जिसे पढ़ने मात्र से व्यक्ति में ज्ञान का जागरण होता है। देश की एक महान विभूति के रूप में आचार्य श्री महाप्रज्ञ की जीवनी प्रेरणादायी है। भविष्य में निस्संदेह इस नाटक के मंचन से आचार्य महाप्रज्ञ न केवल पठनीय होंगे, अपितु दर्शनीय भी होंगे। यह पुस्तक तो ऐसी ही है कि इसे पाठ्यपुस्तक के रूप में विद्यार्थियों के अध्ययन में शामिल किया जाना चाहिए। पुस्तक का मुद्रण, पेपर का उपयोग, जिल्द, मुख्य पृष्ठ-सज्जा आदि सभी उत्तम है, जो इसे पाठ्यसामग्री के साथ संग्रहणीय बनाने में सहायक है।

समीक्षक : **जगदीश यायावर**
मालियों का बास, लाडनूं, नागौर (राज.)-341306
मो: 9571181221

अन्तर्ध्वनि

कथाकार : मुरलीधर वैष्णव; **प्रकाशक** : रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर; **पृष्ठ संख्या** : 127; **मूल्य** : ₹200

नामचीन साहित्यकार मुरलीधर वैष्णव का सृजन बहुआयामी है। दो कहानी संग्रह, दो लघुकथा संग्रह, एक काव्य संग्रह, चार बाल कथा संग्रह, एक बाल गीत संग्रह उनकी सृजनात्मक मेधा की नजीर है। जिला न्यायाधीश (जज) जैसे गरिमामय पद पर आसीन रहते उन्होंने जिस मानवीय मूल्यबोध के मद्देनजर साहित्य साधना की है, उसी का प्रतिफल है कि उनको राजस्थान साहित्य अकादमी का विशिष्ट साहित्यकार सम्मान, वीर दुर्गादास राठौड़ साहित्य सम्मान, सुमित्रानंदन पंत बाल साहित्य सम्मान, हिन्दी भाषा भूषण सम्मान सहित करीब एक दर्जन सम्मान व पुरस्कार मिल चुके हैं।

सतत् साहित्य सृजन की इसी शृंखला के तहत 'अन्तर्ध्वनि' शीर्षक से उनका सद्यः प्रकाशित कहानी संग्रह समीक्ष्य है। संग्रह में कुल चौदह कहानियाँ संग्रहीत हैं और प्रत्येक कहानी अपने नवीनतम कथानक के साथ कालखण्ड दर्ज कराती है। कतिपय कहानियाँ ग्राम्य जीवन की मह-मह गंध संजोए हैं, तो कुछेक कथाओं में शहराती संभ्रांतता की अदद खुशबू विद्यमान है।

कहानीकार का यह संग्रह 75 वर्ष की पकी-पगी वय में प्रकाशित हुआ है। अतः उनका वक्त कमाया अनुभव कथानकों में बड़ी

Rajasthan Education Department

शिद्दत और परिपक्वता के साथ गुंफित हुआ है।

'बायां रौ बेरो' यानी बेटियों का कुआं विशिष्ट कथानक की अलहदा कहानी है। सामंती परिवारों में 'नाक की लाज' के रूप में यह कुरीति जीवित थी कि बच्ची पैदा होते ही या तो दूध की भरी बाल्टी में डुबो कर उसकी इहलीला की इतिश्री कर दी जाती थी या फिर नमक की थैली से नासिका रन्ध्रों को बंद कर नवजात को दुनिया से विदा कर दिया जाता था या फिर उसे कपड़ों में लपेट कर अंधकूप में फेंक कर क्रूरता की हदें नाप दी जाती थी।

एक दिन अंधेरा भरी रात्रि में 'बायां रौ बेरो' की ओर बढ़ते हुए क्रूर हाथों से एक इंसान बच्ची को ले लेता है। संतान सुख से वंचित दंपति के घर आई उस बच्ची का स्नेहांचल में लालन-पालन होता है। जवान हो गई दीपा नामक उस लड़की का जीवनचक्र उस वक्त नया मोड़ लेता है, जब उसकी मरणासन्न माँ उसे हकीकत से रूबरू करा देती है। माँ के मरने के बाद वह दोहरी दुखी हो जाती है। वह उस कुएँ को देखने की लालसा लिए गाँव जाती है, जिसमें अनगिनत मासूम बच्चियों की रूह दफन है। रिश्ता जिस्म और जेहन दोनों से हुआ करता है। जब दोनों ही तार-तार होने लगते हैं तो मनुष्य बेवजूद महसूस करता है। कहानी का अगला कर्व दीपा की आहत भावनाओं की ओर है। वह निकुंज नामक युवक जिसे वह अपना जीवनसाथी चुनने का जेहानी निर्णय ले चुकी होती है, वह अपने उज्ज्वल कॅरियर के लिए अमेरिका चला जाता है और बॉस की लड़की के साथ विवाह सूत्र में बंध कर गार्हस्थ जीवन में प्रवेश कर जाता है।

कहानी का अंत दीपा के अंतस की पीड़ा है, जो विस्फोटक है-'उसे लगा वह अभी-अभी जन्मी हो और इस बार कोई जोरावर सिंह उसे उठाकर 'बायां रौ बेरां' में फेंकने में सफल हो गया है।

'पिटोकड़ा' कहानी पीराराम बनाम पीरिया की नैसर्गिक पीड़ा की दास्तान कही जा सकती है। गरीबी की दर में ऐसी दास्तान नियति बनती है। पीराराम का गाँव के जमींदार के घर रहना और बात-बात में पिटना उसकी आदत में शुमार हो जाता है। वह स्कूल गया तो पिटा, स्कूल छूटा तो पिटा। जहाँ गया, वहाँ पिटा और अन्ततोगत्वा 'पिटोकड़ा' संज्ञा में तब्दील होकर रह गया।

जानलेवा गाज तो उस वक्त उसके ऊपर गिरती है तब उसी के गाँव के जमींदार के वारिस के जाल में वह फँस जाता है। दरअसल विजय सिंह मुम्बई जाकर हेरोइन की तस्करी जैसे अवैध धंधे में लिप्त हो ऐशो आराम का जीवन बसर करने लगता है। वह पिटोकड़ा की सेकण्ड हैण्ड गाड़ी में हेरोइन रखवा कर अपने आदमी को साथ भिजवा देता है। गाड़ी पुलिस के हत्थे चढ़ जाने पर विजय सिंह का वह आदमी तो भाग खड़ा ही होता है, पिटोकड़ा भी अपनी गाड़ी छोड़ अंधेरे का लाभ लेकर खदानों की ओर अन्तर्धान हो जाता है। वह यहाँ भी अपने नाम को सार्थक करता है। यानी भगोड़ा रहा तो वक्त से पिटता रहेगा और पकड़ा गया तो पुलिस से पिटेगा ही।

'कूँची कठै' (चाबी कहाँ है) कहानी में वृद्ध महिला की मनोदशा का सस्पेंस समाहित है। परिजनों के द्वारा वसीयतनामा लिखवाने के लोभवश वृद्धा को मारपीट कर खेत में पटक दिया जाता है। यहाँ 'जाको राखै साइयां मार सकै न कोय' की कहावत चरितार्थ होती है। संयोग बनता है कि डॉ. अनिल कार लेकर उधर से गुजर रहे होते हैं। बुढ़िया की बेहोश पड़ी सिसकती देह पर उसकी नजर पड़ जाती है और वह उसे अस्पताल ले जाता है। बुढ़िया सिर की चोट के कारण अवचेतन में चली जाती है और हाथ फैला-फैला बर्राती जाती है-'कूँची कठै? कूँची कठै?'

अस्पताल में भरती कराने के बाद बुढ़िया की तबीयत ठीक होने पर डॉ. अनिल उसे अपने घर ले आते हैं। बुढ़िया की मनोस्थिति चाबी को लेकर यथावत बनी रहती है। डॉ. अनिल उसकी मानसिक स्थिति का मनोवैज्ञानिक हल निकालने की दृष्टि से बुढ़िया की हालात का हवाला देकर समाचार पत्रों में विज्ञापन शाया करवाता है। एक दिन अप्रत्याशित घटित होता है। अन्याय करने वालों को इंसानियत का बोध होता है और प्रायश्चित के साथ रजिस्टर्ड डाक से चाबी और वसीयतनामा पहुँच जाते हैं। बुढ़िया खुशी से चिल्ला उठती है- 'कूँची मिलगी।' हत्या का इरादा रखने वाले का हृदय परिवर्तन हो जाना कहानी का मर्म है।

श्री वैष्णव न्यायाधीश रहे हैं। उन्होंने न्याय विषयक कथानकों का चयन कर कहानियों में न्याय की दरकार भाषित की है। कहानी चाहे वकील के जीवट के रूप में ही अपना वजूद कायम करती हो। 'कोर्ट एड जॉर्नड' ऐसी ही कहानी है जो न्यायाधिपति के इगो और एक वकील के पेशे की निष्ठा से जुड़ी बेजोड़ कहानी है। बेजोड़ इसलिए कि वकील अपने मुवक्किल के केस के लिए जिस साहस के साथ न्यायमूर्ति से न्याय के लिए रूबरू होता है कहानी लाजवाब बन जाती है। वकील बंशीधर जिसमें स्वयं लेखक का ही अक्स प्रतिबिंबित होता है, के जज्बात को दाद दी जा सकती है। वह न्यायाधिपति को ही कठघरे में ला खड़ा करता-'श्रीमान चीफ जस्टिस। आज जो कुछ अदालत में घटा, उसे सुप्रीम कोर्ट में आप साफ-साफ स्वीकार करें। यदि आप खुद को कंटेम्पट ऑफ कोर्ट में दोषी करार नहीं दिए जावे तो मैं अपनी वकालत करना छोड़ दूँगा।' इसे भले एक वकील का दुस्साहस कहा जाए लेकिन वकालत के पेशे से एक नजीर तो कायम होती ही है।

'गोद में चाँद' उम्दा कहानी कही जा सकती है। कुदरत के हाथों कोई कैसे गेंद बनता है और अपने धैर्य, साहस और संघर्ष के बूते कदम-कदम संभलता स्थापित होता है नायिका रश्मि का उदाहरण अनुपम है। नामर्द पति मिलने पर विधिवत तलाक, तलाक शुदा युवक तरुण से पुनर्विवाह, संतान सुख की प्राप्ति से वंचित रहते मेडिकल चैकअप में खुद की काया खामी जैसे सदमे जिंदगी को भंवर बना कर छोड़ देते हैं। कहानी का अंत उस मोड़ पर सुखद बन जाता है, जब अनाथालय से बच्चा गोद लेकर रश्मि और तरुण का जीवन गार्हस्थ बनता है। यहाँ कहानी की सबसे बड़ी ताकत विषमताओं को मात देकर जीवन जीना है।

'दस का नोट' मतलब दिवंगत पति की चिरस्मृति। यानी पचपन साल पहले सुहागरात में मुँह दिखाई में दिया तोहफा। 'दादी इस नोट को चुपके-चुपके देखकर मुग्ध और विह्वल हुई जाती थी कि पोती सारा ने चुप से आकर दादी का राज उजागर कर दिया। दस का वह नोट वृद्ध पत्नी के लिए साँसों से जुड़ी स्मृति है जो उम्र के अंतिम पड़ाव पर आकर अप्रतिम हो जाती है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि प्रेम अंतस के जख्म की तरह होता है जो दर्द नहीं करता, रह-रह याद आता है। कहानी में सस्पेंस का जो पुट है, वह इसी दर्द के अन्तर्द्वन्द्व में सन्नद्ध है। इसे नैसर्गिक रिश्ता भी कहा जा सकता है।

Rajasthan Education Department

संग्रह की 'अपात्र' और 'डिनर' दो ऐसी कहानियाँ हैं, जो अपने सादगी भरे अंदाज में पाठकों से तादात्म्य स्थापित करती हैं। व्यवस्था के प्रति विरोध के जो तेवर हैं उनका आकलन करते इन्हें प्रतिरोध के स्वर की कहानियाँ भी कहा जा सकता है।

'अपात्र' कहानी प्रथम पुरुष में सृजित है। यहाँ 'मैं' का जात-पात जैसी कुप्रथा की मुखालफत करना मुखर होता है। 'मैं' का स्वाभिमान अपने ध्येय अडिग रहता है। उसको जनेऊ पहनने के लिए अपात्र करार दिए जाने का महज इतना सा हेतुक सामने आता है कि वह अपने दलित दोस्त श्यामलाल के साथ बैठकर भोजन कर लेता है।

कहानी में जो अगला दृष्टांत साक्षात होता है, उसे कहानी के प्रतिमान की स्थापना के रूप में आंका जा सकता है। यही कहानी की धुरी है। कहानी नए मोड़ पर आकर पाठक की अंगुली पकड़ती नजर आती है। 'मैं' के दकियानूस पिताश्री जब मरणासन्न हो जाते हैं और उनके लिए 'ओ' नेगेटिव ग्रुप का लहू ब्लड बैंक तक उपलब्ध नहीं होता है तो वही श्यामलाल अपना रक्तदान कर उनकी जान बचाता है।

कहानी का अंत 'मैं' के पिताश्री के हृदय परिवर्तन का द्योतक है। उनके कहने पर पंडित 'मैं' को पुकारता है-'डाक्साब आ जाओ जनेऊ तैयार है।'

इसी प्रकार 'डिनर' नामक कहानी में कथानायक जो एक बड़ा अधिकारी है, का रिक्शावाला के साथ भोजन करना और उसे आत्मीयता से विभोर कर देना कहानी की सच्चाई है। कहानी में ऊँच-नीच, अमीर-गरीब की खाई को पाट कर इंसानियत का पाठ ज्ञापित है। यहाँ पाठक का 'मैं' की सदाशयता से आत्मसात करना कहानी की ताकत कही जा सकती है।

इसी प्रकार 'उड़ता तीर', 'आणची', 'दूध से पेट्रोल तक', 'केशर कश्मीरा', 'अंगूठो बोलेगो' कहानियाँ भी मानवीय मूल्यों का सृजन कराती हैं, जो अपने भावबोध के कारण पहचानी जाएगी।

अंत में यह कहना समीचीन जान पड़ता है कि आंचलिक शब्दावली, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरों के उपयुक्त समावेश से कहानियाँ चित्रात्मक बन पड़ी हैं। कई कहानयों में तो इतने सुंदर बिंब और प्रतीक उभर कर साक्षात होते हैं कि कथाकार के कलम कौशल को दाद दिए बगैर नहीं रहा जा सकता है।

समीक्षक : **रत्नकुमार सांभरिया**
भाड़ावास हाऊस, सी-137,
महेश नगर, जयपुर-302015
मो: 9636053497

अग्निपाखी

कवि : विजय सिंह नाहटा; **प्रकाशक :** सुराणा पब्लिकेशंस, बीकानेर; **संस्करण** : 2020; **पृष्ठ संख्या :** 136; **मूल्य :** ₹200

हिंदी के नामी कवि मदन कश्यप का मानना है कि ''कविता अपने सर्वोत्तम रूप में टकराहटों में ही प्रकट होती है। चाहे वह टकराहट समय की विडंबनाओं और समाज की विद्रूपताओं से हो अथवा स्वयं कविता या भाषिक रूढ़ियों से।'' निश्चय ही यह एक विचारोत्तेजक अभिमत है। सर्वोत्तम को लेकर अपना-अपना नजरिया हो सकता है मगर इसमें दो राय नहीं है कि विडंबनाओं और विद्रूपताओं का प्रतिरोध कविता का मूल स्वभाव है। सम्भव है कि प्रकृति और जीवन सौंदर्य के प्रति अनुराग कवि से उसका श्रेष्ठ निकलवाने का हेतु बने मगर यहाँ भी वह दृष्टि की सीमाओं को लांघ कर मौलिक क्षितिजों का सृजन करता है।

कविता के संबंध में इस चिंतन का मूल है वरिष्ठ कवि विजयसिंह नाहटा का सद्यः प्रकाशित कविता संग्रह 'अग्निपाखी'। 'अनिर्वचनीय' शीर्षक से किताब के कवर के पृष्ठ भाग में प्रकाशित भूमिका में स्वयं कवि इस चिंतन को विस्तार देते हुए एक नया आयाम देता है, ''अनुभूति की सघनता के अलग-अलग स्तरों, कथ्य की अनंतानंत भंगिमाओं और रचना के उत्प्रेरक तत्वों की सर्वथा नवीन संवेदन संस्कृतियों के निवेश से हर रचना नवीन और सर्वथा अद्वितीय कृति है। अतः एक दृष्टि से हर रचना अंतिम निष्कर्ष होती है, विमर्श की अनंतानंत दीप्तियों को धारे हुए।''

अब बात कविताओं के वस्तु-विन्यास की। विजय सिंह नाहटा का कवि मन अपने इर्द-गिर्द की दुनिया का पर्यवेक्षण करते-करते दर्शन की भाव भूमि पर जा पहुँचता है। यह बाहर भीतर की अंतहीन यात्रा है जो जिज्ञासाओं और सवालों के रूप में कविताओं में प्रकट होती है। कविता पढ़ते हुए पाठक भी प्रकारांतर में इस यात्रा का हिस्सा बन जाता है। संदर्भ के लिए किताब की शीर्षक कविता को ही लिया जा सकता है- ''कई-कई बार टूटता है कवि/ कई-कई बार आबाद होती जाती दुनिया/ कई-कई बार खाली होता कवि भीतर से/कई-कई बार सरसब्ज होता/दुनिया का आंचल।'' (पृ.9) कविता की आग में जलकर कवि का भस्मीभूत होना और रचना की बारिश तले फिर से प्रज्वलित हो जाना कोई काल्पनिक बिम्ब भर नहीं है बल्कि कविता की शाश्वत-सनातन यात्रा की मौलिक झाँकी है। काव्य यात्रा को शब्द सौंपती एक अन्य छोटी-सी कविता भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है, जिसमें दुनिया को श्रेष्ठ सुंदर बनाने का कलाओं का ध्येय अभिव्यक्त हुआ है- ''एक क्षण में हूँ/ रहूँ तन्मय उसी में/ रचाऊँ उसी की कोख में सूर्योदय/ बसाऊँ स्वर्ग से सुंदर/ अदद दुनिया।''(पृ.21)

इस संग्रह के कवि कविता के लिए केवल सीधी राह पर ही नहीं चलते बल्कि उन दुर्गम ढलानों-चढ़ावों तक भी पहुँचते हैं जो अक्सर छोड़ दिए जाते हैं। ये दुर्गम क्षेत्र बाहरी नहीं है बल्कि मन के वे ओने-कोने हैं जहाँ आस्थाओं और स्मृतियों के जाले जमे हुए हैं। नाहटा का कवि किसी धारणा का अंधानुकरण नहीं करता। वह अपने दृष्टिकोण को निरंतर वक्त की कसौटी पर कसता रहता है। एक बानगी द्रष्टव्य है- ''समय की रेत पर मढ़े हुए/ एक थाती की तरह/ जिसे होना था मंडित/ वह किसी मान्यता में नहीं संचित/ महज- मेरी धुंधली स्मृति में/ अब भी जीवित है उसका नायकत्व/ सोचता हूँ- मेरे बाद/ दृश्य के भीतर दृश्य के बाहर/ कौन होगा?''(पृ.99)

प्रकृति के साथ कवि का तादात्म्य अकारण नहीं है। महानगर में निवास और विभिन्न नगरों में राजकीय दायित्व के निर्वहन के सिलसिले में प्रवास के बावजूद कवि का अंतस मरुकांतर अंचल बीकानेर में स्थित अपनी जन्मभूमि ग्राम कालू से प्राण-ऊर्जा ग्रहण करता है। इन कविताओं में रेगिस्तानी प्रकृति से लिए गए सशक्त बिम्बों और प्रतीकों का विधान बचपन की संचित स्मृतियों का हासिल है।

Rajasthan Education Department

'बीकानेर में बसंत', 'थार में कहीं-कहीं', 'बारिश को निहारते हुए कविताएं', 'आसाढ़' आदि कविताओं में मरु प्रकृति अपनी पूरी सज-धज के साथ मौजूद है, जो इस धारणा की पुष्टि करती है।

'पोस्टकार्ड' एक अलग भावबोध की कविता है जिस का विशेष उल्लेख जरूरी है। संचार माध्यमों की विकास यात्रा में आज भले ही पोस्टकार्ड अप्रासंगिक होता नजर आ रहा है मगर कवि की इस अभिव्यक्ति से कोई कैसे असहमत हो सकता है-''तमाम खौफनाक विचारों से इतर/ सोच की तंग राहों से बाहर/ गोपनीयता की अदृश्य कोटर से झांकती/ खुले पोस्टकार्ड पर अंकित समाचार की/ पीठ पर तैर रही दुनिया/ इस विकट समय में/ क्या प्रेम का प्रथम विमोचन है?''(पृ.74)

नोबल समादृत नाईजीरियाई कवि वोले शोविंका, ख्यात कवि मुक्तिबोध, नामी लेखक विष्णु खरे का स्मरण कवि के साहित्यिक सरोकारों का द्योतक है। कहना न होगा कवि के रचाव के कई रंग हैं। डॉ. सत्यनारायण के शब्दों में विजय सिंह नाहटा की कविताओं में विस्मय-विमुग्ध करने वाली प्रश्नाकुलता भी बराबर मौजूद है- संभवतः यही वह कारक है जिसमें ये कविताएँ एकांगी न होकर विविधता वर्णी है। कुल मिलाकर अग्निपाखी की कविताएं जीवन के बाहर भीतर को टटोलती, परखती अंततः जीवन सौंदर्य और मानवीय गरिमा को प्रतिस्थापित करने वाली जरूरी कविताएं हैं।'' इस सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए कवि और सुराणा पब्लिकेशंस बधाई के हकदार हैं।

समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर
मो. 9982502969

प्लॉट नंबर 203

लेखक : राजेंद्र जोशी; **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, बीकानेर; **संस्करण** : 2020; **पृष्ठ संख्या** : 96; **मूल्य** : ₹200

समय के साथ डग भरती पुस्तक 'प्लाट नंबर-203' की पंद्रह कहानियाँ ज़िन्दगी, समाज और व्यक्ति से सवाल करती हैं। पाठक के जहन में विचारों की एक धारा बह निकलती है जो समाज में व्याप्त विसंगतियों के समाधान तक ले जाने को प्रोत्साहित करती हैं। बोधगम्य भाषा व शैली की इस साहित्यिक कृति की विवेचना कथानकों के विभिन्न तारों के धुनों के सन्दर्भ में हो।

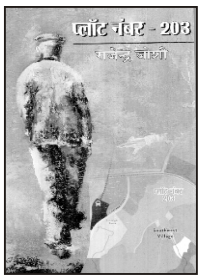

इन कहानियों में बीकानेर की महक है, कोटगेट, जोशीवाड़ा, देशनोक का मंदिर है तो रेत के धोरे भी हैं, प्रसिद्ध नमकीन भुजिया का स्वाद भी घुला है। वक्तव्य 'शहर के कुएँ, बावड़ी, मंदिर ऐसे ही सेठों ने बनवाए होंगे' उल्लेखनीय है। अपनायत संस्कृति की झलक लिए 'डॉ रजनी' का एक मोची से 'मुकेश चाचा' वाला 'अनकहा रिश्ता' या कहानी 'पुरखे' में हाजी-तपसी और अहमद-महाराज सरीखे संबोधन कोई अतिश्योक्ति नहीं।

कहानी 'पुरखे' में शहर की आत्मा के दर्शन कराते हुए लेखक कहते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम एक दिवार के सहारे रहते हैं। बीकानेर तो वह जगह है जहाँ राम-रहीम एक ही घर में रहते हैं। शहर के पाँच सौ बत्तीस वर्ष के इतिहास में न कभी कर्फ्यू लगा न दंगे-फ़साद नहीं, पर कोरोना के कारण।

'प्लाट नंबर 203' कहानी-संग्रह नायिका प्रधान कहानियाँ संजोये हुए हैं। प्रोफेसर, सर्जन, डॉक्टर, रंगकर्मी, सामाजिक कार्यकर्ता, कृषि विश्विद्यालय से पढ़ी, तो कोई विद्यार्थी, कोई गृहकार्य सहायिका, कोई वैश्या। सभी नायिकाएं सुदृढ़ चरित्र और सुलझे विचारों की हैं जो परिवार को रेशमी धागों से बांधती हैं, समाज में क्रान्तिकारी बदलावों की वजह बनती हैं।

सकारात्मक नजरिये के धनी राजेंद्र जोशी घटित के संग समाज के विकास हेतु जो घटना चाहिए वह भी कथानक में बेहतरीन ढंग से ढालते हैं। पुनर्विवाह, संतानोत्पत्ति में अक्षमता का बोझ केवल वधू पर डालने के कुचलन या अनाथ बच्चों को गोद लेने की बात, पढ़ा-लिखा कर उज्ज्वल भविष्य प्रदान करना आदि क्रांतिकारी बातें कहानियों में इतने सहज रूप से घटित होती चली जाती है कि पाठक वह नहीं रह जाता जो 'प्लाट नंबर 203' पढ़ने से पहले था।

'सन्नाटा' समाज में वर्गभेद, बेटे-बहू में फर्क करना, बाँझ जैसे विशेषणों के प्रयोग पर ऊँगली उठाती है। 'संकल्प' पुनर्विवाह की समस्या पर कारगर उपाय सुझाती कहानी है। रिश्तों की खटपट, दो पीढ़ियों की खाई दिखाती कहानी 'सुबह की चाय' में ज़िन्दगी भर आनंदपूर्वक कर्त्तव्यों का निर्वहन करने वाले काका की जीवनसंध्या एक मार्मिक मोड़ लेती है।

पुस्तक की शीर्षक कहानी 'प्लाट नंबर 203' खेतों, बस्तियों, श्मशानों को लीलते शहर की कहानी है। उपजे अन्धविश्वासों के सहारे दलालों की खोटी कमाई का जरिया बन चुके प्लाट नंबर 203 के भी आखिर दिन फिरे।

समाज, धर्म, प्रशासन, राजनीति, सबकी पाखंड भरे सतहों को उधेड़ती चलती हैं ये कहानियाँ। साहित्य वही जो समाज के मन की गुत्थियों को शब्द दे और धीमी-धीमी थाप देता हुआ बेहतर, सुघढ़ और सुखकर बना दे. 'झटके का मीट' कहानी में अकडू देवी यूँ तो नीची जात की काम वाली से छुआ जाने पर हंगामा मचाती हैं, वहीं अपने जिह्वा के स्वाद के लिए सबसे छुप कर उसी श्यामली से दोस्ती भी गांठती हैं। कहानी 'तीन घरों का मंदिर' धर्म और राजनीति पर गहरा तंज है. इस कहानी की तीन नायिकाएं हैं जो अपने कर्मों से साबित करती हैं कि गरीब, असहाय की सेवा ही सच्चा धर्म है।

समाज के कुचक्र में फंसी 'सयानी बाई' का विश्वास दिल और प्रेम की बातों से उठ गया है। परन्तु 'कमला' भरोसा करती भी है तो पित्रसत्तात्मक समाज फिर उसे धूल चटा देता है।

दो पीढ़ियों के बीच टकराहट स्वाभाविक है। लेकिन अनुभव, धीरज, प्रेम और बलिदान खुशियाँ लाते है। देश, दुनिया, समाज में कितने ही बच्चे हैं जो महामारी, प्राकृतिक आपदा या अन्य कारणों से अनाथ रह गए हैं। गोद न भरने की शारीरिक अक्षमता को लेकर कलेश से बेहतर है बुद्धिमता का परिचय देते हुए 'मातृत्व-सुख' प्राप्त करें। कहानी 'सन्नाटा' समाज के दोगलेपन पर ऊँगली उठाती है। समाधान के रूप में कहानी 'भर गई गोद' में लारा ने सूने आँगन की फुलवारी महका सास-ससुर के जीवनसंध्या में आलोक भरा।

अपनी प्रतिभा के बल पर छोटे शहर की बड़ी अदाकारा बनी 'सुनयना' समाज के निचले तबके का कितना ही भला करती 'उम्मीद का पर्याय' बन गई हो परन्तु शहर के शोहदे, पुलिस, सेठ और मंत्री तक उसका शोषण करते हैं। निजी स्वार्थों के लिए एनकाउंटर तक की योजना बनाते हैं। एक संवाद देखिये, पहले पुलिस अफसर और नेताजी, इन दोनों ने ही देश को लूटा, खाया

Rajasthan Education Department

और अब मुझे....नेताओं-पुलिस से पंगा नहीं लेना चाहिए. महंगा पड़ जाता है।

प्रतिभाओं को सम्मानित जीवनयापन देने में यह समाज, देश अक्षम साबित होता आया है। कितने ही ख्यातनाम कलाकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवियों को जीवनसंध्या में रोटी-रोटी को मोहताज होने की खबर अक्सर अख़बारों में पढ़ते हैं हम। कहानी 'डॉ. कोकड़े' कहानी उन अभिभावकों पर कटाक्ष है जो बेटे की परवरिश और महंगी उच्च शिक्षा के खर्चे की भरपाई के तौर पर ऊँचा खानदान और मोटा दहेज़ चाहते हैं। डॉ कोकड़े की लालची प्रवृति पर उनकी श्रीमती अंकुश लगाती आई है तथा बेटे में आदर्शों का सफलतापूर्वक बीजारोपण किया है।

कहानी 'मतदाता जेल में' चुनावी गुंडागर्दी पर प्रहार है। रैलियों और सभाओं की हकीकत और चन्दा संग्रहण का सटीक चित्रण है। बानगी देखिये, वोट तो हम तुम्हारे सुबह-सुबह ही डाल देंगे। तुमको वोट देने की नहीं कह रहे हैं। अभी भी समय है चंदा जमा करवा दो प्रोफेसर और शाम को मीटिंग में आ जाना। समझ गए न !

कहानी 'पुरखे' की ही तरह कहानी 'जीत लिया कश्मीर' में रेखांकित किया गया है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। बुरी राह पर चल पड़े लोगों से भी लेखक प्रेम से ही पेश आना चाहते हैं। 'प्रेम से ही प्रेम उपजेगा !' पात्र फ़रीदा से कहलवाते हैं, गलती का अहसास करवा कर भटके इंसान को मुख्यधारा में लाना ही महादेव का उद्देश्य है।

रिश्तों के ताने-बाने की खट्टी, मीठी, कड़वी संवेदनाओं को अपने आस-पास से ही बटोरा है, शब्द दिए हैं। सहज-सरल भाषा में अभिव्यक्त ये कहानियां आधुनिक भावबोध लिए हुए है। पहनावे, साज-शृंगार से सुसज्जित ही नहीं उच्च शिक्षा, विचारों में व्यापकता लिए हैं पात्र। नवयुवाओं में स्वाभाविक प्रेम, रोज अपनी डाक खोलती, पढ़ती डॉ रजनी कोटगेट पर मोची से स्नेहभाव भी रखती है तो मोबाइल पर मेल चेक करती, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में पेपर भी पढ़ती है। 'नई बहु' कहानी में नवेली बहु किस तरह चौगुनी फसल लेती है और क्यों रौबदार दादी अपनी सत्ता सौंप देती है जानना दिलचस्प होगा। आपके पात्र धर्म, जाति से ऊपर इंसानियत और काबिलियत को तरजीह देते हैं। माता -पिता, सास-ससुर की सेवा करती संतति अंधविश्वासों को परे धकेल श्मशान में वेलफेयर चिकित्सालय का निर्माण करने का निर्णय लेती हैं। बाँझ अब लिंगभेदी शब्द नहीं रह गया और निःसंतान होना अभिशाप नहीं, अनाथ बच्चों के जीवन को संवारने का अवसर है।

मायड़ भाषा के झंडाबरदार जोशी जी निस्संदेह हिन्दी भाषा के भी संरक्षक हैं। लेकिन आम बोलचाल में घुसपैठ कर चुके अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग खलता है। एक उदाहरण - अब हम पूरे होपफुल हैं कि पेशेंट को शीघ्र ही रिलीफ मिल जाएगा।

इन कहानियों के माध्यम से कथाकार एक स्वप्नलोक गढ़ते हैं। एक-आध कहानी या एक-आध पात्र यथार्थ हों मगर यहाँ सभी की सभी कहानियाँ और पात्र आदर्शों की ऊंचाइयों को छूते हैं (खासतौर पर अंतिम कहानी 'मतदाता जेल में')। बेशक पात्र एवं कथानक अपने ही परिवेश से उठाये गए हैं मगर छौंक आदर्शवाद का लगाया गया है। पाठक कह उठता है, हाँ, यही होना चाहिए!

आदरणीय राजेंद्र जोशी जी को एक विचारप्रेरक कहानी-संग्रह हेतु बधाई देते हुए कामना करती हूँ कि आदर्शों की जिन ऊंचाइयों पर आप समाज, देश और नागरिकों को ले जाना चाहते हैं वहाँ हम अवश्य पहुँचें। आपकी ही पात्र शम्मी के शब्दों में-'लेखक महोदय! आपके शहर जैसे दूसरे शहर क्यों नहीं हैं ? (पुरखे)

समीक्षक : **कविता 'मुखर'**
84, अर्पित नगर, वैशाली नगर, जयपुर
मो. 9829087683

गिफ्ट ए बुक : शिविरा की नवाचारी पहल

आदरणीय निदेशक महोदय के कुशल व संवेदनशील नेतृत्व में शिविरा की नवाचारी एवं प्रोत्साहनकारी पहल की श्रृंखला में 'गिफ्ट ए बुक' नवाचार का शुभारंभ किया जा रहा है जिसके तहत समसा द्वारा प्रतिमाह विभिन्न कार्य निष्पादन प्रतिमानों के आधार पर जिलों की परफोरमेन्स आधारित रेंकिंग में जो जिला प्रदेश भर में प्रथम रहेगा उस जिले के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समसा ; जिले में प्रथम स्थान प्राप्त ब्लॉक के मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी तथा साथ ही संबंधित ब्लॉक परिक्षेत्र का वह विद्यालय जो ब्लॉक में प्रथम रहा हो (जिसका प्रमाणीकरण मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा किया गया हो) उस विद्यालय के संस्थाप्रधान को शिविरा पत्रिका में प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली विभिन्न शैक्षिक, साहित्यिक, बालोपयोगी व ज्ञानवर्द्धक समीक्षित पुस्तकों की एक-एक प्रति उक्त नेतृत्वकर्त्ताओं को श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए सम्मान स्वरूप भेंट की जाएगी। जिन्हें संबंधित अधिकारीगण स्वयं पठनोपरांत अपने कार्यालय या विद्यालय के पुस्तकालय में शिक्षकों, कार्मिकों व छात्र-छात्राओं के पठनार्थ उपलब्ध करवाएंगे ताकि पठन-पाठन की प्रवृत्ति का विकास हो सके।

-वरिष्ठ सम्पादक

मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर!

शिविरा पत्रिका में 'मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर!' के नाम से स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया गया है, जिसमें शिक्षक स्वयं रिपोर्टर की भूमिका में होंगे जो अपने कार्यरत विद्यालय के नवाचार, उत्कृष्ट शैक्षणिक-सह शैक्षणिक गतिविधियों, भामाशाहों-दानदाताओं के सहयोग से विद्यालय के संस्थागत विकास, पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन के अनुपम कार्यों तथा विद्यालय स्टाफ के ऐसे अभिनव कार्य जो प्रेरकीय-अनुकरणीय हो, की रिपोर्ट मुद्रित अथवा सुपाठ्य हस्तलिपि में मय फोटोग्राफ्स संस्थाप्रधान से प्रमाणित करवाकर स्वयं के नाम, पद, कार्यरत विद्यालय का नाम मय मोबाइल नम्बर शिविरा पत्रिका के ई-मेल shivira.dse@rajasthan.gov.in अथवा वरिष्ठ संपादक, शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011 के पते पर भिजवाएँ ताकि शिविरा पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित की जा सके।

-वरिष्ठ सम्पादक

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

अपनी राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

बाल दिवस

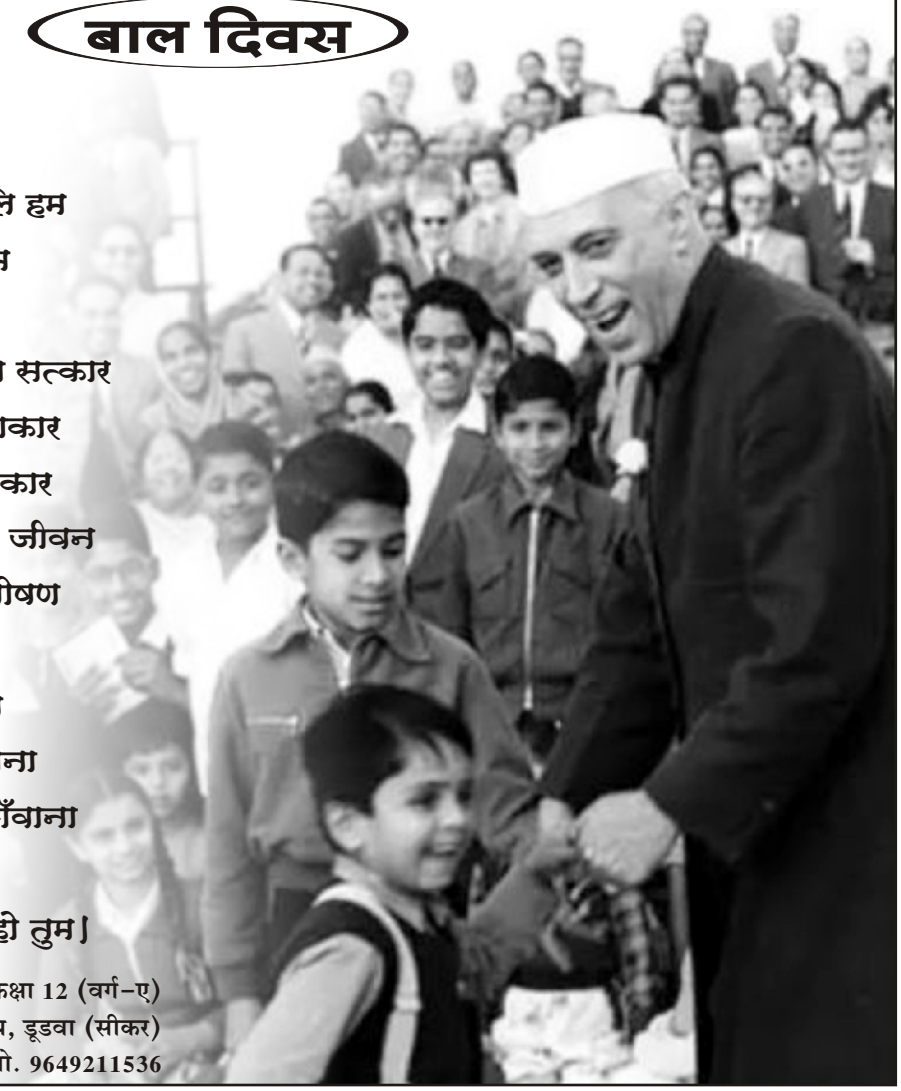

आता है हर वर्ष ये दिन
झूमें नाचें बच्चे संग-संग
देते चाचा नेहरु को श्रद्धांजलि हम
थे ये देश के प्रधानमंत्री प्रथम
करते थे बच्चों से प्यार
हर जयंती पर होता बच्चों का सत्कार
कच्ची मिट्टी है बच्चों का आकार
सच्चे साँचे में ढले यही है दरकार
ना हो अन्याय से भरा इनका जीवन
प्रतिज्ञा करो न करोगे बाल शोषण
नन्ही सी कलि है ये।
भारत का खिलता कमल है ये
बाल दिवस पर है इन्हें सिखाना
जीवन अनमोल है यूँ ही ना गँवाना
देश के भविष्य हो तुम
शक्तिशाली युग की ताकत हो तुम।

रोनक, कक्षा 12 (वर्ग-ए)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, डूडवा (सीकर)
मो. 9649211536

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

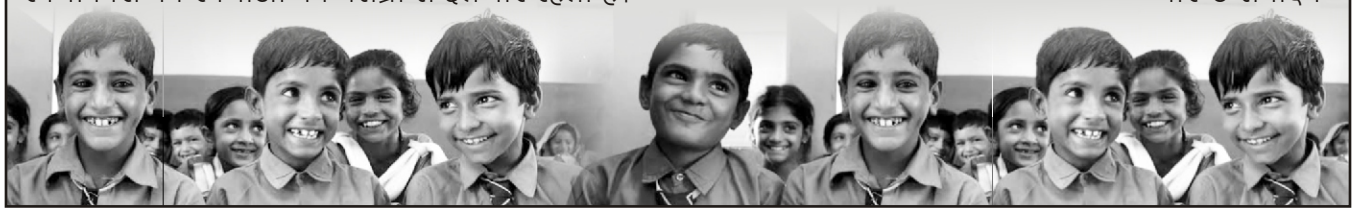

आजादी

तुम जानो कीमत आजादी की
जिसको पाने में जाने
कितनों ने शहादत पाई थी
कुछ ही तो लौट कर आए थे दहलीज पर
बाकी ने वीर गति पाई थी
चरखे ने किया था आंदोलन
और सच्चाई की चली इक लाठी थी
नींव हिली थी अंग्रेजों की
लाल बाल पाल ने लड़ी वो लड़ाई थी
छाती से लगाकर लाल को जो
लड़ती रही आजादी को
याद करो तुम उनको वो रानी लक्ष्मीबाई थी
सैनिक हो कर अंग्रेजों के भी
मंगल पांडे ने विद्रोह की लड़ी लड़ाई थी
सींच सींच कर खून से देश को
सुभाष चन्द्र बोस ने दिलाई आजादी थी
मना रहे हो जश्न तुम जिस आजादी का
उसको पाने में कितनी ही मुश्किल आई थी
जाने कितने वीरों की कुर्बानी
पर देश ने पाई आजादी थी
नमन करो तुम उन्हें आज
जिन्होंने झूल कर फांसी पर
देश को दिलाई आजादी थी
जान तो कर दी थी नाम वतन के
बस देह तिरंगे में लिपटी घर आई थी
एक आंसू तो भरो आंख में याद में उनकी
जिनकी देश के नाम....
वतन के नाम जिंदगानी थी ।

सुभाष गर्ग, कक्षा 11
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमाणा का गोलिया (जालोर)
मो: 9610714084

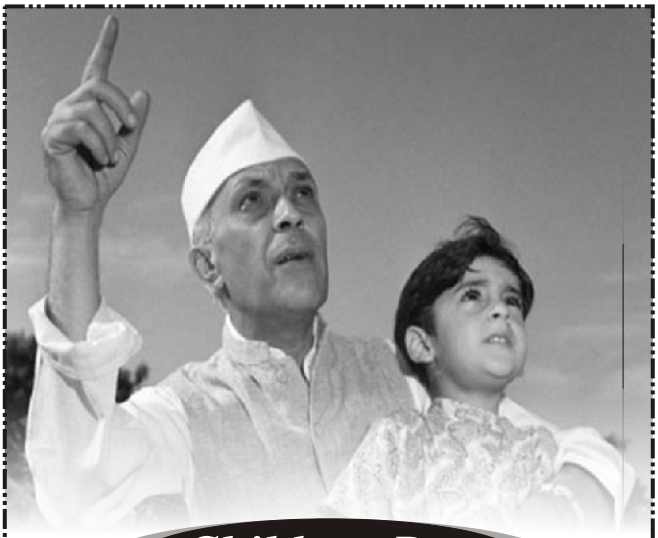

Children Day

- Jawaharlal Nehru was the first Prime Minister of India. He was also known as people's P.M. and Chacha Nerhu.
- J.L. Nehru's birth date November 14 is celebrated as Children Day (Bal Diwas) after his death in 1964.
- J.L. Nehru loved children and saw the picture of India through the eyes of them.
- J.L. Nehru once said, "The children of today will make the India of tommorow. The way we bring them up will determine the future of the country."
- J.L. Nehru always emphesized upon increased awareness about the rights and education of children.
- Children called J.L. Nehru as 'Chacha Nehru'.
- It's a tribute to 'Chacha Nehru' by remembering him on Children Day.

Happy Children Day!

Amish Saini, Class-VII
M.S.S. Public School
Kishangrh (Ajmer)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस समारोह का आयोजन

जोधपुर– अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापनगर, जोधपुर में आयोजित समारोह मे मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ अय्यूब खान रहे। समारोह में भामाशाह श्री ओम प्रकाश जी चौहान, श्री टीकमदास जी चौहान, डॉ. सी.पी. चौहान, जुगल किशोर चौहान, डॉ. एच. आर. गोयल, पार्षद वार्ड 8 श्री भरत आसेरी द्वारा विद्यालय में टाइपिंग मशीनें भेंट की गई। कार्यक्रम प्रिंसिपल श्रीमती ममता सोनगरा के नेतृत्व मे रखा गया और संचालन कमलेश चौहान द्वारा किया गया। सभी भामाशाह और अतिथिओं का शाफा माला के साथ स्वागत किया गया। कार्यक्रम मे पार्षद वार्ड 10 श्री प्रदीप पंवार, पार्षद प्रतिनिधि श्री सुनील शर्मा, श्री पूरन सिंह राजपुरोहित व स्थानीय स्टाफ मौजूद रहा।

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय अजमेर में गाँधी कॉर्नर का उद्घाटन

अजमेर। वैशाली नगर अजमेर में स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में गाँधी जयंती के शुभ अवसर पर 2 अक्टूबर 2021 को गाँधी विचार संस्कार परीक्षा 2019 का जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह तथा विद्यालय में गाँधी कॉर्नर का उद्घाटन किया गया। विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव श्री महेन्द्र सिंह रलावता एवं विशिष्ट अतिथि श्री सौरभ बजाड़ रहे। अध्यक्षता जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक श्री धर्मेन्द्र जाटव ने की। कार्यक्रम में अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती दर्शना शर्मा एवं श्री एम.टी. वाधवानी भी उपस्थित रहे। विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने बताया कि विद्यालय में निर्मित गाँधी कॉर्नर के निर्माण में विद्यालय की अध्यापिकाओं दीपिका शर्मा एवं मोनिका भंसाली तथा बी.एड. इंटर्नशिप कर रहे विद्यार्थियों का योगदान प्रशसंनीय रहा। कार्यक्रम में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा 2019 के प्रथम विजेता साजिद खान को स्कूटी, द्वितीय विजेता अंजली कंवर को लैपटॉप तथा तृतीय विजेता कालूराम भाट को साइकिल पुरस्कार स्वरूप दी गई। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने सभी का आभार जताया।

अशिक्षा, जातिवाद, लिंगभेद दूर करने व स्वच्छता, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की सामूहिक शपथ...

बीकानेर। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् व शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार 2 अक्टूबर को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ बीकानेर में महात्मा गाँधी की जयंती पर उनकी फोटो पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई व सभी स्टाफ व बच्चों को प्रधानाचार्य श्रीमती उषा कालरा ने शपथ दिलाई। कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहर सिंह मीना ने बताया कि सभी स्टाफ व बच्चों ने अपने कर्तव्यों का पालन करने, अशिक्षा, गरीबी जैसी चुनौतियों को दूर करने, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने, स्वच्छता, अपने कार्यों व लक्ष्य के लिए अनुचित साधनों के प्रयोग नहीं करने की शपथ लेकर इनका ईमानदारी से पालन करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्रीमती उषा कालरा, व्याख्याता फिरोज खान, मोहरसिंह मीना, संजीव यादव, पीडी स्वामी, रचना सारण, संतोष कुमार, हरी प्रकाश, रीना प्रजापत, जयसिंह राठौड़, इमरान खान, दिव्या पंवार सहित स्टाफ व छात्र छात्रा मौजूद थे।

मिसाल : कोरोना काल का किया सदुपयोग, स्कूल को दिया पूरा समय व अपना वेतन देकर कर दी कायापलट

जालोर। ''जहाँ चाह–वहाँ राह'' इस बात को चरितार्थ करने वाले प्रधानाध्यापक श्री बुद्धा राम विश्नोई ने इस लॉक डाउन में भी अपने बल बूते स्कूल की काया को बदल डाला। समाज में आज भी उन शिक्षकों की कमी नहीं जो अपना पूरा तन मन व धन बच्चों के भविष्य निर्माण के लिए दे रहे हैं। राजकीय माध्यमिक विद्यालय वरेठा के प्रधानाध्यापक ने लॉक डाउन में बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षण कार्य के साथ–साथ विद्यालय की भी खूबसूरती को भी चार चाँद लगाने का काम किया। विद्यालय में अपने वेतन से रंग रोगन

व सजावट के कार्यों को सम्पन्न किया। विद्यालय के आकर्षक स्वरूप को देखकर सभी को अपार प्रसन्नता हुई। साथ ही उपखंड मुख्यालय पर स्वतंत्रता दिवस पर सम्मानित भी हुए। यहाँ के प्रधानाध्यापक ने महज दो वर्ष में स्कूल की काया ही पलट दी और स्कूल को एक नई दिशा दी है। यही वजह है कि छात्र निजी स्कूल छोड़कर इस सरकारी स्कूल में पढ़ने आ रहे है। रानीवाड़ा क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक विद्यालय बरेठा एक ऐसा स्कूल है जिसकी सूरत 2019 से पहले कुछ और थी और अब अलग ही है। प्रधानाध्यापक श्री विश्नोई ने स्कूल की दशा सुधारने के लिए अपने वेतन के 70000 की राशि लगाई। भामाशाहों को प्रेरित कर स्कूल से जोड़ा और अभिभावकों शिक्षक को भी आगे आने के लिए प्रेरित कर स्वयं भी जी जान से जुटे रहे। आज सकारात्मक परिणाम भी सामने है। अभिभावकों एवं भामाशाह के सहयोग से यह स्कूल की नई तस्वीर है जिसमें आकर्षक भव्य मुख्य द्वार, फर्नीचर युक्त संस्था प्रधान कार्यालय, 4 कमरों का पुनर्निर्माण, सभी कमरों में लाइट फिटिंग एवं 16 सीसीटीवी सहित, स्टेशनरी बैंक, विद्युत घंटी, बच्चों के सांस्कृतिक पोशाके, पर्याप्त फर्नीचर, विभिन्न प्रजाति के पौधे व विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों से सुसज्जित है। विशेष समस्त स्कूल परिसर बच्चों को प्रेरित करने के लिए कमरों पर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी कर आकर्षक का रूप दिया है जैसे वरेठा एक्सप्रेस, पर्यावरण संरक्षण संबंधित चित्रकारी के साथ समस्त विद्यालय परिसर रंग रोगन कर नया रूप दिया। जिसकी तकरीबन लागत 5 लाख के करीब है। यह सब कार्य वरेठा गाँव के जनसेवक एवं विद्यालय परिवार द्वारा करवाया गया है।

बच्चों ने जाना हस्त-शिल्प व कौशल का महत्त्व

बून्दी–विद्यार्थियों को व्यवसायिक गतिविधियों से जोड़कर हुनरमंद बनाने के लिए शुरू हुए नवाचार। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुसार कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा से जोड़कर हस्त-शिल्प व घरेलू उद्योग-धंधों की जानकारी देने के उद्देश्य से जिले के चयनित विद्यालयों में इस माह प्रत्येक शनिवार को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसी क्रम में शनिवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुढ़ानाथावतान के विद्यार्थियों को अटल टिंकरिंग लेब में कुम्हार के चाक पर मिट्टी के बर्तन, दीपक, खिलौने आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान बच्चों ने खुद अपने हाथों से विद्युत चलित चाक पर मिट्टी को नन्हें हाथों से सांचे में ढालने का अभ्यास किया। कार्यक्रम में गणेश प्रजापत ने मिट्टी का चयन करने व बर्तन बनाने की पूरी प्रक्रिया को समझाया जिसमें बच्चों ने उत्सुकता से अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई। बाद में अन्य सत्र में विद्यार्थियों को प्रशिक्षक चेतन सेन ने बाल काटने की कला व हेयर सेलून में काम आने वाले औजारों व आवश्यक सामग्री के बारे में बताया। इस दौरान कौशल मित्र एवं व्यवसायिक शिक्षा प्रभारी ओमप्रकाश राठौर, हेड-टीचर श्री पृथ्वी सिंह राजावत व व्यवसायिक शिक्षा शिक्षक पूजा राठौर ने भी विद्यार्थियों को श्रम की महत्ता व कारीगरी सहित विभिन्न कलाओं का महत्त्व बताते हुए इन क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसरों की जानकारी दी।

शरद पूर्णिमा व वाल्मीकि जयंती का आयोजन

बूँदी–दिनांक 20 अक्टूबर को राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा में शरद पूर्णिमा महोत्सव एवं महर्षि वाल्मीकि जयंती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थाप्रधान श्री जितेन्द्र शर्मा ने महर्षि वाल्मीकि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए शरद पूर्णिमा के महत्त्व के बारे में छात्रों को बताया। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यापक सर्वश्री रामलक्ष्मण मीणा, गजेंद्र कुमार, परशुराम मेघवाल, राकेश कुमार, महेंद्र स्वामी आदि उपस्थित थे।

धार विद्यालय को वेंडिंग मशीन ओर इंसिनेटर भेंट

उदयपुर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की आवश्यकता को देखते हुए तथा बालिकाओं की स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए वेंडिंग मशीन और इंसिनेटर भेंट किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. सत्यनारायण सुथार ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भा.वि.प. के राष्ट्रीय सचिव श्री संपत जी खुर्दिया, अध्यक्ष आलोक इंटरेक्ट क्लब के अध्यक्ष एवं प्रांतीय अध्यक्ष भा.वि.प. डॉ. प्रदीप कुमावत, अति विशिष्ट अतिथि डॉ. जयराज आचार्य राष्ट्रीय मंत्री भा.वि.प. तथा ग्राम पंचायत धार की सरपंच श्रीमती भगवती देवी गमेती, विशिष्ट अतिथि के रूप में थे। डॉ. प्रदीप कुमावत ने बताया कि धार ग्राम पंचायत में उनका 25-30 वर्षों से निरंतर आना-जाना है इस कारण एक विशेष लगाव होने से प्रतिवर्ष यहाँ 'उनके घर भी दिया जले' कार्यक्रम आयोजित किया जाता रहा है। इसी कारण मुझे गाँव के लिए कुछ न कुछ करने की प्रेरणा मिलती रहती है। आगे बताया कि विद्यालय में बालिकाओं की स्वच्छता का अत्यधिक महत्त्व है। ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओ में शर्मीलापन अधिक होने से वो अपनी माहवारी को लेकर ज्यादा बातचीत नही करती इस कारण कई गम्भीर बीमारियों के मुँह में चली जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए खास तौर से सरकारी विद्यालयों में यह वेंडिंग मशीन और इंसिनेटर भेंट कर सुपोषित भारत और स्वस्थ भारत कार्यक्रम की शुरुआत की जा रही है। इससे पूर्व भी डॉ. कुमावत के द्वारा धार विद्यालय को लाइब्रेरी फर्नीचर तथा एक मोबाइल टॉयलेट भेंट किया गया। भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय सचिव श्री खुर्दिया जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए माहवारी के दौरान रखी जाने वाली सावधानियां और वेंडिंग और इंसिनेटर के फायदे बताए और बालिकाओ को निरंतर पैड उपयोग में लेने हेतु प्रेरित किया। विद्यालय से जुड़े रहने की बात कही। वहीं राष्ट्रीय मंत्री डॉ आचार्य जी द्वारा कार्यक्रम के दौरान दुग्ध पान करवा रही महिलाओं और 2 से 5 वर्ष के बालकों हेतु न्यूट्रिशन के किट उपलब्ध कराए गए तथा उसके बारे में जानकारी प्रदान की। साथ ही ग्रामीण महिलाओं को मास्क ओर सेनेटाइजर किट बाँटे गए और कोरोना के बारे में जागरूक किया गया। कार्यक्रम में पूर्व सरपंच सर्वश्री शांतिलाल गमेती, मोहन लाल वडेरा, कमलेश पालीवाल के साथ विद्यालय के समस्त स्टाफ और अन्य गणमान्य ग्रामवासी मौजूद रहे। संचालन श्री मनमोहन ने और कार्यक्रम की व्यवस्था श्री राजेश भारती द्वारा की गई। विद्यालय के श्री दिलीप कुमार मेहता द्वारा भविष्य में भी सहयोग की अपेक्षा साथ सभी भामाशाहो का आभार प्रकट किया गया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल 'Adopt A School'

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुड़ला, राजसंमन्द

(भामाशाह श्री उदयलाल सिंयाल ने लिया अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त नवीन भवन बनाने का संकल्प)

❐ राजेन्द्र सिंह चारण

मेवाड़ शौर्य, भक्ति एवं दान की भूमि है। भामाशाह जैसा व्यक्ति जिसने समस्त धनराशि राष्ट्र निर्माण में अर्पण कर दी इससे प्रेरित होकर राज्य सरकार ने भामाशाह योजना लागू की। अरावली की उपत्यका में खारी नदी के तट पर बसा जिला राजसमन्द की पंचायत समिति खमनौर की ग्राम पंचायत धायला का एक ग्राम गुड़ला जहाँ आज भी शिक्षा के मूल्य को पहचानने वाले भामाशाह सदृश श्री उदयलाल सिंयाल मौजूद है। इन्होंने न केवल अपने व्यक्तित्व अपितु कृतित्व से राजस्थान में अनूठी पहल कर अपनी स्वर्गीय पत्नी बदामबाई के नाम को युग युगान्तर तक याद रहे इस हेतु इतना महत्त्वपूर्ण कार्य सहजता से कर दिया। श्री उदयलाल सिंयाल ने ग्राम गुड़ला में लगभग 3.70 करोड़ की लागत का अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त विशाल भवन बनाकर राज्य सरकार को सौंपने का संकल्प लिया।

भामाशाह का संक्षिप्त परिचय–
श्री सिंयाल का जन्म गुड़ला गाँव में हुआ। बचपन में मात्र 02 वर्ष की उम्र में पिता का साया सिर से उठ गया। मात्र 11 वर्ष की उम्र में माताजी का भी देहावसान हो गया। बचपन में बालक उदयलाल पढ़ाई में काफी होशियार थे। इनको शिक्षा प्राप्त करने के लिए बनास नदी को पैदल पारकर नाथद्वारा जाना पड़ता था जिसमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। विद्यार्थी जीवन में स्वयं एवं अपने साथ पढ़ने वालों के जीवन में शिक्षा प्राप्त होने में उत्पन्न बाधाओं का आपने बखूबी एहसास किया। मन में संकल्प लिया कि भविष्य में मौका मिला तो अपने क्षेत्र के लोगों के लिए भी कल्याण का प्रयत्न करूँगा। सामाजिक जिम्मेदारी व विद्यार्थी जीवन के काल के उपरान्त आपने मुम्बई में जाकर संघर्षमय जीवनयापन करते हुए ज्वैलर्स व्यवसाय में प्रगति की। धनाढय वर्ग के ऐशोआराम में रहते हुए भी आपने कभी भी स्वंय के लिए फिजूल धनराशि खर्च न हो इतनी विशाल सोच के साथ व्यवसाय में दिन-प्रतिदिन उन्नति प्राप्त कर ख्याति प्राप्त की। स्वयं के भीतर अपने विद्यार्थी जीवन काल में शिक्षा प्राप्ति में आयी बाधाओं को विस्मृत नहीं किया। सदैव उन विद्यार्थियों के बारे में विचार किया जिन्हें शिक्षा प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही है। आपकी मितव्ययी सोच को गम्भीरता से न लेने वाले लोगो का श्री उदय लाल सिंयाल ने

धनराशि का समुचित उपयोग करने का संदेश देकर कीर्तिमान स्थापित किया। श्री उदय लाल सिंयाल ने विद्यालय भवन बनाकर सौंपने का संकल्प लिया जिस पर सभी ने हर्ष व्यक्त किया।

जन्म तिथि- 26 जनवरी 1947
पिता का नाम - नाहरमल जी जैन
शिक्षा- माध्यमिक
जन्म स्थान - गुड़ला (खमनोर) राजसमन्द
संतान -
1. श्री जितेन्द्र कुमार सिंयाल (ज्वैलर्स व्यवसायी)
2. श्री कमलेश सियांल (ज्वैलर्स व्यवसायी)
3. श्रीमती विमला अशोक शिशोदिया
4. श्रीमती मीना भूपेन्द्र श्रीश्रीमाल

वर्तमान कार्यस्थल-ज्वैलर्स व्यवसायी
1. अलंकार ज्वैलर्स बड़ाला,
2. नूतन ज्वैलर्स वाशी
3. पायल गोल्ड जवेरी बाजार मुबंई

विचार को मूर्त रूप देने में विभागीय सहयोग–इस कार्य को मूर्त रूप देने हेतु जिशिअ एवं राज्य स्तर पर कॉर्पोरेट सोशल रिस्पोन्सीबीलीटी (CSR) के प्रभारी श्री दिलीप परिहार ने महत्त्वपूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। इस कार्य की शुरुआत हेतु भूमि पूजन एवं शिला पूजन समारोह का आयोजन भी किया गया। इस शिला पूजन कार्यक्रम समारोह के साक्षी व गरिमामयी उपस्थिति श्री उदय लाल आंजना (जिला प्रभारी मंत्री) के साथ श्री महेश प्रताप सिंह चौहान, सीईओ जिला परिषद राजसमन्द, श्रीमती निमिषा गुप्ता, संयुक्त निदेशक श्री शिवजी गौड, श्री भैरो सिंह चौहान (पंचायत समिति सदस्य) श्री नरेन्द्र सिंह चौहान, श्रीमती मोहनी देवी गायरी (संरपच ग्राम पंचायत-धांयला) उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन संस्थाप्रधान श्री राजेन्द्र सिह चारण ने किया। शिलापूजन कार्यक्रम के सफल आयोजन पश्चात उपस्थित सभी अतिथियों एवं ग्रामवासियों ने भोजन किया एवं सामाजिक सौहार्द्रता को बढ़ावा दिया। इस समस्त आयोजन के दौरान भामाशाह श्री उदय लाल सिंयाल के नयन भूमि पर ही है। श्री उदय लाल सिंयाल के मनोभावों को व्यक्त करते हुए दो पंक्तियाँ निम्नानुसार स्वत: प्रस्फुटित हो जाती है।

देवणहार कोउ और है सो भेजत सौ दिन रैण
लोग भरम हम पर धरै यातें नीचे नैण।।
सपना हुआ साकार लेने लगा आकार

समय की धारा अविरल बहती है। जिस स्वप्न की आस लेकर 07 नवम्बर 2019 को भूमि पूजन कार्यक्रम आयोजित हुआ। शनै : शनै उसका मूर्त रूप सामने आने लगा। हजारों राजमिस्त्री व श्रमिकों के अथक प्रयासों से भवन रूप लेने लगा। भवन का स्वरूप सामने और निखरने लगा इसी दौरान वैश्विक स्तर पर महामारी कोविड-19 ने लोगों को अपने चपेट में लेने लगी। हजारों की संख्या में युवा, वृद्ध काल के ग्रास बन गए। राज्य सरकार और चिकित्सा विभाग ने इस महामारी से निपटने के लिए अपना सर्वस्व समर्पण किया और नियन्त्रण करने में सफल भी हुई । देश व दुनिया में राजस्थान राज्य ने बेहतर व कुशल प्रबन्धन में प्रथम स्थान प्राप्त किया और अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय बनकर राजस्थान ने अपनी अहम भूमिका निभाई। इस महामारी के समय भी श्रीमान उदय लाल जी सियांल ने अपने संकल्प को विराम न लगाते हुए अनवरत रूप से निर्माण कार्य को जारी रखा।

मेहन्दी जब सहती है प्रहार बन जाती है ललनाओं का सिंगार.....मानव जब जोर लगाता है पत्थर पानी बन जाता है।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

अथक प्रयास से भवन अब स्वरूप लेने लगा और तकरीबन 02 वर्ष में पूर्ण होकर निर्मित है। यह भवन अब राज्य सरकार को समर्पण हेतु तैयार है। इस अवसर पर श्री उदय लाल सिंयाल अपने मन के स्वप्न को साकार कर उक्त भवन राज्य सरकार को सुपुर्द करेंगे। श्रेष्ठता के लिए, ज्ञान के लिए, दान के लिए, उत्कृष्टता के लिए, परमार्थ के लिए, लाखों बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए।

सर्वे भवन्तु सुखिन : की मनोकल्पना को साकार रूप देने के लिए इस शुभावसर का आयोजन नव निर्मित भवन में दिनांक 15 नवम्बर 2021 को होगा। यह एक यज्ञ है जिसमें सभी ने अपनी क्षमतानुसार अपनी हवि प्रदान की। इस हवि में प्रधानाध्यापक श्री लालचन्द्र प्रजापत, स्थानीय ग्रामवासी श्री प्रतापमल सिंयाल, श्री नरेन्द्र सिंह चौहान, श्री घनश्याम पुरोहित और समस्त ग्रामवासियों का भी अहम योगदान है। जिनके प्रयासों से इस ऐतिहासिक कार्य को सम्पन्न होने में सहयोग मिला। राव साहब श्री भैरो सिंह जी और स्थानीय ग्राम पंचायत सरपंच के युवा पुत्र श्री लहरु लाल जी गायरी सदैव प्रत्येक कार्य के लिए तत्पर रहे।

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल भवन का निर्माण कार्य भामाशाह श्री उदयलाल सिंयाल द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ला में अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त दो मंजिला विशाल भवन का निर्माण करवाया गया। इसमें कुल कक्ष संख्या 26 है। इसमें कक्षा-कक्ष सहित प्रधानाचार्य कक्ष, स्टाफ रूम, खेल कक्ष, भूगोल कक्ष, विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय कक्ष, कम्प्यूटर लैब, डिजीटल कक्षा-कक्ष, एबीएल कक्षा-कक्ष, पैन्ट्री, छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक पर्याप्त शौचालय एवं मूत्रालय सहित समस्त सुविधाओं से युक्त कुल 26 कक्ष हैं। इस भवन का कुल निर्माण क्षेत्रफल 160 गुणा 120 होकर लगभग 38400 वर्ग फीट है। इस भवन में डिजीटल कक्षा-कक्ष व तकनीकी की सुविधाओं से युक्त ई-कक्षा का संचालन किया जा सकना सम्भव होगा। इन सबके अलावा लगभग 65 गुणा 95 का अहाते के भीतर खुला क्षैत्र है जिसमें बालीबॉल, हैण्डबाल और बैडमिन्टन कोर्ट का उपयोग किया जा सकने वाले खेल मैदान भी सम्मिलित है। सरस्वती मन्दिर एवं चारदीवारी भी इस निर्माण कार्य में शामिल है। इन सुविधाओं का उपयोग ग्राम गुड़ला सहित निकटवर्ती 12 भागलो (छोटी छोटी ढाणियाँ) के परिवार के बच्चों के लिए किया जा सकेगा।

विद्यालय का संक्षिप्त विवरण

स्थापना वर्ष-1955 (प्राथमिक स्तर)
उप्रावि स्तर-1985 (उप्रावि स्तर)
माध्यमिक स्तर-2018 (माध्यमिक स्तर)
उच्च माध्यमिक स्तर-2021 (उच्च माध्यमिक स्तर)
वर्तमान संकाय-कला (हिन्दी साहित्य, इतिहास, भूगोल)
कुल नामांकन सत्र (2020-21)-238
कुल नामांकन सत्र (2021-22)-270 (अनवरत्)
संस्था प्रधान का नाम-श्री राजेन्द्र सिंह चारण (प्रधानाध्यापक मावि)
कार्यरत व्याख्याता-00 कार्यरत (व.अ)-06
कार्यरत अध्यापक-04 कार्यरत शाशि-01
कुल कार्यरत पद-12

धन्य है यह धरा जिस पर भामाशाह सदृश श्री उदय लाल सिंयाल का जन्म हुआ। जिसका लाभ स्थानीय क्षेत्र के सभी ग्रामवासियों को मिलेगा। वंचित वर्ग के विद्यार्थी भी उचित शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर पाने हेतु सुविधा प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षा रूपी यज्ञ जिसमें सभी अपनी क्षमतानुसार आहुति दे रहे हैं। इस यज्ञ के फल स्वरूप प्राप्त शिक्षा का उपयोग राष्ट्र के विकास हेतु फलीभूत होगा।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ला,
पं.स.-खमनोर, राजसमन्द, (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-सितम्बर 2021 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	JAI ARAVALI INDUSTRIES PROP DINESH KUMAR SOMANI HUF	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL WARD NO 10 LAXMANGARH (466423)	SIKAR	960000
2	BHANWAR LAL JAT	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	351151
3	JAGDISH PRASAD	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	320000
4	SHANKAR LAL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	320000
5	LICHMA DEVI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 12 AG MIRJAWALIMER (211160)	HANUMAN GARH	300000
6	SITARAM SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHANPURA (218050)	DAUSA	300000
7	MAHIPAL SINGH	GOVT. SECONDARY SCHOOL SULKHANIYA CHHOTA (215265)	CHURU	250000
8	CHOTH MAL SONI	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	160000
9	SANWAR MAL SONI	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	160000
10	MANOJ SINGH SHEKHAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	150000
11	JAMIL AHMED	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL WARD NO 10 LAXMANGARH (466423)	SIKAR	150000
12	HANUMAN RAM BHAKAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BALDU (213454)	NAGAUR	121000
13	HARI PRASAD KHANDELWAL	GOVT. GIRLS SECONDARY SCHOOL BAYA (213338)	SIKAR	101000
14	GOVIND RAM	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	101000
15	VIJAY CHOUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KARAWALI (223525)	UDAIPUR	100111
16	SHRI BHAGWAN R KHANDELWAL	GOVT. GIRLS SECONDARY SCHOOL BAYA (213338)	SIKAR	100000
17	OM PRAKASH CHAHAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	100000
18	DHARMENDRA CHAHAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	100000
19	TEEJU	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	100000
20	BHANWARI DEVI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	100000

21	SUNITA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	100000
22	SEEMA MINERALS AND METALS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RIWADI (220539)	JAISALMER	100000
23	JEEWAN SINGH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	100000
24	SANTOSH KANWAR	GOVT. SECONDARY SCHOOL BHOJASAR (215559)	CHURU	90000
25	PRITI SUNDA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEUWA (215217)	CHURU	77100
26	MOOLA RAM SARAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RASAL (219966)	NAGAUR	75850
27	INDER SINGH RATHORE	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHARNAI TEH.- MAKRANA (220096)	NAGAUR	75750
28	RAMNIWASH BAJROLIYA	SHAHID LANCE NAIK LIKHMARAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHARWALIYA (219783)	NAGAUR	75750
29	ROHIT KUMAR JOSHI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PIPLAGUNJ (223042)	DUNGAR PUR	75750
30	RUGHA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SENANI (220033)	NAGAUR	75750
31	OMSHREE AGRO TECH PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHARIJA (213319)	SIKAR	75750
32	BRN INFRASTRUCTURE PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJLIYA (219965)	NAGAUR	75750
33	NILAM CHEMICALS AND MINERALS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KANTIYA (220012)	NAGAUR	75750
34	BHUPENDRA JOSHI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BHOGAPURA (486720)	BANSWARA	64200
35	RAMJAS RAM	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL NAIYASAR (474712)	CHURU	60000
36	ARINDAM GUHA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL PRAGPURA (218351)	JAIPUR	59500
37	RAMU RAM BENIWAL	GOVT. PRIMARY SCHOOL NAVIN LUHARA (410485)	CHURU	58600
38	SAGAR MAL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
39	MAHABIR PARSAD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DEVROAD (215850)	JHUNJHUNU	51000
40	PREM LATA CHAUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NARAYANPURA (219957)	NAGAUR	51000
41	SUDHANSHU KUKNA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
42	ROHTASH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHANGOI (215165)	CHURU	51000
43	PRAMOD KUMAR SAINI	JODHRAJ MOHANLAL BAJAJ GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL WARD NO 12 (213233)	SIKAR	51000
44	DEEP SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KACHHBALI (222719)	RAJSAMAND	51000
45	BAJRANG LAL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
46	RAJKUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SUJAWAS (219133)	SIKAR	50000
47	ABHA BANSAL	SETH PREM SUKH DAS GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEHALA (215582)	CHURU	50000
48	SHARWAN RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ALAKHPURA (213507)	NAGAUR	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–सितम्बर 2021 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	NAGAUR	219	2180167
2	SIKAR	69	1618241
3	CHURU	61	1556910
4	DAUSA	65	345926
5	HANUMANGARH	34	313360
6	BANSWARA	100	287020
7	CHITTAURGARH	161	200845
8	UDAIPUR	359	197528
9	BUNDI	516	178020
10	PALI	418	172118
11	JHUNJHUNU	93	166041
12	PRATAPGARH	835	156672
13	JAISALMER	51	145398
14	DUNGARPUR	44	124760
15	BARMER	257	122065
16	JAIPUR	38	114006
17	AJMER	323	112025
18	BHILWARA	352	105225
19	KOTA	74	94321
20	GANGANAGAR	39	86969
21	ALWAR	258	86378
22	RAJSAMAND	50	73456
23	JHALAWAR	162	71696
24	BHARATPUR	148	67148
25	JODHPUR	29	59820
26	JALOR	322	54724
27	SAWAIMADHOPUR	21	42850
28	BARAN	17	40261
29	BIKANER	39	14673
30	DHAULPUR	36	12442
31	TONK	52	9821
32	SIROHI	26	5022
33	KARAULI	11	1211
	Total	**5279**	**8817119**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : नवम्बर, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अरुण कुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

मैं भी हूँ, शिविरा रिपोर्टर !

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कागमाला, जालोर के प्रधानाध्याक एवं शाला स्टाफ द्वारा किए गए नवाचार

शिविरा बाल नवम्बर, 2021

काजल लोंधा, कक्षा-10
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोविन्दपुरा
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू (बाड़मेर)

जिला स्तरीय कला महोत्सव प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त पवन चक्की द्वारा घर में विद्युत सप्लाई का मॉडल प्रदर्शन करते हुए अशोक चौधरी, कक्षा-9 राजकीय माध्यमिक विद्यालय सनेड़िया (रियाँ बड़ी) नागौर।

भूमिका चौधरी, कक्षा-10; शारदा सैन,कक्षा-12 (कला) ; गुड्डी, कक्षा-12 बी एवं रेणुबाला, कक्षा-11 (कला)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू (बाड़मेर)

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● नवम्बर, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 नवम्बर, 2021 पृष्ठ 56 ● प्रेषण : इस माह 11 तारीख

चित्र वीथिका : नवम्बर, 2021

राजकीय महात्मा गांधी विद्यालय आदर्शनगर जयपुर में 02 अक्टूबर, 2021 को आयोजित ''गांधी विचार संस्कार परीक्षा'' पुरस्कार वितरण राज्यस्तरीय समारोह में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, समारोह अध्यक्ष श्री रफीक खान, माननीय विधायक, आदर्शनगर जयपुर; श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव शिक्षा विभाग; डॉ. भँवर लाल, राज्य परियोजना निदेशक, समसा और श्री सौरभ स्वामी तत्कालीन निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान पुरस्कार वितरण करते हुए।

राजकीय महारानी उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा जिला स्तरीय आयोजन में मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवरसिंह भाटी; पूर्व गृह एवं वित्त मंत्री श्री वीरेन्द्र बेनीवाल; जिला कलक्टर बीकानेर श्री नमित मेहता एवं शिक्षा अधिकारियों के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेते एवं विजेता विद्यार्थीगण।